RNI-MPHIN/2005/14721
Po.-Malwa Div./244/2020-2022
Desp. Date - 02 August, 2021

अंक – 02 (मासिक) वर्ष – 17 अगस्त, 2021 मूल्य 20/–

अपनों के लिए अपनी पत्रिका

श्री माहेश्वरी टाईम्स

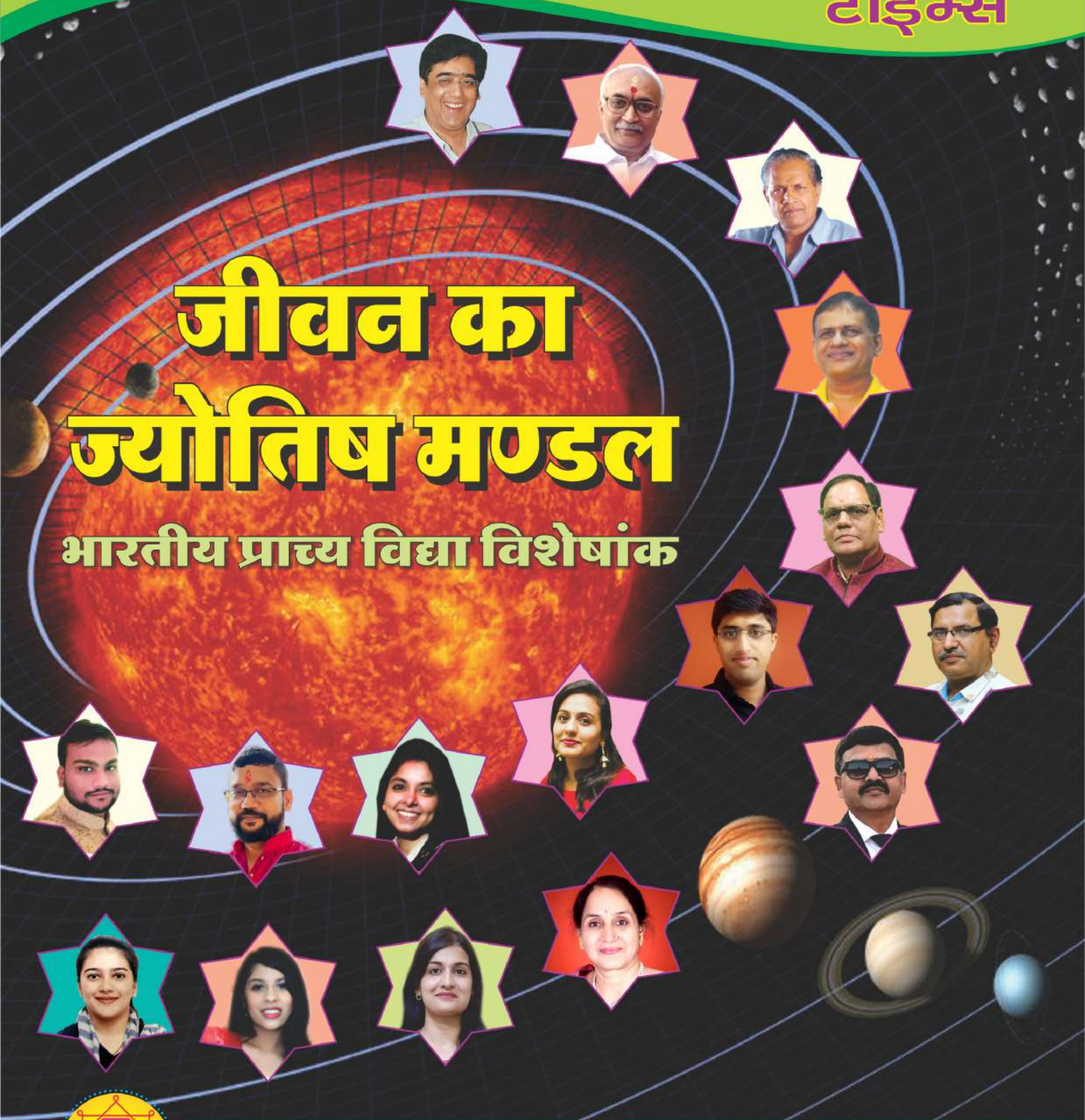

जीवन का ज्योतिष मण्डल

भारतीय प्राच्य विद्या विशेषांक

श्री माहेश्वरी मेलापक
वैवाहिक डायरेक्ट्री
श्री माहेश्वरी मेलापक 2021
का प्रकाशन प्रारंभ

Visit us @
srimaheshwaritimes.com

SMT NEWS
VIDEO NEWS BULLETIN

शिक्षा के साथ–साथ
अब स्वास्थ्य के क्षेत्र में बढ़ते कदम

श्री माहेश्वरी डायलिसिस, डायग्नोस्टिक एवं रिसर्च सेंटर

210-A, डॉ. राजेंद्र प्रसाद नगर, गौतम मार्ग, निर्माण नगर, जयपुर- 19

फ़ोन : 0141-2948760/ 1

न्यूनतम दरों पर डायलिसिस सुविधा प्रारंभ

रियायती दरों पर
सभी के लिए
जाँच एवं फिजियोथेरेपी
सुविधा उपलब्ध

भव्य लोकार्पण

शनिवार, 7 अगस्त, 2021

प्रातः 9 बजे

लोकार्पणकर्त्ता

श्री आर.डी. बाहेती
(पूर्व अध्यक्ष एवं संरक्षक, श्री माहेश्वरी समाज, जयपुर)

मुख्य अतिथि

श्री ज्योति कुमार माहेश्वरी
(संरक्षक, श्री माहेश्वरी समाज, जयपुर)

विशिष्ट अतिथि

श्री नारायण दास मनिहार
(प्रमुख समाजसेवी)

विशिष्ट अतिथि

श्री सुरेन्द्र कुमार बजाज
(प्रमुख समाजसेवी)

दानदाता

श्री कमल किशोर फलोर
(चेन्नई वाले)

दानदाता

श्री नटवर गोपाल मालपानी
(प्रमुख समाजसेवी)

आप सादर आमंत्रित हैं

प्रदीप बाहेती	मुरलीधर राठी	गोपाल लाल मालपानी	दामोदर फलोड़	उमेश सोनी	देवेन्द्र झंवर
अध्यक्ष	उपाध्यक्ष (अर्थ)	महामंत्री	स्वास्थ्य मंत्री	भवन-चेयरमैन	भवन-सचिव

एवं समस्त कार्यकारिणी (2019-22), श्री माहेश्वरी समाज, जयपुर

अपनों के लिए अपनी पत्रिका

श्री माहेश्वरी टाईम्स

RNI-MPHIN/2005/14721

▸▸ अंक-02 ▸▸ अगस्त 2021 ▸▸ वर्ष-17

प्रेरणास्रोत
स्व. श्री बंशीलाल बाहेती
स्व. श्री मदनलाल पलौड़

प्रबंध सम्पादक एवं निदेशक
श्रीमती सरिता बाहेती

सम्पादक
पुष्कर बाहेती

संरक्षक
पद्मश्री बंशीलाल राठी (चैन्नई)
श्री नेमीचन्द तोषनीवाल (कोलकाता)
श्री जोधराज लड्ढा (कोलकाता)
श्री रामकुमार टावरी (दिल्ली)

अतिथि सम्पादक
डॉ. उमेश राठी, कोलकाता

परामर्शदाता
दिनेश माहेश्वरी (भूतड़ा) मुम्बई/इन्दौर
घनश्याम करनानी (कोलकाता)

कला निदेशक
अक्षय आमेरिया

विधि सलाहकार
राजेन्द्र ईनाणी, एडव्होकेट (बागली)

सम्पादकीय सलाहकार
गोविन्द मालू (इन्दौर)
बाबूलाल जाजू (भीलवाड़ा)

कार्यालय-
90, विद्या नगर (टेड़ी खजूर दरगाह के पीछे),
साँवेर रोड, उज्जैन-456010 (म.प्र.)
Phone : 0734-2526561, 2526761
Mobile : 094250-91161
e-mail : smt4news@gmail.com
स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक श्रीमती सरिता बाहेती द्वारा ऋषि ऑफसेट, श्री माहेश्वरी भवन, गोलामण्डी, उज्जैन (म.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

▸ श्री माहेश्वरी टाईम्स में प्रकाशित सभी लेखों के विचारों पर सम्पादक/प्रकाशक की सहमति हो, यह आवश्यक नहीं है।
▸ सभी प्रसंगों का न्यायक्षेत्र उज्जैन (म.प्र.) होगा।

Sri Maheshwari Times
■ PNB A/c. No. : 0459002100043471
IFSC- PUNB0045900
■ ICICI A/c. No. : 030005001198
IFSC- ICIC0000300
Tariff of Membership
Rs. 800/- for Three years
Rs. 3100/- for Life Time (12 Years)

विचार क्रान्ति

महाभारत की भविष्यवाणियाँ

महाभारत भविष्यवाणियों से भरपूर कथा है जिनका आधार ज्योतिर्विज्ञान है। इस महाकाव्य के रचियता और प्रमुख पात्र महर्षि वेदव्यास सिद्ध होने के कारण त्रिकालदर्शी थे। वे ज्योतिर्विज्ञान के भी निष्णात थे, अतः पूरे महाकाव्य में अनेक उनकी भविष्यवाणियाँ उपलब्ध हैं। आदिपर्व की कथा में पाण्डु के श्राद्ध के ठीक बाद उन्होंने भावी महायुद्ध की भविष्यवाणी कर दी थी। उनकी इस भविष्यवाणी पर कि 'लुप्तधर्मक्रियाचारो घोरः कालो भविष्यति।' अर्थात् अब संसार में अनेक प्रकार के दोष प्रकट होंगे तथा धर्म, कर्म व सदाचार का लोप हो जाएगा, सुनकर माता सत्यवती अपनी पुत्रवधुओं अंबिका व अम्बालिका के साथ हस्तिनापुर छोड़कर वन चली गई थी।

कथा के प्रायः सभी प्रमुख पात्रों धृतराष्ट्र, पाण्डु, विदुर, कर्ण, युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन व दुर्योधन के जन्म अवसर पर तत्कालीन ग्रह-नक्षत्र आधारित भविष्य कथन सुलभ हैं, जो आगे चलकर जस के तस सत्य सिद्ध हुए हैं, जो एक ओर ग्रह दशा का आंकलन कर सटीक भविष्य कथन की संभावना को प्रमाणित करते हैं तो दूसरी ओर समझाते हैं कि भविष्यवाणी का सम्मान करना चाहिए।

ज्योतिष में भविष्य कथन सड़क मार्ग की यात्रा में 'ट्रैफिक सिग्नल' की तरह माने जा सकते हैं। उनका पालन करने पर भी दुर्घटना सम्भव है मगर न करने पर दुर्घटना अटल है। महाभारत में जब दुर्योधन का जन्म हुआ तब तत्कालीन अपशगुनों का आंकलन कर महात्मा विदुर ने अपने अग्रज धृतराष्ट्र को सौ में से एक पुत्र अर्थात् दुर्योधन का त्याग करने की समझाइश दी थी मगर धृतराष्ट्र ने ऐसा नहीं किया। परिणामस्वरूप वही कुपुत्र दुर्योधन कुल नाश का निमित्त बना। उद्योगपर्व की कथा में युद्ध से पहले महर्षि वेदव्यास द्वारा ग्रहों की कुदशा का विस्तृत वर्णन कर धृतराष्ट्र को उनके प्रभाव से बचने के लिए युद्ध टालने की समझाइश दी गई लेकिन इस बार भी धृतराष्ट्र न माना। हश्र यह हुआ कि महायुद्ध में उसके सभी सौ पुत्र मारे गए और राज्य भी छिन गया। अपयश का भागी बना सो अलग।

इनसे उलट युधिष्ठिर महर्षि वेदव्यास सहित अन्य त्रिकाल दृष्टाओं की भविष्यवाणियों का आदर करते मिलते हैं। परिणाम में धन और यश के भागी बनते हैं। राज्य के बंटवारे में इंद्रप्रस्थ का राजा बनने के बाद महर्षि वेदव्यास ने युधिष्ठिर के समक्ष भी 'भाइयों में भावी मतभेद' की भविष्यवाणी की थी। इससे सचेत हुए युधिष्ठिर ने तब 'सबके प्रति समत्वभाव' का संकल्प लिया था और अपने चार भाइयों को भी समभाव और समादर से रहने की सीख दी थी। ये और बात है कि दुर्योधन और शकुनि के कारण अपने सद्व्यवहार के बावजूद युधिष्ठिर युद्ध न रोक सके। इसलिए कि जो नियति में लिखा होता है, वह होकर ही रहता है।

ध्यान रहे, ज्योतिष नियति नहीं बदल सकता लेकिन यदि इसका ज्ञाता ग्रहों के आंकलन में समर्थ होकर कोई भविष्य कथन करे तो इस विज्ञान में विश्वास करने वाले को उस कथन के अनुकूल आचरण का प्रयत्न अवश्य करना चाहिए। ऐसा न करने पर धृतराष्ट्र और दुर्योधन जैसा ही अंत होता है। यदि युधिष्ठिर की भाँति व्यवहार किया जाए तो परिणाम भले जो भी हो, हानि अवश्य कम होती है।

■ डॉ. विवेक चौरसिया

सम्पादकीय

ज्योतिष : कल, आज और कल

दुनिया के 78 फीसदी लोग ज्योतिष और उससे जुड़ी विधाओं पर विश्वास करते हैं। यानी दुनिया का यह सबसे लोकप्रिय विषय है। लेकिन विद्वानों ने हमेशा इसे तिरस्कृत किया, इसलिए यह सबसे तिरस्कृत विषय भी है। विद्वानों को इसका तिरस्कार करना पड़ा क्योंकि उन्हें अपनी मान्यताएं स्थापित करना है, जबकि ज्योतिष ऐसी विधा है जो उनकी मान्यताओं को खारिज कर देती है। ज्योतिष को खारिज नहीं कर पाने की जद्दोजहद में दुनियाभर में ज्योतिष पर नई खोज हो रही है। इन खोजों का नतीजा आधुनिक विज्ञान में कॉस्मिक केमिस्ट्री (ब्रह्म रसायन) उदय और पानी के स्वभाव पर किए गए शोध के निष्कर्षों में भारतीय ज्ञान को मान्यता मिलना है। अत्याधुनिक विज्ञान के साथ ज्योतिष पर अनुसंधान की मजबूरी इस वैज्ञानिक युग में भारतीय संस्कृति के ज्ञान-विज्ञान को फिर से स्थापित कर रही है। ज्योतिष और इससे जुड़े विषयों पर यह अंक आपको उस सच्चाई के करीब ले जाने के लिए है, जिसे हमारे ही लोग अंधविश्वास कह कर तिरस्कृत कर रहे हैं, जबकि जरूरत इस दिशा में वैज्ञानिक शोध के द्वार खोलने की है। आइए आपके साथ ज्योतिष पर अब तक हुए वैज्ञानिक अनुसंधानों का सफर करते हैं, जिन्हें अत्याधुनिक विज्ञान ने मान्यता देकर ज्योतिष पर से अंधविश्वास जैसे उलाहने की कालिख साफ कर इसके सीने पर विज्ञान का तमगा लगा दिया है।

ज्योतिष का सबसे प्राचीन सबूत ऋग्वेद में मिलता है। विद्वानों की मान्यता के अनुसार 95 हजार साल पहले अस्तित्व में आए ऋग्वेद में ग्रह-नक्षत्रों की वैसी ही स्थिति का वर्णन है जैसे वे उस समय थे। इसके बाद जीसस से 25 हजार साल पहले सुमेर में ज्योतिष के सबूत अस्थियों पर अंकित चिन्हों से मिले। इससे यह साबित होता है कि भारत से ही ज्योतिष सुमेर होता हुआ विश्व में पहुंचा। ज्योतिष से ही गणित का जन्म हुआ। भारतीय ज्योतिषियों ने जिस गणित को जन्म दिया, उसमें 9 अंक (1 से 9 तक) थे। यही 9 अंक पूरे विश्व को स्वीकारने पड़े, जिनसे आगे विश्व अब तक नहीं जा पाया। ज्योतिष को लेकर अब तक हुए वैज्ञानिक अनुसंधानों की अन्य बातों को छोड़ कर यदि हम केवल इस पर फोकस करें कि ग्रह-नक्षत्रों का हमारे जीवन पर क्यों और कैसे असर होता है तो आप जान कर दंग रह जाएंगे कि पृथ्वी पर जो भी घटित होता है, वह ग्रह-नक्षत्रों से प्रभावित है। फिर महामारी का फैलना ही क्यों न हो। महामारी भी ग्रह-नक्षत्रों के कारण ही पृथ्वी को आक्रांत करती है। इनके कारण ही पृथ्वी पर युद्ध और क्रांतियां होती है। 700 साल की घटनाओं के अध्ययन से इसके वैज्ञानिक आधार मिल गए हैं कि सूर्य पर होने वाला जरा सा परिवर्तन पृथ्वी को प्रभावित करता है। इसी तरह ग्रह-नक्षत्र से हमारा जीवन प्रभावित होता है। शोधों के विस्तार में न जाते हुए इनके निष्कर्षों को देखते हैं।

हिंदुओं ने सबसे पहले यह साबित किया कि मनुष्य का जन्म उस समय नहीं होता जब वह मां के गर्भ से बाहर आता है। उसका जन्म क्षण वह है जब वह गर्भ में आता है। वह न केवल गर्भ में आने का क्षण स्वयं चुनता है बल्कि गर्भ से बाहर आने का समय भी। यह सब वह ग्रह-नक्षत्रों की स्थिति के अनुसार चुनता है। इसलिए गर्भ में आने के समय ग्रह-नक्षत्रों की स्थिति उसके चित्त पर अंकित रहती है और पूरा जीवन वह उन्हीं से प्रभावित होता है। जब ग्रह-नक्षत्रों के साथ उसके शरीर का तालमेल बिगड़ता है तो वह बीमार होता है। इसलिए भारत में उस विज्ञान ने जन्म लिया था कि जिस तरह के बच्चे को जन्म देना हो उसके अनुसार ग्रह-नक्षत्रों की स्थिति में सहवास कर गर्भधारण कराया जा सके। ग्रह-नक्षत्रों के समय के अंतर का ही असर है कि एक मनुष्य के शरीर की त्वचा दूसरे जैसी नहीं होती। यानी उसे दूसरे शरीर पर नहीं चढ़ाया जा सकता। यानी जिस क्षणांश में गर्भधारण हुआ है, उसी के अनुरूप संपूर्ण शरीर, चित्त आदि का निर्माण होता है, जो दूसरा नहीं हो सकता।

1950 में आई कॉस्मिक केमिस्ट्री में यह माना कि विश्व एक परिवार है और हमारा शरीर भी इसी की भांति है। सूर्य ब्रह्मांड की तरह शरीर को भी प्रभावित करता है। ग्रह-नक्षत्रों और शरीर के बीच पानी ही ऐसा तत्व है जो मध्यस्थ की भूमिका निभाता है। यानी आसमान में जो हो रहा है उसका प्रभाव पानी के माध्यम से हमें प्रभावित करता है। शोध बताते हैं कि माता के गर्भ और समुद्र में एक जैसा जल होता है। बच्चे और मां के बीच यह जल ही संबंध जोड़ता है। हमारे शरीर के भीतर भी 65 फीसदी पानी है। ग्रह-नक्षत्रों का परिवर्तन इसी पानी के माध्यम से हमें प्रभावित करता है। वैज्ञानिक अब पानी को रहस्यमय तत्व मान रहे हैं, क्योंकि यह साबित हो गया है कि पानी से ही जीवन की उत्पत्ति हुई है। भारतीय दशावतार की कथा भी यही कहती है। ब्रह्मांड और हमारे बीच के तारतम्य को ऐसे भी समझें कि सूर्यग्रहण के समय पृथ्वी पर सन्नाटा हो जाता है, यहां तक कि बंदर भी जमीन पर एक जगह जमा हो जाते हैं। पूर्णिमा के दिन सबसे ज्यादा लोग पागल होते हैं। अमावस्या पर सबसे ज्यादा पागल ठीक होकर घर पहुंचते हैं। मछलियां उस समय अंडे देने किनारे पर आती है जब समुद्र उतार पर होता है। इसके ठीक 15 दिन बाद अंडों से चूजे निकल आते हैं और समुद्र का पानी उन्हें बहा ले जाता है। ज्योतिष की मान्यताएं हजारों साल पहले भारतीयों ने स्थापित की थी जो आज विज्ञान को स्वीकारना पड़ रही है। शोध करने वाले वैज्ञानिकों का मानना है अगले 30 साल में ज्योतिष हर विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में होगा और यह कई मान्यताओं के साथ मेडिकल साइंस को भी बदल कर रख देगा। क्योंकि बीमारी का इलाज तब तक संभव नहीं जब तक उस बीमारी का मूल कारण यानी ग्रह-नक्षत्रों का असर पता नहीं चल जाता।

इस ज्योतिष विशेषांक के प्रकाशन के पीछे हमारा उद्देश्य भारत के इस विशिष्ट ज्ञान को गरिमा प्रदान करना व संग्रहणीय ज्योतिषीय आलेख के साथ ही समाज के उन महानुभावो से आपको परिचित करवाना भी है, जो इस गरिमामय विधा में अपना योगदान दे रहे हैं। यह विशेषांक निश्चय ही आपके लिये संग्रहणीय सिद्ध होगा, यह हमें विश्वास है। आपको यह अंक कैसा लगा? यह बताना न भूलें। जय महेश

पुष्कर बाहेती
सम्पादक

अतिथि सम्पादकीय

कोलकाता के सुप्रसिद्ध वास्तुविद् डॉ. उमेश राठी की पहचान देश ही नहीं बल्कि विदेशों तक एक प्रख्यात वास्तुविद के साथ ही नैसर्गिक शक्तियों के विशेषज्ञ के रूप में भी है। औद्योगिक जगत के वास्तुविद् के रूप में तो उनकी एक विशिष्ट पहचान ही है। डॉ. राठी, M.D. (AM), MIIHT (Mexico) Doctor of Science (H.C.), Colombo जैसी उपलब्धियों के साथ ही वास्तुशास्त्र में पीएच.डी की उपाधि भी प्राप्त हैं। आपकी शोध यात्रा पीएच.डी पर भी थमी नहीं है, बल्कि यह सतत् रूप से चलती ही जा रही है। इसी का परिणाम है कि उन्होंने वास्तु ऊर्जा व विभिन्न ऊर्जाओं के संतुलन तथा नकारात्मक ऊर्जा के निष्कासन के लिये "एनर्जी बेलेन्सिंग सिस्टम" विकसित किये हैं। इसके अतिरिक्त स्वास्थ्य समस्या के समाधान, विद्यार्थी व युवाओं में आत्मविश्वास की वृद्धि, पूजा-हवन-ध्यान, शांति व समृद्धि तथा आध्यात्मिक ज्ञान की उत्पत्ति जैसे मुद्दों को लेकर भी डॉ. राठी ने गहन शोध से "एनर्जी बेलेन्सिंग सिस्टम" का विकास किया है। डॉ. राठी एनआरआई वेलफेयर सोसाईटी द्वारा 2012 में हिन्द रत्न 'ज्वेल ऑफ इंडिया' से सम्मानित हुऐ। देश के विभिन्न क्षेत्र ही नहीं, बल्कि नेपाल, सिंगापुर, इण्डोनेशिया, मलेशिया व दुबई आदि कई देशों में भी डॉ. राठी अपना परामर्श देकर भारतीय वास्तु शास्त्र का ध्वज फहरा चुके हैं।

हमारी संस्कृति का हिस्सा हैं ज्योतिष-वास्तु

माहेश्वरी समाज एक ऐसा गरिमामय समाज है, जिसने न सिर्फ उद्योग-व्यवसाय जगत में ही अपनी सफलता का ध्वज फहराया है, बल्कि लगभग कोई भी क्षेत्र हमारे समाज की सफलता की गौरव गाथा से अछूते नहीं हैं। इनमें प्रशासनिक व राजनीतिक क्षेत्र के साथ ही ज्योतिष-वास्तु जैसा क्षेत्र भी शामिल है। यह गर्व का विषय है कि समाज में ऐसे कई मूर्धन्य ज्योतिर्विद व वास्तुविद् हैं, जो अपने गहन अध्ययन व गहन शोध से इस गूढ़ क्षेत्र में भी महारथ हासिल कर मानवता की सेवा में अपना योगदान दे रहे हैं।

ज्योतिष व वास्तु शास्त्र वैसे तो न सिर्फ हमारे मनीषियों की सैकड़ों वर्षों के शोध का प्रतिफल हैं, बल्कि ये तो हमारी संस्कृति का हिस्सा तक बन गये हैं। हमारे पूर्वज जीवन के कई फैसले ज्योतिष वास्तु के आधार पर ही लेते रहे हैं। इस तरह यह हमारे जीवन के कई मोड़ पर हमारे सहयोगी बन संस्कृति का हिस्सा बने हुए थे और आज भी हैं। वर्तमान में भी देखें तो जब बच्चा जन्म लेता है तब से लेकर उसके जीवन के अंत समय तक बीच में आने वाले विवाह आदि कई महत्वपूर्ण संस्कारों के मुहूर्त आदि की गणना ज्योतिष के अनुसार ही होती है। इस तरह यह लगभग हमारी परम्परा में ही शामिल है। इसी तरह भवन निर्माण से लेकर वास्तु शांति आदि कई अवसर वास्तु शास्त्र पर ही आधारित हैं। इनका हमारी संस्कृति से संबंधित होने के बावजूद कुछ अधूरा ज्ञान रखने वाले तथाकथित बुद्धिजीवी इसे अत्यंत आसानी से अंधविश्वास की संज्ञा देकर नकार रहे हैं, जो अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है।

मैं उन्हें यह कहना चाहूँगा कि वास्तव में ज्योतिष और वास्तु विज्ञान हैं और इसमें भी ऐसा गहन विज्ञान, जिसे अभी भी आधुनिक विज्ञान को समझने की जरूरत है। इसकी वैज्ञानिकता का ही प्रमाण हमारे पंचांगों की कालगणना हैं, जो अत्यंत सूक्ष्म होने के साथ ही अत्यंत सटीक भी हैं। इनमें जिस दिन ग्रहण या अमावस्या, पूर्णिमा आदि जैसे अवसरों का उल्लेख होता है, वे उसी दिन होते हैं। इसे हम वैज्ञानिकता न कहें तो क्या कहें? रही बात व्यक्तिगत फलित की तो इसमें सटीकता एक अत्यंत गहन विषय है, जो देशकाल - परिस्थिति पर भी निर्भर है। अतः आंशिक अंतर इनमें सम्भव है। इसी प्रकार वास्तु की बात की जाए तो हमारे यहाँ हजारों वर्षों से वास्तु विज्ञान से सुखद जीवन के लिए भवनों का निर्माण होता आया है। इतना ही नहीं दुनिया के कई देशों ने भी विभिन्न रूपों में इनकी वैज्ञानिकता को स्वीकारा है। फिर यदि हम ही इसे अंधविश्वास कहें तो यह तो अपनी ही संस्कृति व अपने ही ज्ञान का स्वयं अपमान करना ही है।

अतः मैं तो सिर्फ इतना ही कहना चाहूँगा कि ज्योतिष-वास्तु को शुद्ध वैज्ञानिक रूप में ग्रहण करें, अंधविश्वास में न पड़ें। अपनी पारखी नजरों से सबसे पहले सही गलत का फैसला करें फिर विश्वास करें, लेकिन अंधविश्वास कदापि न करें।

डॉ. उमेश राठी
अतिथि सम्पादक

श्री खूंखर माताजी

माहेश्वरी समाज की नई पीढ़ी को अपने गौरवशाली इतिहास और परम्पराओं से अवगत कराने के लिए हम प्रतिबद्ध हैं। समाज में कुलदेवियों का विशेष महत्व है। इस कालम में हम कुलदेवियों की जानकारी प्रदान कर रहे हैं। इसी क्रम में प्रस्तुत हैं- श्री खूंखर माताजी।

टीम SMT

खूंखर माताजी माहेश्वरी समाज की तोतला, तोषनीवाल व इनकी समस्त खांपों की कुल देवी है।

माताजी का मंदिर राजस्थान के नागौर जिले के ग्राम तोषीना में स्थित है। माताजी का इतिहास लगभग 950 वर्ष पुराना है। ग्राम तोषीना में संवत् 1139 में माताजी की विशाल मूर्ति व मंदिर था। कालांतर में मंदिर जीर्णशीर्ण हो गया।

स्वप्न के बाद बना भव्य मंदिर

सन् 1984 में जलगांव निवासी प्रभादेवी भगवानदास तोतला के सपने में माताजी आई और दर्शन देकर मंदिर बनवाने हेतु कहा। इसके पश्चात वह प्रभादेवीजी को बार-बार स्वप्न में दिखाई देने लगी। श्रीमती प्रभा 1988 में तोषनी आई। उन्होंने पुराने मंदिर की जगह पर खुदाई करवाई। खुदाई में पुराने मंदिर के काफी अवशेष मिले, हवन कुंड, छोटी-बड़ी मूर्तियाँ इत्यादि। एक बड़ी शिला भी मिली जो आज बड़ी माताजी के रूप में यहाँ पर स्थापित है। फिर 1992 में मंदिर का निर्माण कार्य प्रारंभ हुआ। 1997 में 25 जनवरी को भव्य समारोह में माताजी की मूर्ति स्थापित की गई।

-भोग एवं आरती-

सुबह 6 बजे- आरती
9.15 बजे -भोग
शाम 6.30 सांध्य आरती
9.00 शयन आरती
माताजी को शीरे एवं लापसी का भोग लगाया जाता है।

माता का चमत्कार

मूर्ति भव्य एवं चमत्कारी है। कहा जाता है कि एक बार एक दंपत्ति अपनी दृष्टिहीन बालिका को साथ लेकर माताजी के दर्शन हेतु आए। उक्त बालिका के उपचार करने वाले डॉक्टरों ने भी हार मान ली थी। उनका कहना था कि बालिका की दृष्टि वापस नहीं आ सकती। किन्तु माँ खूंखर देवी के अद्‌भुत दर्शन करते ही बालिका को सब कुछ दिखाई देने लगा। माताजी के चमत्कार से यात्रियों की संख्या भी बढ़ती गई।

यात्री सुविधाएं

मंदिर परिसर में यात्रियों के ठहरने के लिए धर्मशाला का निर्माण कार्य 2003 में पूर्ण हुआ। यहाँ सर्वसुविधायुक्त धर्मशाला मंदिर परिसर में है। एक बड़ा रसोईघर भी बना लिया गया है। यहाँ सशुल्क प्रति थाली के हिसाब से शुद्ध वैष्णवी भोजन प्राप्त किया जा सकता है।

मंदिर में होने वाले कार्यक्रम

मंदिर के स्थापना दिवस 25 जनवरी को यहाँ पर हर वर्ष वार्षिक उत्सव का आयोजन होता है जिसमें विशाल भंडारे का आयोजन किया जाता है। चैत्र माह एवं आश्विन मास दोनों ही नवरात्रि में यहाँ भजन एवं गरबों का आयोजन किया जाता है।

कैसे पहुंचे - ग्राम तोषीना से लगभग 36 किमी दूर व्हाया कूचामन रेलवे स्टेशन है। अजमेर और जयपुर विमान या ट्रेन द्वारा पहुँचकर यहाँ से बस या स्वयं के निजी वाहन द्वारा यहाँ पहुँचा जा सकता है। यह अजमेर से 110 किलोमीटर जयपुर से 175 किमी दूर है। यहाँ से सालासर बालाजी मात्र 85 किमी एवं खाटू श्याम जी लगभग 100 किमी दूर है।

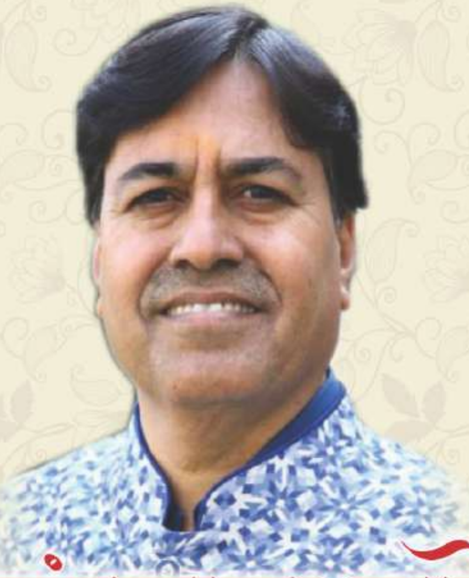

बजरंगलाल बाहेती

निवृत्तमान अध्यक्ष

''अभिनंदन'' श्री माहेश्वरी समाज जनोपयोगी भवन-जयपुर

ट्रस्टी एवं अध्यक्ष	:	श्री गिरीराज धरण माहेश्वरी सेवा ट्रस्ट, गोवर्धन (उ.प्र.)
ट्रस्टी एवं उपाध्यक्ष	:	अखिल भारतीय माहेश्वरी सेवा ट्रस्ट, द्वारिका (गुजरात)
ट्रस्टी एवं उपाध्यक्ष	:	अखिल भारतीय माहेश्वरी सेवा ट्रस्ट, जगन्नाथपुरी (उड़ीसा)
ट्रस्टी	:	श्री रामशंकर गोशाला, छापर (चुरु)
ट्रस्टी	:	श्री माहेश्वरी भवन छापर (चारु)
संरक्षक	:	महेश हास्पिटल, जयपुर
ट्रस्टी	:	शेखावटी विकास परिषद, जयपुर
पूर्व उपाध्यक्ष	:	उत्सव माहेश्वरी भवन, जयपुर
भूतपूर्व शिक्षा सचिव	:	माहेश्वरी समाज, जयपुर (2002-12)
कार्यकारिणी सदस्य	:	माहेश्वरी समाज, जयपुर (1999-22)
पूर्व बोर्ड सदस्य	:	'माहेश्वरी' (मुखपत्र) अ.भा. माहेश्वरी महासभा
कार्यकारी मण्डल सदस्य	:	अ.भा. माहेश्वरी महासभा
पूर्व कोषाध्यक्ष	:	जयपुर जिला माहेश्वरी सभा
पूर्व अध्यक्ष	:	सुजानगढ़ तहसील नागरिक परिषद, जयपुर
ज्रस शो कमेटी सदस्य	:	ज्वैलर्स एसोसिएशन, जयपुर

बाहेती जेम्स एण्ड ज्वेल्स (प्रा.) लिमिटेड

(Govt. Approved Jewellery Valuer) Since 1982

''गोकुल धाम'', 2030, पिटलियों का चौक, जोहरी बाजार, जयपुर (राज.) 302003

दूरभाष : 0141-2570415/75, मो: 098290-79200

ई-मेल : bajrang@baheti.in

निवास : सी-1/401-402, कमल अपार्टमेंट-1, बनी पार्क, जयपुर (राज.) 302006

सत्य परेशां
हो सकता है
पराजित नहीं ...

सत्य की हुई जीत ...

सर्वोच्च न्यायालय ने महेश बैंक के पक्ष में दिया गया निर्णय
श्री रमेश कुमार जी बंग एवं उनके साथी निदेशक मण्डल की जीत हैं।
यह जीत रमेश जी बंग के चाहने वालों की जीत...
सच्चाई की जीत है ...

जहाँ पर हर सर झुक जाये..
वो मन्दिर है
जहाँ पर हर नदी समा जाये
वो समन्दर है
जीवन की इस कर्मभूमि पर युद्ध बहुत है
जो इस युद्ध को जीत जाये
वो हमारे श्री रमेशजी बंग है

आभार ...

देश की न्याय पालिका
को सादर नमन ...

रमेश कुमार बंग फैन्स क्लब

C/o. Lakshmi Trading Co. 15-7-583/2, Begum Bazar, Hyderabad - 500 012 (TS)
& 98490 21541, 93910 31575, 98480 80511, 92462 42277

महेश बैंक के चुनावों पर लगी ''मोहर''

सर्वोच्च न्यायालय ने इसकी वैधानिकता को स्वीकार कर दिया फैसला

हैदराबाद। गत 21 दिसम्बर 2020 को हुए ए.पी. महेश कोऑपरेटिव अर्बन बैंक लिमिटेड के निदेशक मंडल के चुनावों के बाद विवाद की स्थिति बनी हुई थी। यह विवाद न्यायालय में लंबित था। अंततः सर्वोच्च न्यायालय ने महेश बैंक के पक्ष में निर्णय देकर सभी विवादों पर विराम लगा दिया।

बैंक की निर्धारित प्रक्रिया अनुसार ए.पी. महेश बैंक कोऑपरेटिव अर्बन बैंक लिमिटेड के निर्देशक मंडल के 15 पदों हेतु चुनाव गत 21 दिसम्बर 2020 को हुए थे। इसमें दो पैनल आमने सामने थे। इसमें रमेशकुमार बंग के नेतृत्व वाले संस्थापक पैनल तथा भगवती बल्दवा के नेतृत्व वाले फाउंडर्स पैनल के बीच सभी 15 पदों पर टक्कर थी। मतदान पश्चात् मतगणना प्रारम्भ हुई। लगभग 90 प्रतिशत मतों की गणना पूर्ण हो चुकी थी, तभी बोगस मतों का आरोप लगाते हुए फाउंडर्स पैनल ने हंगामा प्रारम्भ कर दिया था। इसे देखते हुए चुनाव अधिकारी द्वारा बीच में ही मतगणना रोक दी गई, जिससे संस्थापक पैनल के सदस्य भी नाराज हो गये।

न्यायालय में लंबित रहा परिणाम

महेश बैंक के चुनावों की मतगणना को बीच में ही रोकने के खिलाफ उच्च न्यायालय में दाखिल की गयी तीन याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए अदालत ने शेष मतगणना तत्काल पूरी करने के निर्देश दिये थे। निर्देश का पालन करते हुए चुनाव अधिकारी ने सभी प्रत्याशियों को सूचित किया कि मतगणना उसी दिन 25 दिसम्बर 2020 को 5.30 बजे होगी। लगभग 7 बजे इच्छुक प्रत्याशियों को मतगणना केंद्र के भीतर बुलाया गया। हालांकि यहां भी काफी देर तक प्रक्रिया विधिवत रूप से शुरू नहीं हो सकी, लेकिन फिर अदालत के आदेशों की पूर्ति को ध्यान में रखते हुए यह प्रक्रिया रात 8.50 बजे पूरी कर ली गयी। इसमें शेष 4 ईवीएम की मतगणना पूर्ण कर ली गई। चुनाव प्राधिकरण के दोनों पैनलों से एक सदस्य और निर्दलीय प्रत्याशियों के प्रतिनिधि के हस्ताक्षर ईवीएम से निकाली गयी रिपोर्ट्स पर प्राप्त कर उन्हें लिफाफे में बंद कर दिया गया गया।

सर्वोच्च न्यायालय ने यह दिया फैसला

एपी महेश को-ऑपरेटिव अर्बन बैंक शेयर होल्डर्स वेल्फेयर एसोसिएशन ने बैंक के चेयरमैन, वाइस चेयरमैन व मैनेजिंग डायरेक्टर के खिलाफ पुलिस जाँच पर तेलंगाना उच्च न्यायालय द्वारा लगाई गई रोक को सुप्रीम कोर्ट में विशेष अनुमति याचिका (एसएसपी) के जरिए चुनौती दी थी। अपने फैसले में माननीय न्यायाधीश इंदिरा बैनर्जी व न्यायमूर्ति वी.राम सुब्रमण्यन की खण्डपीठ ने वेल्फेयर एसोसिएशन के गठन के उद्देश्य पर सवाल उठाने के साथ-साथ चुनावी विवाद को आपराधिक मामला बनाने संबंधी मंशा को भी आड़े हाथों लिया। सर्वोच्च न्यायालय ने चेयरमैन, वाइस चेयरमैन व मैनेजिंग डायरेक्टर को उच्च न्यायालय द्वारा दी गई राहत को जायज ठहराते हुए कहा कि वेल्फेयर एसोसिएशन ने अपने गठन (2019) से पूर्व धांधली (2016-19) के आरोप लगाकर चुनावी विवाद को आपराधिक कृत्य ठहराने का प्रयास किया है।

न्यायालय ने बैंक के पक्ष में यह कहा

सुप्रीम कोर्ट का कहना था कि असोसिएशन का गठन चेयरमैन एमिरेट्स के पद को गलत ठहराने के उद्देश्य से हुआ था। किंतु इस असोसिएशन ने लगातार चुनावी मुद्दों पर अदालत के दरवाजे खटखटाए और बड़ी राजनीतिक हस्तियों के प्रभाव का इस्तेमाल कर बैंक के पदाधिकारियों के विरुद्ध पुलिस में मामले दर्ज करवाए। सर्वोच्च न्यायालय ने आपराधिक कानून के पहले सिद्धांत कि गवाह झूठे हो सकते हैं, परिस्थितियाँ नहीं, को ध्यान में रखते हुए महेश बैंक मामले से जुड़े सारे दस्तावेज और क्रमवार हुई कार्रवाइयों का संज्ञान लिया। साथ ही कथित वोट फ्राड को लोन फ्राड की ओर मोड़ने के सिलसिले को भी जाँचा-परखा। अदालत ने निहारिका मामले को नजीर मानते हुए यह टिप्पणी भी की कि बैलेट पेपर की ताकत को पुलिस के जरिए नहीं झुठलाया जा सकता।

खरी-खरी

नियम का, धर्म का, सत का
हुआ अवसान है अब तो

मनुजता की, कुटिलता ही
बड़ी पहचान है अब तो

हुआ वैभव प्रतिष्ठित
विद्वता के मुख को काला कर

.... यहाँ ईमान भी
लगता है बेईमान है अब तो.

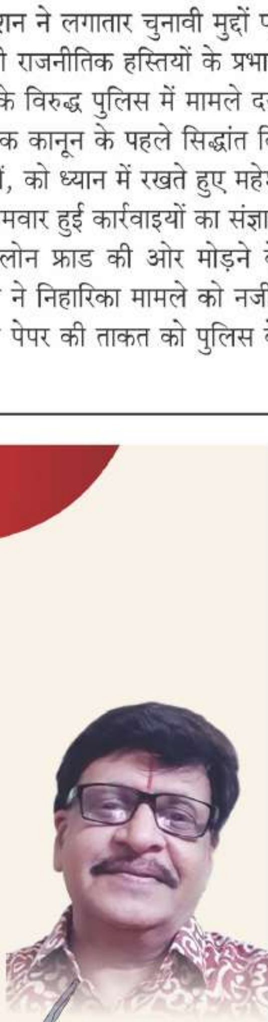

© राजेन्द्र गट्टानी, भोपाल
94250-16939, 87702-21707

समाज ने गत माह अपना उत्पत्ति पर्व महेश नवमी कोविड-19 के नियमों का पालन करते हुए भी उत्साह के साथ मनाया। इसमें विभिन्न ऑनलाईन स्पर्धाओं व सेवा गतिविधियों के आयोजन हुए, जिनके समाचार अब भी प्राप्त हो रहे हैं।

■ टीम SMT

यहाँ भी गूंजा "जय महेश"

▶▶| **जयपुर।** महेश नवमी के मौके पर माहेश्वरी सभाबंधुओं ने घर में ही भगवान महेश की पूजा-अर्चना की। इस मौके पर विभिन्न ऑनलाइन आरती सहित अन्य गतिविधियां भी हुई। समाज अध्यक्ष प्रदीप बाहेती ने बताया कि तिलक नगर स्थित समाज कार्यालय में भगवान महेश की पूजा-अर्चना की गई। इस दौरान यहां सजाई गई विशेष झांकी आकर्षण का केंद्र रही। मुख्य अतिथि मुंबई से आये उद्योगपति गोपाल काबरा ने जरूरतमंदों की मदद का आह्वान किया। समाज अध्यक्ष श्री बाहेती ने समाजजनों के लिए कई घोषणाएं कीं। इनमें विधवा पेंशन के तहत समाज की पात्र महिलाओं को प्रति माह 4000 रूपए देने, माहेश्वरी समाज, जयपुर के विद्यालयों में अध्ययनरत समाज के बच्चों को निःशुल्क शिक्षा तथा अन्य विद्यालयों में अध्ययन कर रहे कोरोना पीड़ित समाज के बच्चों को 15 हजार रूपए वार्षिक सहायता मिलेगी। इस अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं का भी आयोजन हुआ।

▶▶| **इंदौर।** जिला माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा महेश नवमी पर्व सादगी के साथ जूम एप पर मनाया गया। स्वागत गीत माधुरी सोमानी ने गाया। तत्पश्चात संस्था अध्यक्ष सुमन सारड़ा ने सभी का शाब्दिक अभिनन्दन किया। मुख्य अतिथि आनंद नागोरी तथा लीलाधर माहेश्वरी थे। संस्था सचिव नम्रता राठी ने बताया कि संगठन द्वारा ऐसी पांच शख्सियत जिन्होंने कोरोना कमाण्डो बनकर मानवता की किसी न किसी रूप में सेवा की, उनका सम्मान भी इस अवसर पर किया गया। इसमें डॉ. जयश्री तापड़िया, प्रो. वाणी सोनी, कुसुम हर्ष माहेश्वरी, रेणु भूतड़ा, डॉ. राधिका मारू आदि शामिल थीं। कार्यक्रम संयोजक रेखा काकाणी ने बताया कि कार्यक्रम में विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का ऑनलाईन आयोजन भी हुआ।

▶▶| **नागपुर।** महेश नवमी पर्व अंतर्गत विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इनमें से कुछ कार्यक्रम ऑनलाइन थे। तो कुछ ऑफलाइन। समयानुसार वृक्षारोपण, रक्तदान आदि समाज हित के कार्यक्रमों के पश्चात कई प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ। प्रसिद्ध वक्ता अनुराधा जाजू ने अपने वक्तव्य से सभी का दिल जीत लिया। श्री माहेश्वरी युवक संघ इतवारी एवं हिवरीनगर में श्री बड़ी मारवाड़ माहेश्वरी पंचायत भवन के समाज बंधुओं द्वारा वृक्ष के पौधों का रोपण कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। नगर माहेश्वरी सभा के अंतर्गत तीनो पंचायत के युवा संगठन द्वारा महेश नवमी के पावन पर्व पर रक्तदान शिविर का विभिन्न स्थलों पर आयोजन किया गया। विभिन्न प्रतियोगिताओं के सभी विजेताओ को पुरस्कार स्वरूप नगद राशि भी प्रदान की गई। श्री माहेश्वरी युवक संघ एवं श्री बड़ी मारवाड़ माहेश्वरी महिला समिति द्वारा 'आर्ट प्रशिक्षण' शिविर का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण सतीश बियाणी द्वारा दिया गया। महेश नवमी के साप्ताहिक कार्यक्रम की पूर्णाहुति ऑनलाइन हुई। इस ऑनलाइन कार्यक्रम में महेश नवमी की संयोजिका मीनू भट्टड़ के सरप्राइज प्रश्नोत्तर का सभी ने आनंद लिया व पुरस्कार जीते। कार्यक्रम का संचालन किरण मुंदडा ने किया। आभार महिला समिति की सचिव मंजू चांडक ने माना। तकनीकी सहयोग कल्पना मोहता का रहा।

▶▶| **राजसमन्द।** माहेश्वरी संस्था के अध्यक्ष अर्जुनलाल चेचाणी ने बताया कि कोविड-19 के नियमों का पालन हुए विभिन्न तरीकों से महेश नवमी कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें सर्वप्रथम भगवान महादेव का अभिषेक महाआरती व श्रृंगार करके भजन-कीर्तन किये गये। राजसमन्द जिले की गौशालाओं में जाकर हरी घास, रजका, पशु आहार के साथ-साथ गौ माता की पूजा अर्चना कर मधुर लापसी का भोजन करवाया। कुछ पंचायतों में कमजोर एवं गरीब वर्ग के परिवारों को सूखा राशन, कपड़े व अन्य खाने की सामग्री भेंट की गई। नवयुवक मण्डल ने ऑनलाईन विभिन्न खेलकूद कार्यक्रम आयोजित किये। बुजुर्गों का सम्मान शॉल ओढ़ाकर किया गया। जिला महिला संगठन ने भी कई तरह के ऑनलाईन कार्यक्रम आयोजित किये।

आरती ने ऑस्ट्रेलिया में बढ़ाया देश का मान

मेड़ता। माहेश्वरी समाज की महिलाएं पूरे विश्व में देश का नाम रौशन कर रही हैं। ऐसी ही गोल्ड कोस्ट में रहने वाली भारतीय ऑस्ट्रेलियन समाज की डॉ आरती बजाज हैं, जो मूल रूप से नागौर के मेड़ता सिटी की निवासी हैं। बीते 5 सालों से ऑस्ट्रेलिया में आरती का नाम भारतीय व ऑस्ट्रेलियाई समाज की ओर से बड़े ही गर्व से लिया जा रहा है। इसकी वजह यह है कि आरती उन चुनिंदा आर्टिस्ट में शामिल हैं जो कई नेशनल और इंटरनेशनल अवार्ड जीत चुकी हैं। गत दिनों गोल्ड कोस्ट शहर में उन्होनें फिर वूमन ऑफ़ द ईयर अवार्ड जीतकर एक बार फिर भारत का मान बढ़ाया है। मेड़ता के भंवरलाल बजाज की पुत्रवधु डॉ. आरती पवन बजाज ने ऑस्ट्रेलिया में गोल्डकोस्ट वूमन ऑफ़ द ईयर अवार्ड जीता है। इस अवार्ड में 7 अलग-अलग श्रेणियों को शामिल किया गया था, जिसमें आर्ट्स एंड

एंटरटेनमेंट श्रेणी में आरती बजाज ने अंतिम तीन में जगह बनाई और उसके बाद गोल्डकोस्ट वूमन ऑफ़ द ईयर का खिताब अपने नाम किया। आरती यहाँ पर आर्ट्स के क्षेत्र में भी कार्य कर रही हैं। वाइल्ड ड्रीमर प्रोडक्शन और नाइन एक्सप्रेशंस जैसी कंपनियों के जरिये आरती ने भारतीय और ऑस्ट्रेलियन समाज की महिलाओं को आर्ट्स से जोड़ा है।

दुनिया को दिखाया था मीरा का 'दिव्य प्रेम'

ऑस्ट्रेलिया में पेशे से फिजियोथेरेपिस्ट व सोनोग्राफर आरती अपने दो बच्चों को भी संभालती हैं। मगर इसके साथ वह जो करती हैं, वो वाकई में अद्भुत है। वह भारतीय ऑस्ट्रेलियन समाज की महिलाओं को साथ लेकर रंगमंच के एक सफर पर निकल पड़ी हैं। आरती का आठ साल की उम्र से ही कला के प्रति अनूठा लगाव है। आरती ने आर्ट्स के जरिए दुनिया को मीरा के 'दिव्य प्रेम' यानी कृष्ण भक्ति के दर्शन कराए हैं।

'एक पाती पीहर के नाम' में जाजू प्रथम

वर्धा। शासकीय गाईडलाइन एवं सोशल डिस्टेंसिंग के चलते महिलाओं को दो सालों से 'पीहर' जाने से कोरोना ने रोक रखा है। किसी भी विवाहित और किसी भी उम्रदराज की महिला के लिए 'पीहर' सबसे अनमोल जगह है। इसी से संबंधित 'एक पाती पीहर के नाम' जैसे विषय पर जिला मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से राज्य स्तर पर पत्र लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। पत्र लेखन की कला अब सोशल मीडिया के चलते प्रायः लुप्त हो गई है। ऐसे में एक स्त्री को अपने पीहर की यादों से सुसज्जित सभी रिश्ते नातों

को सहेजते हुए सीमित शब्दों में पत्र लिखना था। देश भर में कोई भी महिला जिसका पीहर महाराष्ट्र में हो वह इस प्रतियोगिता का हिस्सा बन सकती थी। अपने शब्दों से भावनाओं को सहेजते हुए पीहर की हर याद को शब्दों में पिरोते हुए सभी रिश्तों को नमन करते हुए अलका राजकुमार जाजू ने अपने माता-पिता को पत्र लिखा। इसे सराहते हुए उन्हें प्रथम पुरस्कार से नवाजा गया। विदित हो कि श्रीमती जाजू को इससे पूर्व कई निबंध एवं लेखन प्रतियोगिता में विदर्भ, राज्य तथा राष्ट्र स्तर पर प्रथम पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं।

साक्षी करेगी विदेश मंत्रालय से इंटर्नशिप

जोगबनी। समाज के वरिष्ठ भीकमचंद तापड़िया की पौत्री और श्याम तापड़िया की सुपुत्री साक्षी तापड़िया को भारत सरकार के विदेश मंत्रालय में इंटर्नशिप करने का अवसर मिला है। साक्षी को विदेश मंत्री एस जयशंकर के मातहत विदेश नीति, मंत्रालय के अन्तरवार्ताओं, मंत्रालय संबंधित संसद में प्रस्तुति, राजनयिक संबंध से संबंधित विषयों पर कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। इंटर्नशिप की अवधि सफलतावपूर्वक पूर्ण होने के बाद साक्षी एमबीए के लिए तैयारी करेंगी। एमबीए करने के बाद वह विदेश मंत्रालय में स्थायी नियुक्ति के लिए सक्षम हो जाएगी।

अंगदान के प्रणेता स्त्रोत बने शैलेश नवाल

अमरावती। अमरावती के डीएम शैलेश नवाल एक अभिनव अभियान का संचालन राष्ट्रीय स्तर पर कर रहे हैं। इसमें नेत्र सहित अन्य अवयव तथा त्वचा दान आदि के लिए जन जागरण का उनका काम देश भर में कई संस्थाओं के माध्यम से जारी है। श्री नवाल अपने उद्बोधन तथा संपर्क के साथ कई युवाओं के प्रेरणा स्त्रोत बन चुके हैं। मूलतः

अजमेर के श्री नवाल ने वर्ष 2010 में पहले ही प्रयास में यूपीएससी की परीक्षा उत्तीर्ण कर एक रिकार्ड बनाया था। आपने अपने सेवा काल में कई अवार्ड हासिल किये हैं। 2016 में वे वर्धा के कलेक्टर बने तथा वर्ष 2019 में वे अमरावती में कलेक्टर मनोनीत हुए। श्री नवाल समाज के वरिष्ठ सुभाष एवं रमादेवी के सुपुत्र हैं।

हजारों उलझनें राहों में और
कोशिशें बेहिसाब,
इसी का नाम है जिंदगी
चलते रहिए जनाब ..!!

अपनों की मदद को आगे आये अपने

कोरोना में अपनों को खोया, समाज ने थामा हाथ

इन्दौर। कोरोना महामारी ने आज पूरे देश में कोहराम मचा रखा है। इस बीमारी ने कई अपनों को अपनों से दूर कर दिया। परिवार में अगर मुखिया ही चले जाऐं तो बच्चों के सर से साया उठ जाता है। ऐसे में उनकों कई परेशानियों का सामना करना पड़ता है। ऐसे ही बच्चों का लालन-पालन करने के लिए संस्था 'बरगद' आगे आई है। समाज के ऐसे बच्चे जिनके अभिभावक इस बीमारी से अपनों का साथ छोड़ चलें हैं, ऐसे बच्चों की शिक्षा, चिकित्सा सहित अन्य मूलभूत सुविधाओं का खर्च संस्था के पदाधिकारी उठाएंगे और उन्हें अपने अभिभावकों की याद न आए इसकी भी चिंता कर उन्हें हमेशा खुशियां देते रहेंगे। उक्त विचार संस्था बरगद अध्यक्ष एवं माहेश्वरी समाज के प्रचार मंत्री अजय सारड़ा एवं माहेश्वरी सामाजिक पारमार्थिक सेवा समिति के संस्थापक अध्यक्ष रविंद्र राठी ने एक कार्यक्रम में व्यक्त किए। न्यू अग्रवाल नगर में आयोजित कार्यक्रम में समाज की एक बालिका को उपहार स्वरूप रविवार को गाड़ी भेंट की गई। संस्था बरगद अध्यक्ष अजय सारड़ा ने बताया कि कोरोना महामारी में अपने माता-पिता को खो चुकी युवती की मदद करने के लिए संस्था बरगद एवं माहेश्वरी समाज के पदाधिकारी आगे आये हैं। समाज की बेटी को मंजू पसारी ने स्व. श्री गिरधर गोपाल पसारी की स्मृति में उपहार स्वरूप गाड़ी भेंट की। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में मनीष बिरला विशेष रूप से उपस्थित थे। मुख्य अतिथि श्री बिरला ने बेटी को उपहार स्वरूप गाड़ी भेंट करते हुए कहा कि समाज के होते हुए बालिका अपने आपको अकेला न समझें, माहेश्वरी समाज का प्रत्येक घर ऐसी बेटियों के लिए खुला है। वहीं अध्यक्ष श्री सारड़ा ने कहा कि माहेश्वरी समाज के ऐसे प्रतिभावान विद्यार्थी जिन्होंने इस कोरोना महामारी में अपने अभिभावकों को खोया वह संस्था के पदाधिकारियों से संपर्क कर सकते हैं। उनकी शिक्षा से लेकर चिकित्सा तक हर संभव सहायता समाज के पदाधिकारियों द्वारा की जाएगी।

एम. पी. एस. संस्कृति का उद्घाटन

जयपुर। दी एज्यूकेशन कमेटी ऑफ दी माहेश्वरी समाज द्वारा संचालित प्री-प्राइमरी स्कूल एम.पी.एस. संस्कृति के गौरवशाली इतिहास में एक और नया अध्याय एम.पी.एस. संस्कृति, तिलक नगर (प्री-प्राइमरी) के रूप में जुड़ा। इसका लोकार्पण संरक्षक एवं पूर्व अध्यक्ष माहेश्वरी समाज आर. डी. बाहेती के कर कमलों से एक भव्य समारोह के रूप में हुआ। उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि प्रमुख समाजसेवी, पूर्व अध्यक्ष एवं समाज संरक्षक आर. डी. बाहेती थे। ई.सी.एम.एस. के अध्यक्ष प्रदीप बाहेती ने आगन्तुक अतिथियों का स्वागत करते हुए प्री-प्राइमरी स्कूलों की महत्ता और कार्य संस्कृति पर प्रकाश डाला। महासचिव शिक्षा नटवरलाल अजमेरा ने ई.सी.एम.एस. के स्वर्णिम शैक्षिक इतिहास पर प्रकाश डाला। एम.पी.एस. संस्कृति के नन्हें-मुन्ने बच्चों ने वर्चुअल सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दी। कार्यक्रम के अंत में विद्यालय के मानद् सचिव अशोक कुमार फलोड़ ने अतिथियों का आभार ज्ञापित किया। समाज की कार्यकारिणी के प्रबुद्ध गोपाललाल मालपानी, नटवर कुमार सारड़ा, अजय नोवाल, बिहारी लाल साबू, रमेश मनिहार आदि उपस्थित थे। इस शुभ अवसर पर तिलक नगर प्रांगण में निर्मित माहेश्वरी डायलिसिस, डायग्नोस्टिक एण्ड रिसर्च सेन्टर का उद्घाटन मुख्य अतिथि श्री बाहेती के कर कमलो से हुआ।

लघुकथाकार सतीश राठी सम्मानित

भोपाल। लघुकथा शोध केंद्र भोपाल द्वारा आयोजित एक आभासी कार्यक्रम में इंदौर शहर के लघुकथाकार एवं क्षितिज पत्रिका के संपादक सतीश राठी को सम्मानित किया गया है। इन्हें पद्मश्री रामनारायण उपाध्याय स्मृति लघुकथा सम्मान प्रदान कर सम्मानित किया गया है। इस आभासी कार्यक्रम की अध्यक्षता साहित्य अकादमी के निदेशक विकास दवे द्वारा की गई। प्रमुख अतिथि के रूप में वनमाली सृजन पीठ के निदेशक मुकेश वर्मा उपस्थित रहे। श्री राठी लघुकथा के उन्नयन के लिए पिछले 40 वर्षों से सतत कार्यरत हैं और निरंतर लघुकथा लेखन द्वारा देश विदेश में अपना स्थान स्थापित किया है।

कोरोना काल में दी सेवा

कोलकाता। मध्य कोलकाता माहेश्वरी सभा महिला एवं युवा संगठन द्वारा इस कोरोना काल में जब पूरे देश में ऑक्सीजन के लिए हाहाकार मचा हुआ था, उस समय इस कार्य को करने का बीड़ा उठाया। इसके अंतर्गत समाज के कार्यकर्ताओं ने जरूरतमंदों के घरों पर जाकर ऑक्सीजन सिलेंडर एवं ऑक्सीजन कंस्ट्रक्टर की तत्कालीन आवश्यकता की पूर्ति की। इस कार्य में संयोजक मयूर मालाणी, कमल गट्टानी, अजीत बाहेती, नंदकिशोर सादानी, भवानी शंकर मोहता एवं अन्य सदस्यों ने अपना योगदान दिया।

दौलत सिर्फ रहन सहन का स्तर बदल सकती है...
आदतें, बुद्धि, नियत और तक़दीर नही...

पं. मेहता का किया सम्मान

किशनगढ़ (राज.)। परमात्मा और जीवात्मा के बीच जब तक माया है, परमात्मा दिखेंगे नहीं। किसी मोड़ पर माया जरा सी हटी और परमात्मा के दर्शन हुए। इसलिए जीवन में माया तो रहेगी पर हमें मोड़ बनाए रखना है। उक्त विचार जीवन प्रबंधन गुरु पंडित विजयशंकर मेहता, उज्जैन ने मदनगंज-किशनगढ़ में सुनील सोमाणी के निवास पर सायंकाल कोरोना के कारण आयोजित एक सादे सत्संग समारोह में प्रकट किये। इस अवसर पर सुनील सोमाणी बिंदु सोमाणी, कृष्णचंद टवाणी, घनश्यामदास अग्रवाल, रामकिशोर बाहेती, किशनगोपाल मालपानी, नटवरलाल सोमाणी आदि ने माल्यार्पण किया तथा ज्ञानमंदिर की ओर से साहित्य भेंट किया। इस अवसर पर राजेश लोहिया, नरसिंह मालपानी, संजीव मूंदड़ा, भगवान वैष्णव, दीपक वैष्णव, मुकेश रांदड़ रामानंद राठी, हरीश लोहिया, तेजकुमार चांडक, पुरुषोत्तम भराडिया आदि सपरिवार उपस्थित थे।

योग दिवस का ऑनलाइन आयोजन

जयपुर। श्री माहेश्वरी समाज और दी एज्यूकेशन कमेटी ऑव् दी माहेश्वरी समाज (सोसायटी) जयपुर की ओर से अंतराष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित ऑनलाइन कार्यक्रम का यूट्यूब पर लाइव प्रसारण किया गया। इसमें योगाचार्य श्रवण कुमार ने योगिक क्रियाओं का अभ्यास करवाया। मुख्य अतिथि राजस्थान योग परिषद के संरक्षक व हास्य सम्राट आरडी बाहेती, सद्संस्कार समिति के संयोजक दिनेश मालपानी, सीएम सारडा और वरिष्ठ योगाचार्य डॉ. पूजा शर्मा ने भी विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में संयोजक अनिल भूतड़ा, शिक्षा महासचिव नटवर लाल अजमेरा, महामंत्री गोपाल लाल मालपानी, उप-महासचिव शिक्षा रमेश सोमानी, सुरेंद्र कुमार काबरा आदि मौजूद रहे।

'शब्द' ही जीवन को अर्थ दे जाते हैं और
'शब्द' ही जीवन में अनर्थ कर जाते हैं।

भक्ति सरिता में शिल्पा द्वितीय

परतुर। समाज की सक्रिय सदस्या शिल्पा मालपानी ने स्थानीय श्री माहेश्वरी सभा द्वारा आयोजित महेश नवमी के उपलक्ष्य में मालपाणी बिसानी एंडोमेंट भक्ति सरिता 2021 प्रतियोगिता में अनुप जलोटा, साधना सरंग एवं रवि जैन की उपस्थिति में लगभग 1300 प्रतियोगियों में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। यह स्पर्धा ऑनलाईन ऑडिशन द्वारा आयोजित की गई और फायनल राउंड भी ऑनलाईन ही लिया गया।

पुलिस आयुक्त का समाज द्वारा अभिनंदन

वरंगल। माहेश्वरी समाज वरंगल और प्रगतिशील मारवाड़ी समाज के प्रतिनिधियों ने वरंगल के नवनियुक्त पुलिस आयुक्त डॉ. तरुण जोशी आईपीएस का वरंगल पुलिस मुख्यालय में अभिनंदन किया। इस अवसर पर प्रगतिशील मारवाड़ी समाज के उपाध्यक्ष प्रहलाद सोनी, सचिव श्याम सुंदर जाखोटिया, माहेश्वरी समाज के अध्यक्ष संपत कुमार लाहोटी, सचिव नवल किशोर मणियार, उपाध्यक्ष नवल किशोर मुंदड़ा, कोषाध्यक्ष रामकिशोर मणियार, तेलंगाना आँध्रप्रादेशिक माहेश्वरी सभा के उपाध्यक्ष गोपीकिशन लाहोटी, रमेश चंद्र बंग, सुरेश चंद बंग एवं जयप्रकाश बंग आदि उपस्थित थे।

मालानी परिवार द्वारा जनसेवा

अमरावती। श्री माहेश्वरी पंचायत, द्वारा महेश नवमी उत्सव पिछले वर्ष की तरह कोरोना महामारी के चलते शासन के नियमानुसार सामाजिक दूरी का पालन करते हुए सादगीपूर्ण तरीके से भवन स्थित मंदिर में ही मनाया गया। समाज के जरूरतमंद परिवारों की सहायता समाज के दानदाताओं के सहयोग से माहेश्वरी पंचायत निरंतर करती आ रही है। इसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए महेश नवमी के उपलक्ष्य में समाज के जरूरतमंद परिवारों को दानवीर कमलकिशोर मालपानी एवं माहेश्वरी पंचायत के संयुक्त तत्वावधान में डबल बेडशीट और पिलो कव्हर का वितरण केसरीमल झंवर, सरपंच की अध्यक्षता में कमलकिशोर मालाणी, सुषमा मालाणी, रचना राठी आदि के प्रमुख आतिथ्य में किया गया। सुभाष राठी, जगदीश कलंत्री, सुरेश साबू, विजयप्रकाश चांडक, नितीन सारडा, संजयकुमार राठी, विनोद जाजू, नरेश झंवर आदि उपस्थित थे।

स्वास्थ्य केंद्र को 2 एसी भेंट

जैसलमेर। जिले के रामगढ के मूल निवासी सत्यनारायण पुत्र गोविन्दलाल भूतड़ा हाल निवास चैन्नई ने सामाजिक सरोकार निभाते हुए कस्बे के सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में दो एयर कण्डीशनर भेंट किए। सीएचसी रामगढ़ में बने आपातकालीन कक्ष व प्रसूति कक्ष में एसी की जरूरत महसूस की जा रही थी। जिस पर चिकित्सा प्रभारी डॉ. निखिल शर्मा ने कस्बे के समाजसेवी किशन गिरी को अवगत कराया था। किशन गिरी ने श्री भूतड़ा से बात कर अस्पताल में एसी लगाने का निवेदन किया जिस पर उन्होंने सत्तर हजार कीमत के दो एसी सीएचसी में लगावा दिए। श्री गिरी ने बताया कि पूर्व में भामाशाह श्री भूतड़ा द्वारा राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय में वाटर कूलर सहित प्याऊ का निर्माण करवाया गया। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में तीस हजार कीमत के बीस पंखें भेंट किए गए। हेमा गांव के पास स्थित जीयादेशरॉय मंदिर निर्माण में पचहतर हजार रूपये की सहायता राशि भेंट की गई तथा कस्बे में प्राथमिक स्कूल के पास स्थित जीयादेशरॉय थले की चार दिवारी का निर्माण करवाया जा चुका है।

समाज के चुनाव सम्पन्न

वरंगल। स्थानीय माहेश्वरी समाज के सत्र 2021-24 के लिए कार्यकारिणी के चुनाव प्रगतिशील मारवाड़ी समाज भवन में निर्विरोध सम्पन्न हुए। इसमें सत्र 2021-24 की कार्यकारिणी में रमेशचंद बंग (अध्यक्ष), नवल किशोर मुंदडा (उपाध्यक्ष प्रथम), श्यामसुंदर जाखोटिया (उपाध्यक्ष द्वितीय), नवल किशोर मणियार (मंत्री), जितेंदर मुंदडा (सह मंत्री प्रथम), सुनील कुमार जाजू (सह मंत्री द्वितीय), रामकिशोर मणियार (कोषाध्यक्ष), राजेंदर लड्डा (सह कोषाध्यक्ष), दामोदर लाहोटी (सांस्कृतिक मंत्री), धनराज मणियार (सह सांस्कृतिक मंत्री) एवं कार्यकारिणी सदस्यों का चयन हुआ।

एक सत्य बात हमेशा याद रखना
'दुआएं रद्द नही होती'
बस बेहतरीन वक्त पर कबूल होती है ।।

शीतल छांव और राशन किट भेंट

कोटा। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला की प्रेरणा से प्रारंभ किए गए अभियान के तहत भीमगंजमंडी तथा कैथूनीपोल क्षेत्र में श्रमवीरों को इंडियन रेड क्रॉस सोसाइटी के अध्यक्ष राजेश कृष्ण बिरला ने शीतल छांव और राशन किट भेंट किए। इसके अंतर्गत सड़क किनारे जूते-चप्पल की मरम्मत करने वालों को तपती दोपहरी और बरसात के पानी से भीगने से बचाने के लिए लोकसभा अध्यक्ष श्री बिरला की प्रेरणा से शीतल छांव अभियान प्रारंभ किया गया था, जिसमें उन्हें एक बड़ा छाता भेंट किया जाता है। कोरोना की दूसरी लहर के दौरान लॉकडाउन लगने के बाद इन श्रमवीरों की सहायता के लिए छाते के साथ राशन किट भेंट करने का प्रकल्प भी हाथ में लिया गया। इसी अभियान के तहत सोमवार को पावर फाइनेंस कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया द्वारा सीएसआर के तहत किए गए सहयोग से इंडियन रेड क्रॉस सोसायटी के अध्यक्ष राजेश कृष्ण बिरला, भाजपा शहर जिला महामंत्री जगदीश जिंदल, शहर उपाध्यक्ष रितेश चित्तौड़ा, पार्षद लव शर्मा, पार्षद आरती शाक्यवाल ने सामाजिक कार्यकर्ताओं के साथ कैथूनीपोल तथा भीमगंजमंडी क्षेत्र में छाता और राशन किट भेंट किए।

उपलब्धि

आशुतोष को पीएचडी उपाधि

बूंदी। राजकीय महाविद्यालय बूंदी के शोध छात्र एवं वर्तमान में राजकीय महाविद्यालय देवली में सहायक आचार्य भूगोल के पद पर कार्यरत आशुतोष बिरला को कोटा विश्वविद्यालय, कोटा की ओर से पीएच.डी. उपाधि प्रदान की गई है। आशुतोष बिरला ने बूंदी जिले में ''भू पर्यटन के सतत विकास के लिए विकास व प्रबंधन योजना'' विषय पर डॉ.एन.के. जैतवाल के निर्देशन में अपना शोध कार्य पूर्ण किया है।

लहेर एनटीएसई में सफल

नागपुर। लहेर बुब सुपूत्री महेश एवं रचना बुब ने एनसीईआरटी द्वारा आयोजित एनटीएसई 2020 परीक्षा उत्तीर्ण की। इस परीक्षा मे भारत से 12- 14 लाख बच्चो ने भाग लिया था। यह परीक्षा शैक्षणिक श्रेणी में बड़ा महत्व रखती है, साथ ही लहेर को आगे की शिक्षा के लिए सरकार द्वारा स्कालरशिप भी प्राप्त होगी।

बहुमुखी शिक्षण संस्थान का भूमि पूजन

जयपुर। दी एजुकेशन कमेटी ऑफ दी माहेश्वरी समाज (सोसायटी) द्वारा बनीपार्क स्थित सवाई जयसिंह हाईवे पर नवीन बहुमुखी शिक्षण संस्थान का भूमि पूजन किया गया। भूमि पूजन श्री महेश्वरी समाज के पूर्व अध्यक्ष स्वर्गीय श्री ओम प्रकाश दरगड की स्मृति में उनकी धर्मपत्नी सुमनलता दरगड द्वारा किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि समाज संरक्षक व पूर्व अध्यक्ष आर. डी. बाहेती एवं विशिष्ट अतिथि प्रमुख समाज सेवी एवं व्यवसायी कमल कुमार काबरा थे। इस अवसर पर समाज अध्यक्ष प्रदीप बाहेती ने अपने उद्बोधन में संस्था के योगदानों पर प्रकाश डाला। महासचिव शिक्षा नटवरलाल अजमेरा ने इस नवीन बहुमुखी शिक्षण संस्थान के बारे में प्रकाश डाला। समारोह के अन्त में कोषाध्यक्ष नटवरकुमार सारडा ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। समारोह में समाज महामंत्री गोपाल लाल मालपानी, उपाध्यक्ष रमेश कुमार सहित समाज के कई गणमान्य जन मौजूद थे।

योग दिवस पर त्रिदिवसीय वर्कशॉप

नागपुर। माहेश्वरी युवा मंडल (महिला समिति) द्वारा 21 से 23 जून तक अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर त्रिदिवसीय योग वर्कशॉप का आयोजन किया गया। इसमें नागपुर की डॉ. मेघा लड्ढा एवं लता लड्ढा ने आज के दौर में योग की उपयोगिता के बारे में जानकारी दी। प्रथम सत्र के दौरान उन्होंने सही मुद्राओं के बारे में बारीकियाँ दी। उठते-बैठते, खडे रहते समय जो गलतियां प्रायः हम करते हैं, उनसे सभी को अवगत कराया और उसे किस प्रकार ठीक कर सकते हैं, उसकी भी जानकारी दी। दूसरे सत्र में उन्होंने प्राणायाम के बारे में बताया। विभिन्न प्रकार के ध्यान की पद्धतियों द्वारा प्रतिभागियों में स्फूर्ति एवं ऊर्जा का संचार हुआ। तृतीय सत्र में प्रशिक्षक ने एरोबिक्स, रिलैक्सेशन एवं चेहरे के लिए योग बताये। कार्यक्रम के अंत में उन्होंने प्रतिभागियों के प्रश्नों के उत्तर भी दिए। इस अवसर पर युवा मंडल अध्यक्षा सविता केला एवं सचिव राजश्री मूंधड़ा भी उपस्थित थीं। कार्यक्रम की संयोजिका पूजा बल्दवा एवं सहसंयोजिका योगिता गांधी डॉ. सोनल केला एवं नीति चांडक थीं। प्रीति राठी, नीना राठी, सुरुचि नत्थानी, प्राची मोहता, संगीता राठी, जयति डागा, निकिता नत्थानी, आशा राठी, मीनाक्षी मूंधड़ा आदि ने इसमें सक्रिय सहयोग दिया।

महेश नवमी पर पौधारोपण

नागपुर। जिला माहेश्वरी सभा द्वारा महेश नवमी के उपलक्ष्य पर पेड़ लगाओ एवं पेड़ों का संवर्धन करो प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता को जिले की आठों तहसील से भरपूर प्रतिसाद मिला। देश के पर्यावरण में सुधार हो इसलिए घर में आम, नीम, बेल, जामुन, चिकू, आंवला और मोहल्ले-चौक व फार्म हाउस पर पीपल, बरगद, नीम आदि के पेड़ लगाये गये। इसमें सभापति श्याम सोनी सहित, आशा-नंदकिशोर सारडा, सुशीला-पुरूषोत्तम मालू, कौशल्या- पूनमचंद मालू, सुशीला-रमेश मंत्री, निर्मलादेवी- शिवदास राठी, माधुरी- दिलीप मोदी, ममता-बृजलाल राठी, डॉ. रश्मि - डॉ. प्रमोद मुंधड़ा आदि उपस्थित थे। जिला संयोजक राज चांडक, नगर सभा संयोजक मनोज लोया, सह संयोजक रविंद्र चांडक, मीनू भट्टड़, अनिल मंत्री, गोपाल चांडक, श्रीकिशन लखोटिया, आशा दुजारी, प्रगति माहेश्वरी, हरगोविंद भूतड़ा आदि समस्त कार्यकर्ताओं ने सहयोग दिया।

गौशाला में की गौसेवा

ब्यावर। श्री माहेश्वरी पंचायत बोर्ड ब्यावर के तत्वावधान में श्री माहेश्वरी सेवा संगठन व श्री माहेश्वरी महिला परिषद के सहयोग से सेवा कार्यों के तहत गौशाला में गोमाताओ के लिए हरा चारा व गुड़ का वितरण किया गया। मंत्री - दिलीप कुमार जाजू ने बताया कि प्रात : 7 बजे, मसूदा रोड स्थित श्री तिजारती चेंबर सराफ़ान गौशाला, ब्यावर में गौ माता को 1 हजार किलो हरा चारा व गुड़ का वितरण किया गया। कार्यक्रम अध्यक्ष-विष्णुगोपाल हेड़ा, उपाध्यक्ष-सत्यनारायण तापड़िया, मंत्रा-दिलीप कुमार जाजू, अमरचंद मूंदड़ा, सुशील झंवर, महेश चितलांग्या, अशोक नवाल, ललित भूतड़ा, कैलाश जाजू, राजेन्द्र काबरा आदि कई कार्यकर्ताओं ने सेवा कार्य में सहयोग दिया।

चींटी से अच्छा उपदेशक कोई और नहीं है।
वह काम करते हुए खामोश रहती है।

मंदिर ट्रस्ट के चुनाव संपन्न

अजमेर। श्री सोमश्वर मंदिर ट्रस्ट के द्विवार्षिक चुनाव सत्र 2021-23 आदर्श नगर अजमेर रोड स्थित मंदिर ट्रस्ट के सामुदायिक भवन में सर्वसम्मति से संपन्न हुए। इसमें संरक्षक स्नेहलता मंगल, अध्यक्ष विजयकरण कांकाणी, महामंत्री अमरचंद मूंदड़ा, कोषाध्यक्ष विष्णु सर्राफ, उपाध्यक्ष राकेश गुप्ता व सहमंत्री मनीष अग्रवाल निर्वाचित घोषित हुए। जानकारी महामंत्री अमरचंद मूंदड़ा ने दी।

डाड की स्मृति में भजन गंगा कार्यक्रम सम्पन्न

भीलवाड़ा। स्वर्गीय श्रीमती जतनदेवी डाड की स्मृति में भजन गंगा आध्यात्मिक कार्यक्रम का आयोजन गत रविवार 25 जुलाई को किया गया। शुभारम्भ परिवारजनों नाथूलाल लावटी, कैलाश डाड, सुरेन्द्र डाड, जगदीश डाड, अशोक डाड, ओम प्रकाश डाड, दिनेश डाड, राजेश डाड, ललिता गट्टानी व अनिता सोडाणी ने दीप प्रज्जवलित करके किया। भजन गंगा कार्यक्रम का प्रारम्भ भजन गायिका डॉ. सुमन सोनी ने गणपति वंदना से किया तथा उपस्थितजनों की फरमाइश पर कार्यक्रम बिना रूके तीन घंटे लगातार नॉन स्टाप चला।

पुणे की तीन हस्तियाँ सम्मानित

पुणे। समग्र जीवन के लिए नितिन न्याती, विपणन के लिए प्रकाश बंग और अंतरराष्ट्रीय संबंधों के लिए सुहास मंत्री को अमेरिका की द अमेरिकन यूनिवर्सिटी द्वारा डॉक्टरेट की उपाधि से सम्मानित किया गया। तीनों को नेल्सन मंडेला शांति पुरस्कार 2021 भी दिया गया।

पैर में से काँटा निकल जाए तो..
चलने में मज़ा आ जाता है,
और मन में से अहंकार निकल जाए तो..
जीवन जीने में मज़ा आ जाता है..

महिला मंडल की बैठक सम्पन्न

वरंगल। माहेश्वरी महिला मंडल की वार्षिक सर्व साधारण बैठक गत 22जुलाई को स्थानीय प्रगतिशील मारवाड़ी समाज भवन में सम्पन्न हुई। माहेश्वरी महिला मंडल की सचिव सरिता राजगोपाल सोमाणी ने बताया कि इस अवसर पर मंडल की सचिव सरिता सोमाणी ने मंडल की गत दो वर्षों की कार्यप्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। मंडल की कोषाध्यक्ष प्रेमलता मुंदड़ा ने गत दो वर्षो के आय व्यय का ब्यौरा रखा। सांस्कृतिक मंत्री नीतू बंग एवं सह सांस्कृतिक मंत्री सुमन मणियार ने भी मंडल की सांस्कृतिक एवं सामाजिक गतिविधियों की जानकारी दी। इस अवसर पर मंडल की अध्यक्ष माधुरी लाहोटी एवं आँध्र प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन की उपाध्यक्ष चंदा सोनी ने भी अपने विचार सभा के समक्ष रखे। माहेश्वरी महिला मंडल वरंगल की स्थापना 2016 में हुई और मंडल द्वारा सामाजिक कार्य संपादित करने हेतु अर्थ कोष की जरूरत थी। इसके लिए मंडल द्वारा वर्ष 2016 में एक पंचवर्षीय ब्याजरहित डिपाजिट योजना का शुभारम्भ किया गया। मंडल की 40 सदस्याओं ने इस कोष में ब्याज रहित डिपाजिट के रूप में राशि जमा कराकर मंडल की प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस वर्ष उन ब्याजरहित डिपाजिट का समय पूर्ण होने पर मंडल द्वारा इस में योगदान देने वाले सभी सदस्यों का संम्मान कर उनकी जमा राशि ससम्मान उन्हें वापस लौटाई।

ऋषिमुनि समूह द्वारा काल गणना की
प्राचीन नगरी उज्जयिनी से प्रकाशित

श्री विक्रमादित्य पञ्चाङ्ग

इतना सरल की अपने घर के पंडित आप खुद बन जाए

डेढ़ वर्षीय
विवाह मुहूर्त
के साथ

व्रत-पर्व देखना हो या शुभ मुहूर्त या
विवाह के लिए पत्रिका का करना हो मिलान
कहीं जाने की जरूरत नहीं, स्वयं देखें अपने पञ्चाङ्ग में

90, विद्या नगर, टेढ़ी खजूर दरगाह के पीछे, साँवेर रोड़, उज्जैन (म.प्र.)
मो. 094250-91161

सभी प्रमुख बुक स्टॉलों पर उपलब्ध

सोमानी पदग्रहण में उपस्थित

चंडीगढ़। आदित्य विक्रम बिरला व्यापार सहयोग केंद्र के कोषाध्यक्ष समाजसेवी पुरुषोत्तम सोमानी को श्री बंडारू दत्तात्रेय हरियाणा गवर्नर के शपथ विधि में अतिथि के रुप में चंडीगढ़ हरियाणा राजभवन में आमंत्रित किया गया। उल्लेखनीय है कि श्री सोमानी के श्री दत्तात्रेयजी से बहुत ही निकट के संबंध है।

भूतड़ा का किया अभिनंदन

ब्यावर (राज)। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश कोषाध्यक्ष रामकुमार भूतड़ा अल्प प्रवास पर ब्यावर आये। यहां विभिन्न बंधुओं के घर बैठने गए व कोरोना काल में दुख की घड़ी में कई दिवंगत समाजजनों के घर जाकर संवेदनाएं प्रकट की। तत्पश्चात माहेश्वरी भवन में श्री माहेश्वरी पंचायत बोर्ड की कार्यकारिणी ने श्री भूतड़ा का स्वागत व अभिनंदन माला, दुपट्टा और साफा भारतीय परंपरा के अनुसार पहनाकर किया। अध्यक्ष विष्णु गोपाल हेड़ा, मंत्री दिलीप कुमार जाजू व समस्त कार्यकारिणी सदस्य उपस्थित थे।

महिला मंडल की नवीन कार्यकारिणी गठित

बागोर। माहेश्वरी महिला मंडल की बैठक माहेश्वरी भवन बागोर में आयोजित हुई। अध्यक्षता मंडल अध्यक्ष कलावती सेठिया ने की। बैठक में आगामी सत्र के लिये अध्यक्ष- ऋतु बाला सोनी, उपाध्यक्ष- ज्योति देवपुरा (पूर्व सरपंच बागोर) सचिव के रूप में रिंकू सेठिया का सर्वसम्मति से निर्वाचन हुआ। बैठक में मधु सेठिया, पुष्पा सोमानी, प्रेम सेठिया रतन झवर, रेखा सेठिया, मधु सेठिया, बसन्ता सेठिया, संगीता सेठिया, आदि उपस्थित थीं।

परिचर्चा का हुआ आयोजन

कोलकाता। प्रादेशिक माहेश्वरी सभा, महिला एवं युवा संगठन के संयुक्त तत्वावधान एवं माहेश्वरी प्रोफेशनल फोरम, विधान नगर माहेश्वरी सभा तथा पूर्व कोलकाता माहेश्वरी सभा के संयुक्त आतिथ्य में गत 27 जून को दोपहर 4 बजे से महासभा सभापति श्याम सोनी की अध्यक्षता में EFFECTIVE PARENTING विषय पर एक परिचर्चा का आयोजन जूम के माध्यम से किया गया। कार्यक्रम में अन्तर्राष्ट्रीय आध्यात्मिक प्रबंधन दिशा निर्देशक एवं वक्ता रमेश परतानी, हैदराबाद ने बताया कि गर्भाधान से लेकर 16 वर्ष की उम्र के बालक तक का किस प्रकार लालन पालन किया जाय? उन्होंने बताया कि बालक के मस्तिष्क का 80प्रतिशत विकास प्रथम पांच वर्षो तक की उम्र में ही हो जाता है, बाकी बचा 20% विकास 16 वर्ष की उम्र तक हो जाता है। उसके पश्चात तो सिर्फ उसकी कार्य कुशलता की क्षमता को ही बढाया जा सकता है। परिचर्चा के प्रारम्भ में प्रदेश अध्यक्ष विनोद जाजू ने स्वागत उदबोधन दिया तथा हेमन्त मरदा, नंदकिशोर लाखोटिया तथा किशन बिनानी ने अतिथियों का परिचय प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन सीए कृष्ण मुरारी तापड़िया ने किया। महासभा कार्यसमिति सदस्य गोपाल दास दम्माणी ने आभार ज्ञापित किया। सीए भंवरलाल राठी, कैलाश काबरा, श्याम सुंदर राठी, दिनेश पेड़ीवाल, बृजमोहन मोहन मूंधड़ा, बृजकुमार बलदेवा, सुरेश कुमार झंवर, संजय लखोटिया, संपत मानधन्या, नन्द कुमार लढ़ा, आदि समाज के कई गणमान्यजन उपस्थित थे। उक्त जानकारी प्रदेश संयुक्त मंत्री राजेश नागोरी ने दी।

श्रद्धांजलि

श्री पुरूषोत्तम बाहेती

यवतमाल। निलंगा (लातुर) निवासी समाज के वरिष्ठ पुरुषोत्तम बाहेती का गत 31मई को यवतमाल में 88 वर्ष की अवस्था में आकस्मिक निधन हो गया। मृत्यु पश्चात उनकी अंतिम इच्छानुसार उनका देहदान यवतमाल मेडीकल कॉलेज को किया गया। आप अपने पीछे पत्नी शांता बाहेती, तीन पुत्रियों- सामाजिक कार्यकर्ता शोभा गट्टाणी यवतमाल, आशा राजेश पनपालिया परभनी, उषा गोयल धूत मुंबई सहित चार बहनों व दो छोटे भाईयों का भरापूरा शोकाकुल परिवार छोड़ गए हैं।

श्री गोपीकिशन मालाणी

वरंगल। माहेश्वरी समाज के वरिष्ठ सदस्य समाज सेवी श्री गोपीकिशन मालाणी का 76 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आप अपने पीछे भरा पूरा शोकाकुल परिवार छोड़ गये हैं।

श्रीमती रूख्मिनीबाई भंडारी

शिरपूर जिला धुलिया। समाज सदस्य नंदकिशोर, कमलकिशोर, गोपाल भंडारी एवं उषा बाहेती-हैदराबाद व तारा बिरला-सिंदखेडा की माता श्रीमती रूख्मिनीबाई भंडारी धर्मपत्नी स्व. श्री किसनलाल भंडारी का निधन 103 वर्ष की आयु में गत 02 जुलाई को हो गया। आप अपने पीछे भरापूरा शोकाकुल परिवार छोड़ गई हैं।

उज्जैन के सुप्रसिद्ध वास्तुशास्त्री एवं समाजसेवी श्री किशोर कुमार राठी के सुपौत्र व समाजसेवी श्री शैलेंद्र राठी के पुत्र चिरंजीव **हर्ष** का विवाह सुप्रसिद्ध दवा व्यवसायी श्री घनश्याम-लता भंडारी की सुपुत्री **प्राची** के साथ 16 जुलाई को उज्जैन मे संपन्न हुआ।

उज्जैन के सुप्रसिद्ध दवा व्यवसायी श्री दिलीप-संध्या झंवर की सुपुत्री **डॉ. मिलन** का मंगल परिणय इंदौर निवासी श्री राजीव-सरोज काबरा के चिरंजीव **डॉ. कृष्ण काबरा** के साथ 01 जुलाई 2021 को उज्जैन में संपन्न हुआ।

भोपाल के समाजसेवी गोपाल कृष्ण बाहेती एवं श्रीमती रंजना बाहेती (सचिव, पूर्वी मध्यप्रदेश माहेश्वरी महिला संगठन) के चिरंजीव **शुभम्** का मंगल परिणय दिल्ली निवासी श्री यशपालजी-वेदलताजी सूद की बेटी **अदिति** के साथ 9 जुलाई 2021 को आगरा में सम्पन्न हुआ।

पत्र संपादक के नाम

माहेश्वरी टाईम्स समाज के हृदय की धड़कन का मापक

माहेश्वरी टाईम्स का जुलाई 2021 का अंक देखा, पढ़ा। इस अंक में पृष्ठ संख्या अन्य अंकों के मुकाबले दुगनी है। कोरोना काल में देश के विभिन्न स्थानों पर सादगी के साथ महेश जयंती महोत्सव के समाचार एवं अन्य विविध गतिविधियों के समाचार चित्रों सहित प्रकाशित किए गए हैं।

माहेश्वरी टाईम्स में प्रकाशित मनोकामना का सिद्धि पर्व, गुप्त नवरात्रि, योग सिद्धि के दो सोपान यम-नियम, पृथ्वी का सबसे बड़ा श्रृंगार-पेड़, उचित खान-पान, दाम्पत्य जीवन के रिश्ते, मसालों में मिलावट, आत्ममंथन और ऐसे ही अन्य लेख न केवल ज्ञानवर्धक हैं वरन् उपयोगी भी हैं, जो पत्रिका को पढ़ने की सार्थकता को स्पष्ट करते हैं। किसी भी समाज द्वारा संचालित गतिविधियाँ चाहे वे धार्मिक, सामाजिक, शैक्षिक, खेलकूद विषयक या किसी व्यक्ति विशेष की उपलब्धियों से संबंधित क्यों न हों, उस समाज की अन्य समाजों के बीच न केवल उपस्थिति दर्ज कराती हैं, वरन् वे समाज की धड़कन होती हैं, समाज की जीवंतता का प्रमाण देती हैं।

विगत कई वर्षों से मैं देख रहा हूं कि माहेश्वरी टाईम्स समाज में चल रही गतिविधियों से समाजजनों को अवगत कराकर समाज के हृदय की धड़कन के मापन का कार्य ठीक उसी प्रकार कर रहा है जैसे स्टेथोस्कोप (STETHOSCOPE) हमारे हृदय की धड़कन के मापन का कार्य करता है। इस पुनीत सामाजिक कार्य के लिए श्री माहेश्वरी टाईम्स के संपादक को बधाई के साथ ही मेरी शुभकामनाऐं हैं।

डॉ.एच.एल. माहेश्वरी
उज्जैन

सही जन्मकुण्डली ही बता सकती है सही भविष्य
अब जन्मकुण्डली की सूक्ष्म-गणनाओं के लिए परेशान होने की जरूरत नहीं
देश के जाने-माने ज्योतिषियों एवं ख्यात विद्वतजनों द्वारा प्रमाणित सॉफ्टवेयर से निर्मित जन्मकुण्डली के लिए विश्वसनीय एवं अग्रणी नाम
ऋषिमुनि
वैदिक सॉल्युशन्स
90 विद्यानगर, खजूरवाले बाबा की दरगाह के पीछे, सांवेर रोड, उज्जैन मो. 94250-91161

वास्तु हर भवन की संरचना के शुभ अशुभ का निर्धारण करता है। इससे आवास व मंदिर आदि के साथ ही औद्योगिक क्षेत्र भी अछूता नहीं है। वर्तमान दौर में तो यह उद्योग जगत के उत्थान-पतन द्वारा देशों की अर्थव्यवस्था तक को निर्धारित करता है। कलकत्ता के डॉ. उमेश राठी एक ऐसे ही वास्तुविद् हैं, जो उद्योगों को भी वास्तु परामर्श दे रहे हैं। वैसे तो इसी क्षेत्र तक उनकी सेवाऐं सिमटी हुई नहीं है, लेकिन देश-विदेश हर जगह इस क्षेत्र विशेष में अपनी उत्कृष्ट सेवा देने के कारण उनकी पहचान ही बन गई है, औद्यौगिक वास्तुविद्।

औद्योगिक वास्तु विशेषज्ञ
डॉ. उमेश कुमार राठी

डॉ. राठी, M.D. (AM), MIIHT (Mexico) Doctor of Science (H.C.), Colombo जैसी उपलब्धियों के साथ ही वास्तुशास्त्र में पीएच.डी की उपाधि भी प्राप्त है। वास्तु के क्षेत्र में वर्षो की गहन शोध से प्राप्त ज्ञान का उनके पास अथाह सागर है जो डॉ. राठी लोगों को दे रहे हैं। चाहे वर्तमान में डॉ. राठी वास्तुशास्त्र में उच्च शिक्षा प्राप्त है, लेकिन इसकी प्रेरणा उन्हें पैतृक रूप से ही मिली। सन् 1958 में आर्वी महाराष्ट्र में जन्में डॉ. राठी को जन्म से ही धार्मिक परिवेश मिला। वास्तव में देखा जाए तो धार्मिक साहित्य में भी वास्तु के कुछ गूर अवश्य ही होते है। इसी का परिणाम है कि उच्च अध्ययन के दौरान वास्तुशास्त्र उनका मूल विषय बन गया और इसके बाद भी उनकी उच्च अध्ययन की सतत् रूप से चलती रही यात्रा। इस दौरान उन्हें स्वर्ण पदक एवं अन्य पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया। डॉ. राठी एनआरआई वेलफेयर सोसाईटी द्वारा 2012 में हिन्द रत्न 'ज्वेल ऑफ इंडिया' से सम्मानित हुऐ। वर्तमान में भी उन्हें देश-विदेश की यात्रा के दौरान जो भी कुछ नया ज्ञान मिलता है, उसे ग्रहण करने में वे देर नहीं करते।

ऊर्जा संतुलन पर केन्द्रित उनका परामर्श

डॉ.राठी की शोध यात्रा पीएच.डी पर भी थमी नहीं है, बल्कि यह सतत् रूप से चलती ही जा रही है। इसी का परिणाम है कि उन्होंने वास्तु व विभिन्न ऊर्जाओं के संतुलन तथा नकारात्मक ऊर्जा के निष्कासन के लिये ''एनर्जी बेलेन्सिंग सिस्टम'' विकसित किये हैं। इसके अतिरिक्त स्वास्थ्य समस्या के समाधान, विद्यार्थी व युवाओं में आत्मविश्वास की वृद्धि, पूजा-हवन-ध्यान, शांति व समृद्धि तथा आध्यात्मिक ज्ञान की उत्पत्ति जैसे मुद्दों को लेकर भी डॉ. राठी ने गहन शोध से '' एनर्जी बेलेन्सिंग सिस्टम'' का विकास किया है। उनके अनुसार ये ''एनर्जी बेलेन्सिंग सिस्टम'' काफी हद तक इन समस्याओं के समाधान व लक्ष्य की प्राप्ति पर खरे उतर रहे हैं।

देश की सीमा से बाहर भी सेवा

कलकत्ता के डॉ. उमेश राठी की पहचान देश ही नहीं बल्कि विदेशों तक एक प्रख्यात वास्तुविद के साथ ही नैसर्गिक शक्तियों के विशेषज्ञ के रूप में भी है। औद्योगिक जगत के वास्तुविद् के रूप में तो उनकी एक विशिष्ट पहचान है। यही कारण है कि देश तो ठीक विदेशों के कई औद्योगिक घराने भी जब कभी समस्या आती हैं, तो उनसे परामर्श लेने में नहीं चूकते। यही कारण है कि चाहे उनका निवास कलकत्ता हो लेकिन वे वहाँ आसानी से उपलब्ध नहीं होते। अक्सर उनकी सुबह कहीं होती है, तो रात कहीं और। देश के विभिन्न क्षेत्र ही नहीं। बल्कि नेपाल, सिंगापुर, इण्डोनेशिया, मलेशिया व दुबई आदि कई देशों में डॉ. राठी अपना परामर्श देकर भारतीय वास्तु शास्त्र का ध्वज फहरा चुके हैं

विशुद्ध विज्ञान है वास्तुशास्त्र

डॉ. राठी का कहना है कि वास्तुशास्त्र वास्तव में विज्ञान का ही दूसरा नाम है। भारतीय ऋषि मुनियों ने पंचों महाभूतों के संतुलन की बारीकियों को खोजकर ही इसके नियम बनाए हैं। डॉ.राठी निर्माण के वास्तु सम्मत होने पर तो जोर देते हैं साथ ही उन्होंने निर्माण संशोधनों के लिये नैसर्गिक ऊर्जा संतुलन के अपने तरीके भी विकसित किये है। इनमें किसी भी भवन या उद्योग का इन्टीरियर तो शामिल है ही, साथ ही इसमें गणपति,ऊँ व स्वास्तिक की आकृतियाँ भी शामिल हैं। उनका मानना है कि इन्हें ठीक दिशा व स्थान पर लगाऐ जाने से सुख,शांति व समृद्धि की प्राप्ति होती है। उनका मानना है कि शास्त्रोक्त विधि से किये जाने वाले यज्ञ आदि से भूमि की ऊर्जा का संतुलन होता है।

उद्योगो की ओर विशेष रूझान क्यों?

डॉ. राठी का कहना है कि पाश्चात्य प्रभाव से यदि कोई क्षेत्र सर्वाधिक रूप से प्रभावित हुआ है,तो वह औद्योगिक व कार्पोरेट कार्यालयों के भवनों का निर्माण ही है। बेशुमार फर्नीचर,डेकोरेटिव सामग्री व उटपटांग ढंग से हुए निर्माण ने इनके वास्तु को पूरी तरह विकृत कर दिया है। इनका ही परिणाम है कि ये क्षेत्र आधुनिक सुख-सुविधाओं के होते हुए भी अशांत,परेशान व उदासीन दिखते है। इसका प्रभाव इनके हजारों श्रमिकों एवं स्टॉफ कर्मचारियों पर होता है। डॉ. राठी कहते है कि इसी कारण उन्होंने इस क्षेत्र को प्राथमिकता दी। वैसे वे सभी की सुख-समृद्धि के लिये भी कार्य कर रहे हैं।

चाहे घर की सुख शांति हो या उद्योग व्यवसाय का उतार चढ़ाव ये सभी वास्तु पर आधारित हैं। यदि हमारे मकान या व्यावसायिक प्रतिष्ठान का निर्माण वास्तु अनुरूप है, तो ये सुख-समृद्धि देते हैं, अन्यथा परेशानी का कारण भी बन जाते हैं। ऐसी ही सुख समृद्धि की राह दिखा रहे हैं, रायपुर निवासी वास्तु मित्र शिवनारायण मूंधड़ा।

सुख की राह दिखाते वास्तु मित्र शिवनारायण मूंधड़ा

वास्तु के क्षेत्र में रायपुर (छ.ग.) निवासी शिवनारायण मूंधड़ा का कितना योगदान होगा, उसका अनुमान आप इसी से लगा सकते हैं कि श्री मूंधड़ा ''वास्तु मित्र'' के नाम से ही इस क्षेत्र में जाने जाते हैं। वास्तव में उन्होंने वास्तु एवं ध्यान के क्षेत्र में काफी सराहनीय कार्य किया है जिससे अनेकानेक लोगों को लाभ मिला है। श्री मूंधड़ा ने विभिन्न राज्यों में कई मंचों से वास्तु एवं ध्यान के बारे में कई विधियों के बारे में जानकारी देकर सैकड़ों लोगों को लाभान्वित किया है। श्री मूंधड़ा दीर्घ समय से अपने कार्यालय ''शिवा वास्तु'' के माध्यम से एनर्जी वास्तु कन्सल्टेंट के रूप में लोगों को वास्तु परामर्श देकर उनका जीवन संवार रहे हैं। इतना ही नहीं बी.कॉम.,एल.एल.बी. तक उच्च शिक्षित श्री मूंधड़ा की प्रखर लेखनी भी ''वास्तुमित्र'' के रूप में मार्गदर्शन प्रदान करने में पीछे नहीं है। वास्तु पर केंद्रीत उनके कई आलेखों का देश की प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन भी हो चुका है।

कोरोना में ''स्वयंप्रभा'' बनी सम्बल

श्री मूंधड़ा की बचपन से ही हनुमानजी के प्रति अगाध श्रद्धा रही है। अतः हनुमानजी के आशीर्वाद और अपनी वाकपटुता से इन्होंने अपने वर्षों के गहन अध्ययन व प्रयोगों द्वारा ध्यान की एक विधा तैयार की जिसका नाम है ''स्वयंप्रभा''। वैसे तो ध्यान की इस विधा का लाभ सैकड़ों लोगों ने इनसे प्रत्यक्ष लिया है, लेकिन वर्ष 2020 में कोविड के आगमन के पश्चात इन्होंने लोक कल्याण हेतु स्वयंप्रभा के इस कोर्स को लोगों की तत्कालीन मनोदशा के अनुसार तैयार किया एवं ऑनलाइन मंच द्वारा सैकड़ों लोगों ने विभिन्न राज्यों से इस कोर्स को किया एवं उसका लाभ लिया। लोगों को इसके द्वारा मानसिक शांति के साथ शारीरिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता भी हुई। इसमें कई ऐसी क्रियाएं हैं जिसे करने के बाद लोगों की प्रतिक्रिया रही कि मूंधड़ा जी उन्हें ध्यान की पराकाष्ठा में ले गए हैं।

जीवन जीने की कला सिखाती है ''स्वयंप्रभा''

इन्होंने ध्यान योग क्रिया का आधुनिक समय के अनुकूल एक कोर्स तैयार किया है जिसका नाम है 'स्वयंप्रभा'। इसमें ध्यान क्रिया में केवल ध्यान ही नहीं बल्कि अनेक ऐसी अदभुत क्रियाएं भी करवाते हैं जो तन-मन पर गहरा व सकारात्मक प्रभाव छोड़ती हैं। ये सभी सफल प्रयोग आपने अपने 20 वर्षों की तपस्या एवं अनुभव से तैयार किये है। वर्तमान में कोविड के समय में आपकी ऑनलाइन स्वयंप्रभा विधि द्वारा ''कैसे प्रसन्नतापूर्वक जिएं'', इसकी 9 दिवसीय कार्यशाला लगातार चल रही है। अपने सरल व प्रभावशाली वाक कला से श्री मूंधड़ा की स्वयंप्रभा क्लास को बेहतरीन रेस्पॉन्स मिल रहा है।

बिना तोड़ फोड़ वास्तु टिप्स

श्री मूंधड़ा का जन्म 28 अप्रैल 1965 को कलकत्ता शहर में हुआ। बाल्यकाल में ही रूचि पढ़ाई के साथ लेखन व साहित्य के प्रति भी रही है। कलकत्ता के अनेक प्रसिद्ध कवि, साहित्यकार एवं बुद्धिजीवियों व संस्थाओं के बीच आप अपने लेखों से वर्तमान समय की जरूरत व व्यावहारिकता पर अपने विचार साझा कर चुके हैं। एक वास्तुविद के रूप में पूरे देश भर के अनेक शहरों में उन्होंने अपने वास्तु सेमिनारों से लोगों को बिना तोड़ फोड़ किये वास्तु टिप्स दिए हैं, जिसका हजारों लोगों ने लाभ उठाया है। श्री मूंधड़ा वास्तु के साथ ज्योतिष, सुजोक, एक्यूप्रेशर, कलर थेरेपी, श्वास विज्ञान, मुद्रा विज्ञान आदि अनेक विधाओं के भी विशेषज्ञ हैं। पौराणिक कथाओं की आज के संदर्भ में उपयोगिता भी वे बहुत ही सरल व सरस तरीके से बताते हैं।

कई गतिविधियों में रहे सक्रिय

श्री मूंधड़ा ने 1990 में श्रीराम जन्मभूमि अयोध्या में कार सेवा में सैकड़ों मित्रों के साथ सक्रिय भागीदारी की। वे अमर शहीद श्री राम-शरद कोठारी के अंतिम संस्कार में भी अयोध्या में उपस्थित थे। पं. विजयशंकर मेहता के जीवन प्रबंधन समूह में सहसचिव की जिम्मेदारी का निर्वाह करते हुए अभी तक आयोजित महापाठ में अहम भूमिका निभा चुके हैं। सृजन संस्थान रायपुर को अध्यक्ष तथा माहेश्वरी एक्युप्रेशर सेंटर को सचिव के रूप में सेवा दे रहे हैं। धर्मपत्नी नीतू मूंधड़ा भी उन्हीं की तरह योग प्रशिक्षक के रूप में मानवता की सेवा कर रही है। सुपुत्र निशांत मूंधड़ा भी प्रत्यक्ष - अप्रत्यक्ष रूप से श्री मूंधड़ा के सहयोगी बने हुए हैं।

सम्प्रति : shivaheal@gmail.com

भारत ज्ञान के मामले में किसी समय भारत सम्पूर्ण विश्व का गुरू रहा है, लेकिन कालान्तर में यह स्थिति बदल गई। लेकिन यदि इन्हें पुनः प्रसारित किया जाऐ तो यह ज्ञान सम्पूर्ण विश्व में देश को फिर से वही प्रतिष्ठा दिलवा सकता है। इन्हीं भावनाओं के साथ वास्तु के क्षेत्र में अपनी अमूल्य आहुति दे रहे हैं, मुम्बई निवासी अन्तराष्ट्रीय वास्तुविद् के.सी.आर. तोषनीवाल।

वास्तु से भारत को विश्व गुरू बनाते

के.सी.आर. तोषनीवाल

वर्तमान में मुम्बई निवासी के.सी.आर. तोषनीवाल देश ही नहीं बल्कि विश्व के कई देशों के लिये प्रख्यात वास्तुविद् के रूप में एक जाना माना नाम हैं। देश का शायद ही ऐसा कोई बड़ा शहर हो जहाँ उनकी वास्तु परामर्श की सेवा नहीं ली गई हैं। तमाम व्यस्तताओं के बावजूद वे लगभग देश के 80 शहरों में अभी तक अपनी सेवा दे चुके हैं। देश की सीमाओं को लांघते हुए भी उनकी कीर्ति विदेशों तक जा पहुँच चुकी हैं। अभी तक श्री तोषनीवाल हाँगकांग, मलेशिया, अमेरिका, यूरोप, सिंगापुर, थाईलैण्ड, बर्मा, भूटान, नेपाल, कनाडा, इजिप्ट (मिस्र) आदि में भी भारतीय वास्तु शास्त्र का परचम लहरा चुके हैं। सम्पूर्ण उत्तर भारत में वास्तु शास्त्र का आलौक पहुँचाने का श्रेय श्री तोषनीवाल को ही जाता है।

कार्पोरेट वर्ग को भी दी सेवा

श्री तोषनीवाल ने वर्ष 1989 में ''वैदेही वास्तु शिल्प कन्सल्टैंसी'' की स्थापना कर वास्तु परामर्श के कार्य की शुरूआत की थीं। अभी तक पूरी दुनिया के 10 हजार से अधिक लोग उनसे वास्तु परामर्श लेकर लाभान्वित हुए हैं। उनसे परामर्श लेने वालों में वैसे तो हर वर्ग के लोग शामिल हैं, जिनमें डॉक्टर, वकील, व्यवसायी, उद्योगपति, चार्टेड अकाउण्टेंट व आर्किटेक्ट जैसे प्रोफेशनल भी बड़ी संख्या में शामिल हैं। उनके परामर्श ने सभी के जीवन में आमूलचूल परिवर्तन किया है। उनसे वास्तु परामर्श लेने वालों में कार्पोरेट वर्ग का विशेष रूझान हैं इनमें जयपुर के ओ.के.प्लस ग्रुप के ओमप्रकाश मोदी, कंट्रीइन के मुकुंद गोयल, मिस इंडिया के गोविन्द लश्करी, प्रमोद डेरेवाल, मंगलम बिल्डर्स, मुम्बई के मेकर बिल्डर्स, मौर्या बिल्डर्स, सज्जानंद बिल्डर्स, ट्रांसकोन बिल्डर्स, गोवा गुटखा, दिल्ली से राजदरबार गुटखा, बम्बई से नरीमन पाईंट के सबसे बड़े स्टेट ब्रोकर चिमनलाल एस.ठक्कर व गुड़गाँव के स्पेज बिल्डर्स आदि शामिल हैं। बिल्डर्स अपनी नव विकसित कॉलोनियों की ओर ग्राहकों का रूझान बढ़ाने के लिये अपने विज्ञापनों में वास्तु परामर्शक के रूप में विशेष रूप से श्री तोषनीवाल का नाम उल्लेख करते हैं।

सेवाओं से मिला सम्मान

अनेक शहरों में वास्तु शास्त्र पर आपके सेमिनार व लेक्चर्स हो चुके हैं। आपको इस क्षेत्र में किए गए उल्लेखनीय कार्यो के कारण देश भर में अनेक बार सम्मानित भी किया जा चुका है। गोवा के आध्यात्मिक राजगुरू कुलम द्वारा वास्तुभूषण सम्मान तथा भारत विकास परिषद भीलवाड़ा, रोटरी क्लब ऑफ देहली कैपिटल, रोटरी क्लब जयपुर पिंकसिटी, रोटरी क्लब उदयपुर, रोटरी क्लब मुंबई, लांयस क्लब मुंबई योगी नगर, माहेश्वरी समाज इंदौर, माहेश्वरी प्रोफेशनल फोरम इंदौर, माहेश्वरी युवा संगठन नीमच, विदर्भ चैम्बर ऑफ कामर्स नागपुर, समर्थ नगर लोखंडवाला कॉम्पलैक्स रेजिडेन्स एसोसिएशन आदि द्वारा विभिन्न सम्मानों द्वारा आपको नवाजा जा चुका है।

ऐसे मिली नयी प्रेरणा

वर्तमान में वास्तु के वैज्ञानिक स्वरूप को पूरी दुनिया में जन-जन तक पहुँचा देने वाले के.सी.आर. तोषनीवाल को वास्तु का ज्ञान अपने परिवार से विरासत में नहीं मिला। श्री तोषनीवाल का जन्म 1 जून 1958 को मध्यप्रदेश के नीमच जिले में मनासा कस्बे में हुआ। उनका ननिहाल चित्तौड़गढ़ राजस्थान था जहाँ उन्होंने जन्म लिया। न तो माता-पिता व उनके परिजनों का और न ही नाना पक्ष का ही दूर-दूर तक वास्तु-ज्योतिष जैसे विषयों से कोई लेना-देना था। श्री तोषनीवाल हायर अकाउण्टेंसी में एम.कॉम करने के बाद कपड़ा व्यवसाय से सम्बद्ध हो गये। इसी सिलसिले में एक दुकान पर हैदराबाद में उनकी भेंट एक बाबा से हुई। वह बाबा वास्तु के विद्वान थे और दुकानदार को आवश्यक परामर्श दे रहे थें। श्री तोषनीवाल बाबा के वास्तु ज्ञान से बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने उनके सामने वास्तु शास्त्र सीखने की अपनी जिज्ञासा व्यक्त कर दी। बाबा ने भी ऐसी विशिष्ट पुस्तकों के नाम उन्हें बताऐं जो वास्तु की गागर में सागर थीं।

पुस्तकों को बनाया अपना गुरू

श्री तोषनीवाल ने वास्तु का ज्ञान प्राप्त करने की अपनी जिज्ञासा के चलते पुस्तकों को ही अपना गुरू बना लिया। सर्वप्रथम तो उन्होंने वे पुस्तकें खरीदीं जिनकी सलाह बाबा ने दी थी और इनका अध्ययन करते चले गये। अब वे व्यावसायिक कारणों से जहाँ भी जाते वहाँ से वास्तु से सम्बंधित जो भी ग्रंथ या पुस्तक उन्हें मिली खरीद लाते। इनसे उनका वास्तु ज्ञान तेजी से बढ़ता ही चला गया और उनका अभियान जन-जन तक वास्तु शास्त्र को पहुँचाना बन गया। आज यदि सम्पूर्ण उत्तर भारत में वास्तु के प्रति विशेष चेतना है तो इसका श्रेय श्री तोषनीवाल को ही है। उनके परामर्श केन्द्र ''वैदेही वास्तु शिल्प कन्सेल्टेंसी पर वास्तु शास्त्र की एक विशाल लायब्रेरी है,जिसमें राजवल्लभ सहित लगभग 1000 पुस्तकें संग्रहित हैं। सम्भवतः यह वास्तु शास्त्र की देश और दुनिया की सबसे बड़ी लायब्रेरी है।

भाग्य की तरह वास्तु भी महत्वपूर्ण

वास्तु के संबंध में आपका कहना है कि वास्तु नकारात्मकता को कम करता है तथा सकारात्मकता को बढ़ाता है,साथ ही वास्तु, कर्म के परिणामों को सफलता में बदलने का माध्यम है। जीवन में जितना भाग्य महत्वपूर्ण है उतना ही वास्तु भी महत्व रखता है। अच्छी ग्रह दशा होने पर भी वास्तु की गड़बड़ी पूर्ण सफलता से वंचित कर देती है। आपका यह कहना है कि वास्तु शिल्प एक विज्ञान है जिसका सर्वप्रथम प्रयोग भारत में ही हुआ। प्राचीन समय के बड़े-बड़े ऐतिहासिक भवन व किले आज भी सुरक्षित हैं, क्योकि इनका निर्माण वास्तु के अनुसार हुआ था। आज वास्तु का उपयोग भारत से अधिक विदेशों में हो रहा है। वास्तु के कारण ऊँचाईयों पर पहुँचे तोषनीवाल कहते हैं कि भाग्य व वास्तु के साथ उनकी सफलता में उनकी पत्नी श्रीमती सरोज तोषनीवाल, पुत्री निमिषा व ख्याति एवं पुत्र वैभव के सहयोग व माता-पिता के आशीर्वाद का भी महत्वपूर्ण योगदान है। श्री तोषनीवाल वास्तुशास्त्र का महत्व समझाते हुए कहते हैं कि वास्तुशास्त्र की जानकारियां अर्थवेद, यजुर्वेद, भविष्य पुराण, मत्स्य पुराण, वायु पुराण, गर्ग संहिता, नारद संहिता आदि में भरी पड़ी हैं।

वास्तु शास्त्र वास्तव में अपने गुण दोषों के कारण होने वाले नकारात्मक व सकारात्मक ऊर्जा परिवर्तन के कारण व प्रभावों का विश्लेषण करता है। इसके अनुसार नकारात्मक ऊर्जा नकारात्मक प्रभाव उत्पन्न करती है। ऐसी ही नकारात्मकता की खोज कर सकारात्मकता की ओर ले जा रहे हैं, उज्जैन के वास्तुविद किशोर कुमार राठी।

नकारात्मकता से सकारात्मकता की ओर ले जाते किशोर कुमार राठी

उम्र के उत्तरार्द्ध में चल रहे उज्जैन निवासी वरिष्ठ वास्तुविद् किशोर कुमार राठी एक ऐसे वास्तुविद् हैं, जो अपनी चिरपरिचित पहचान डाऊजिंग व कॉपर रॉड द्वारा लंबे समय से वास्तु के क्षेत्र में अपनी सेवा दे रहे हैं। अब जब शरीर भी ठीक से साथ नहीं देता ऐसे में भी यदि कोई उनसे परामर्श चाहता है तो वे देने में पीछे नहीं रहते। यदि इच्छुक व्यक्ति उन्हें ले जाने में समर्थ है, तब तो ठीक अन्यथा वे उसके द्वारा लाये गये भवन के नक्शे से भी अपनी विशिष्ट डाऊजिंग विद्या से नकारात्मक ऊर्जा वाले स्थानों की पहचान कर उसे उचित परामर्श प्रदान कर ही देते हैं। अभी तक अनगिनत लोग उनके मार्गदर्शन से लाभान्वित हो चुके हैं।

भूमिगत जल का भी परीक्षण

वर्तमान में पग-पग पानी वाली कहावत वाला मालवांचल भी गत कई वर्षो से भूजल स्तर गिरने की विकट समस्या से जुझ रहा है। इसी का नतीजा है कि सैकड़ों फीट गहरे बोरिंग करने के बाद भी अक्सर पानी नहीं निकलता। ऐसी स्थिति में वास्तुविद् किशोर कुमार राठी इस क्षेत्र के लिये एक आशा की किरण बनकर सामने आये हैं। उनके बताऐ गये स्थानों पर लगे सैकड़ों हैन्डपंप, कुऐ, ट्यूबवेल आदि भरपूर पानी दे रहे हैं। यह सब कुछ उनकी इसी विद्या का परिणाम ही है। इसका नतीजा यह है कि शहरी हों या ग्रामीण जब भी बोरिंग करवाने की बारी आती हैं, तो वे विशेष रूप से श्री राठी को ही याद करते हैं। उनके भूमिगत जल के परीक्षण की विशेषता यह है कि वे अपने डाऊजिंग द्वारा भूमि के अन्दर जल की मात्रा, जल प्राप्ति की गहराई के साथ ही प्राप्त होने वाला जल मीठा होगा या खारा इसकी जानकारी भी प्रदान कर देते हैं।

पंचतत्वों के संतुलन का सब खेल

श्री राठी अपनी डाऊजिंग पद्धति द्वारा भूमि के किसी भी स्थान की सकारात्मकता या नकारात्मकता का परीक्षण कर लेते हैं। श्री राठी के अनुसार यदि डाऊजर किसी स्थान पर एंटीक्लॉकवाइज घुमे तो वहाँ नकारात्मकता तथा क्लॉकवाईज घुमे तो सकारात्मकता है। हर व्यक्ति की अपनी निर्धारित शुभ दिशा है, जिस दिशा का मकान उसके लिये शुभ होता है। भवन के अंदर पाये जाने वाले नकारात्मक स्थानों को सकारात्मक बनाने के लिये वैसे तो मार्केट में कई वास्तु उपकरण मौजूद हैं, लेकिन श्री राठी इन सबकी तुलना में दर्पण को सबसे अधिक प्रभावशाली मानते हैं। उनके अनुसार दर्पण में तरंगों की प्रकृति को बदलने की अद्भुत शक्ति है। वास्तव में यह सकारात्मकता और नकारात्मकता पंच तत्वों के संतुलन व असंतुलन का ही परिणाम है।

▶ संपर्क : 89897-72468

ज्योतिष व वास्तु के क्षेत्र जयपुर निवासी प्रशांत मालपाणी की पहचान एक ऐसे नक्षत्र के रूप में है, जो इस विधा के क्षितिज को जगमगा रहे हैं। श्री मालपाणी ज्योतिष व वास्तु के ऐसे विद्वान हैं, जिन्होंने ''पाराशर लाईट'' तथा ''वैदिक वास्तु'' जैसे महत्वपूर्ण साफ्टवेयरों की सौगात देकर इस वैदिक विधा को डिजिटल दुनिया में सशक्त रूप से प्रवेश दे दिया।

डिजीटल दुनिया के ज्योतिर्विद

प्रशांत मालपाणी

वर्तमान में ज्योतिष के क्षेत्र में 'पाराशर लाइट' एक विश्व विख्यात सॉफ्टवेयर है एवं विश्व के 120 से अधिक देशों में ज्योतिषी इसका प्रयोग करते हैं। 'पाराशर लाइट' आज आठ भारतीय भाषाओं में उपलब्ध है एवं 2 अन्य भाषाओं में शीघ्र ही उपलब्ध होगा। इसी प्रकार वास्तु के क्षेत्र में साफ्टवेयर ''वैदिक वास्तु'' भी वास्तुविदों को इस तकनीकी युग की सौगात है। आपको यह जानकर गर्व होगा कि इन साफ्टवेयरों का निर्माण कर इस वैदिक ज्ञान के लिये डिजिटल दुनिया के द्वार खोलने वाले भी माहेश्वरी परिवार से ही हैं, जयपुर के सुपुत्र प्रशांत मालपाणी। इतना ही नहीं इनके साथ ही उनके ज्योतिष वास्तु के क्षेत्र में और भी कई साफ्टवेयर हैं, जो इस क्षेत्र के ज्योतिर्विदों तथा वास्तुविदों के लिये उनके व्यवसाय को आसान बना रहे हैं।

पारम्परिक परिवार में लिया जन्म

श्री मालपाणी का जन्म ग्राम हरमाड़ा, जिला जयपुर में स्व. श्री चेनसुखजी-सरस्वती देवी मालपाणी के पौत्र तथा श्री अमरचंद व लक्ष्मी देवी मालपाणी के सुपुत्र के रूप में मई, 1978 में हुआ। परिवार में मीनाक्षी माहेश्वरी का बड़ी बहन व मयूरी सोमानी का छोटी बहन के रूप में स्नेह प्राप्त हुआ। श्री मालपाणी सन् 2005 में मेरठ के श्री हरिओम-मंजू माहेश्वरी की सुपुत्री शोभना के साथ परिणय सूत्र में बंध गये। वर्तमान में पुत्र प्रणय एवं बेटी हिया उनके छोटे से परिवार में शामिल हैं। बचपन से ही परिवार में परम्परागत संस्कारित माहौल मिला जिसने स्वतः ही ज्योतिष के प्रति श्रद्धा उत्पन्न कर दी।

ऐसे चली 'ज्योतिष-वास्तु' यात्रा

प्रारंभिक शिक्षा के पश्चात आपने कंप्यूटर साइंस में विशेष शिक्षा प्राप्त की। आप प्रारंभ से ही कुशाग्र बुद्धि के धनी एवं मेधावी छात्र रहे। आपकी शुरू से वैदिक विद्याओं में गहन रूचि थी। कॉलेज के प्रथम वर्ष की शिक्षा के दौरान आपकी मुलाकात अमेरिका निवासी श्री मिखिल से हुई, जो उस वक्त एक भारतीय ज्योतिष के सॉफ्टवेयर पर कार्य कर रहे थे। दोनों की प्रथम मुलाकात पर ही दोनों ने साथ कार्य करने का निश्चय किया। इसी कड़ी में आपने एक कंपनी की स्थापना की और तत्पश्चात ज्योतिष के उस सॉफ्टवेयर पर पूरी लगन एवं मेहनत के साथ कई वर्ष तक अनवरत कार्य किया। कंपनी की स्थापना के बाद आपने फॉर्मल शिक्षा, ज्योतिषीय अध्ययन एवं प्रोफेशनल कार्य साथ - साथ किया। वर्ष 1996 में शुरू किया गया ज्योतिषीय सॉफ्टवेयर आज सम्पूर्ण ज्योतिषीय जगत में 'पाराशर लाइट' के नाम से विख्यात है।

भारतीय ज्ञान का परचम लहराना था लक्ष्य

पाराशर लाइट सॉफ्टवेयर के पीछे आपकी वैदिक ज्योतिष के सम्पूर्ण विश्व में प्रसार एवं स्थापना की प्रबल इच्छा थी, जो कई वर्षो के अथक प्रयासों से अब साकार हो रही है। विश्व के अनेक छोटे देशों तक में वैदिक ज्योतिष अब प्रचलन में है। अपनी सुगठित टीम के साथ आपने ज्योतिष के कई अन्य विशिष्ठ सॉफ्टवेयर भी बनाये। सन 2008 में आपकी वास्तु में भी गहन रूचि जाग्रत हुई और दो वर्ष के अध्ययन के बाद आपने 2010 में वास्तु के क्षेत्र में सर्वप्रथम 'वैदिक वास्तु' नाम से एक सॉफ्टवेयर बनाया। कई वर्षों के शोध एवं अध्ययन के पश्चात जनमानस को उपयुक्त ज्योतिषीय समाधानों की उपलब्धता सुनिश्चित करने हेतु आपने 'अर्कम' नाम से एक प्रोडक्ट ब्रांड की स्थापना की। इसके तहत आप परिशुद्ध यंत्रो की सम्पूर्ण श्रृंखला, रुद्राक्ष, रत्न, माला एवं पूजा की सामग्री उपलब्ध करवा रहे हैं।

वर्तमान दौर में जब पाश्चात्यकरण का प्रभाव तथा ज्योतिष - वास्तु के क्षेत्र में ठगों का बढ़ता प्रभाव इस पुरातन विज्ञान को अंधविश्वास नाम दिलवाने में लगा है, ऐसे में जयसिंगपुर जिला - कोल्हापूर (महाराष्ट्र) निवासी अनुसूया मालू गहन अध्ययन के बाद इस गूढ़ ज्ञान से शास्त्र सम्मत परामर्श देकर इस भारतीय गौरव को पुन: प्रतिष्ठित करने में लगी हैं। 45 वर्ष की अवस्था में प्रारम्भ उनकी यह यात्रा आज पौत्र-पौत्रियों के साथ भी सतत जारी है।

खुशियों की राह दिखाती ज्योतिर्विद अनुसूया मालू

जयसिंगपुर जिला - कोल्हापूर (महाराष्ट्र) निवासी संजय मालू की धर्मपत्नी ज्योतिर्विद, वास्तुविद् व हस्तरेखा विशेषज्ञ अनुसूया मालू की पहचान सिर्फ स्थानीय स्तर पर ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण महाराष्ट्र में एक ऐसी ज्योतिष व वास्तुविद् के रूप में है, जो इस क्षेत्र में अपने गहन अध्ययन से विश्वास का दूसरा नाम बन गई हैं। उनके प्रति विश्वास का अनुमान इसी से लगा सकते हैं कि उनका प्रधान कार्यालय तो जयसिंगपुर जिला - कोल्हापूर में कार्यरत है ही, इसके साथ इचलकरंजी, सांगली, कोल्हापुर व पुणे में भी उनके परामर्श कार्यालय 'महालक्ष्मी ज्योतिष' सफलतापूर्वक कार्यरत हैं। अपने इन सभी कार्यालयों द्वारा उन्होंने अपने इस परामर्श को 'कार्पोरेट लूक' तो दिया है, लेकिन अपनी इस सेवा को विशुद्ध व्यवसाय कभी नहीं बनने दिया। यही कारण है कि उनके प्रयासों से इस व्यवसाय की गरिमा बढ़ी ही है।

45 वर्ष की अवस्था में शुरूआत

ज्योतिष में भास्कराचार्य जैसी उच्च उपाधि प्राप्त स्व.श्री मिठ्ठलालजी दाड के यहाँ जालना में जन्मीं श्रीमती मालू की इस गूढ़ ज्ञान की ओर बढ़ने की यात्रा अत्यंत रोचक है। श्रीमती मालू को बचपन से पढ़ाई का शोक था लेकिन जल्दी विवाह होने के कारण पढ़ाई पूरी नहीं कर सकी। फिर पारिवारिक जिम्मेदारियों में ऐसी व्यस्त हुई कि कुछ करने का अवसर ही नहीं मिला। लेकिन उनके अन्तर्मन में उच्च शिक्षा ग्रहण करने की कसक बराबर बनी हुई थी। इसी के चलते आखिरकार 45 साल की उम्र मे पढ़ाई पुनः पढ़ाई शुरू की और अपना ग्रेजुएशन कंप्लीट किया। इसके बाद जीवन ने नया मोड़ लिया। उनकी रूचि ज्योतिष - वास्तु आदि के क्षेत्र में थी। अतः ज्योतिष शास्त्र में आचार्य तक अध्ययन किया। भास्करचार्य की पढ़ाई कोल्हापुर जिला नृसिंहवाडी क्षेत्र अंतर्गत में रहने वाले श्री अवधूतजी जेरे गुरु जी ने करवाई।

गुरू ने भी हौंसले को सराहा

श्रीमती मालू बताती हैं कि गुरुजी को शंका थी, मैं एक माहेश्वरी नारी भास्कराचार्य नहीं बन पाऊंगी। पर मेरी कठोर मेहनत और समर्पित लगन को देखकर वे भी हतप्रद रह गये। मैं अव्वल नंबर सें पास होकर अपनी लगन से पढ़ाई पूरी करती हुई आगे बढ़ती ही रही। 8 साल की पूरी पढ़ाई की और आचार्य तथा भास्करचार्य पद लेने के बाद 'आर्ट ऑफ लिविंग' बैंगलोर आश्रम में मंत्र शास्त्र दीक्षा लेते हुए, ध्यान, प्राणायाम एवं ब्लेसिंग कोर्स को पूरा किया। वर्तमान में वैदिक धर्म संस्था से जुड़कर कार्यरत हुँ। सामाजिक कार्य में महाराष्ट्र प्रदेश की अध्यक्ष हूं। मैंने वास्तुविशारद की उपाधि भी प्राप्त की और हस्तरेखा में भी विशेषज्ञता प्राप्त की। वर्तमान में उनका परिवार पुत्री निकिता, पुत्र निकेत, सहित दोहित्र तथा पोत्र-पोत्री आदि से भरापूरा है लेकिन फिर भी इनकी यह सेवायात्रा सतत जारी है।

आंखें हैं ज्योतिष वास्तु शास्त्र

श्रीमती मालू ज्योतिष शास्त्र और वास्तु शास्त्र को कतिपय प्रबुद्धों द्वारा अंधविश्वास कहे जाने पर नाराज हो जाती हैं। उनका कहना है कि मत्यपुराण में ब्रम्हदेव ने ज्योतिष और वास्तु का ज्ञान दिया है, तो वहीं विश्वकर्मा प्रकाश में वास्तु का ज्ञान स्वयं भगवान शिव ने दिया है। ज्योतिष व वास्तु दोनों ही आंखों की तरह है। दोनों ही महत्वपूर्ण व दिशादर्शक हैं तथा शुभ और अशुभ संकेत देते हैं। जैसे ज्योतिष में शुभ ग्रह और पाप ग्रह होते हैं वैसे वास्तु में भी शुभ ग्रह का स्थान और पाप ग्रहों का स्थान होता है। जैसे वायव्य से लेकर अग्नि में कोण शुभ ग्रह वास करते हैं और अग्निकोण से लेकर दक्षिण नैऋत्य कोण पश्चिम तक सारे पाप ग्रह वास करते हैं । दिशा के अधिपति के कारण कभी सत बढ़ता है तो कभी रज बढ़ता है। एक और चंद्रमा, बुध, गुरु, सूर्य, शुक्र है तो दूसरी और मंगल, राहु, शनि जैसे पाप ग्रह देव और दानव के बीच जैसी भावना बुद्धि व अहंकार को जागृत कर देते हें। कुशल बुद्धिमान वास्तु शास्त्रज्ञ को तुरंत पता चल जाता है कि भवन में किस की उर्जा कार्यरत है। जिस तरह डॉक्टर रिपोर्ट देखकर जान लेता है कि यह क्या बीमारी है? उसी तरह भवन को देखकर वास्तु शास्त्र भी समझ जाता है।

वैसे तो हैदराबाद निवासी डॉ. पुरुषोत्तम बिदादा सिद्ध हस्त आयुर्वेदिक चिकित्सक हैं, लेकिन उनकी पहचान इससे भी आगे बढ़कर ''नाड़ी व हस्तरेखा विज्ञान'' से रोग के निदान की उनकी विशिष्ट शैली के कारण है। डॉ. बिदादा ने ज्योतिष की हस्तरेखा जैसी विद्या का उपयोग निरामय जीवन की राह बताने के लिये किया है।

हस्तरेखा से आरोग्य की राह

डॉ. पुरुषोत्तम बिदादा

हैदराबाद में डॉ. पुरूषोत्तम बिदादा की विशिष्ट पहचान है। वैसे तो वे बी.ए.एम.एस. उपाधिधारी आयुर्वेदिक चिकित्सक हैं, और उन्होंने इस क्षेत्र द्वारा जनहित में कई चिकित्सा शिविरों का आयोजन कर मानवता की सेवा की है। इसके बावजूद मानव को स्वस्थ जीवन देने की उनकी चाह पूरी नहीं हुई और यही चाह उन्हें हस्तरेखा विज्ञान की ओर ले गई। डॉ. बिदादा की नाड़ी विज्ञान व हस्तरेखा विज्ञान के क्षेत्र में ऐसी कई विस्मयकारी शोध हैं, जो मानव को स्वस्थ जीवन देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। वर्तमान में वे 'आरोग्य निकेतन' नाम से हैदराबाद के गोशामहल व हिमागतनगर क्षेत्र में दो आयुर्वेदिक चिकित्सालय का संचालन कर रहे हैं।

आयुर्वेद के साथ ज्योतिष की शिक्षा

डॉ. बिदादा का जन्म 9 मई 1962 को हैदराबाद में हुआ। बचपन से ही डॉ. वेणूगोपाल व्यास का प्रभाव रहा। जिसके चलते हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद से 'हिन्दी विद्वान' की उपाधि पूर्ण की। नानकराम साइन्स कॉलेज से बी.एससी. वर्ष 1983 में किया व डॉ. बीआरसीआर आयुर्वेद महाविद्यालय, हैदराबाद से बीएएमएस वर्ष1987 में किया। बनारस में 'गुरू शिष्य परम्परा' के तहत नाडी विज्ञान में कुशलता हासिल की। वर्ष 2005 में पोट्टी श्रीरामुलु तेलुगु विश्वविद्यालय से ज्योतिष विज्ञान में स्नातकोत्तर उपाधि हासिल की। बचपन से ही अनेक सांस्कृतिक गतिविधियों में हिस्सेदारी की। ज्ञानवर्धक संघ की स्थापना से अभी तक जुड़े हैं।

नाड़ी विज्ञान व हस्तरेखा का किया समन्वय

आंध्रप्रदेश आयुर्वेद सम्मेलन के मंत्री के रूप में वृहद हैदराबाद आयुर्वेद सम्मेलन के मंत्री व उपाध्यक्ष अखिल भारतीय आयुर्वेद महासम्मेलन, नईदिल्ली के प्रचार मंत्री तथा इसी सम्मेलन की कार्यकारिणी सदस्य के रूप में अपनी सेवाएँ दे चुके हैं। राजस्थानी स्नातक संघ की पत्रिका 'राजस्थानी स्नातक' का संपादन भी किया है। अब तक तेलंगाना व आंध्र प्रदेश के लगभग 12 जिलों में 300 से अधिक निःशुल्क आयुर्वेद शिविरों का जनहित में संचालन किया है। उनके आयुर्वेद व चिकित्सा हस्तरेखा विज्ञान पर कई लेख प्रकाशित हुए हैं। गत 15 वर्षों से निरंतर हैदराबाद से प्रकाशित होने वाले हिन्दी दैनिक 'स्वतंत्र वार्ता' में हर मंगलवार आयुर्वेद व स्वास्थ्य संबंधी विषयों पर जनता द्वारा पूछे गए प्रश्नों का 'आयुर्वेदिक स्वास्थ्य प्रश्नोत्तरी' में उत्तर देते रहे हैं। केंद्र व राज्य सरकार तथा विभिन्न संगठनों में स्वास्थ्य व हस्तरेखाओं पर व्याख्यान दिए हैं। उन्होंने रोग निदान का एक नया तरीका 'नाड़ी विज्ञान व हस्तरेखा विज्ञान' के समन्वय से खोजा है।

ऋषिमुनि प्रकाशन

की नवीन सौगात

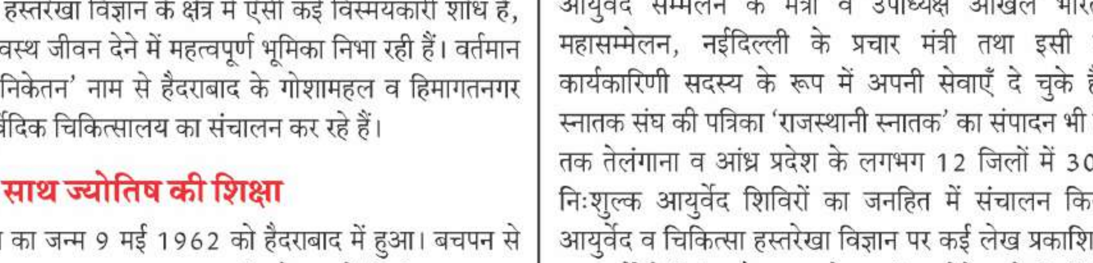

ऋषिमुनि प्रकाशन द्वारा प्रकाशित अपनी मन पसंद कोई भी पुस्तक आप घर बैठे भी प्राप्त कर सकते हैं।

श्री माहेश्वरी टाईम्स के **पाठकों** को इनके मूल्य पर **विशेष छूट** प्रदान की जाएगी।

अधिक जानकारी के लिये ऋषिमुनि प्रकाशन के कार्यालय पर संपर्क किया जा सकता है।

सम्पर्क- 90, **विद्या नगर, सांवेर रोड, उज्जैन (म.प्र.) मोबाइल :** 094250-91161, **E-mail : rishimuniprakashan@gmail.com**

जुनून हो तो क्या नहीं किया जा सकता, यह सिद्ध करके दिखा रही हैं, कोलकाता निवासी भावना बाहेती। समाज के एक सामान्य मध्यमवर्गीय परिवार में जन्म लेने के बावजूद उन्होनें परम्परागत शिक्षा से अलग हटकर ज्योतिष प्रवीण, ज्योतिष विशारद, ज्योतिष शिरोमणि, वास्तु रत्न आदि उपाधि ग्रहण की और अब ज्योतिष - वास्तुविद् के रूप में परामर्श दे रही हैं। आईये जानें उनसे उनकी कहानी उन्हीं की जुबानी....

फिल्मी हस्तियों को ज्योतिष परामर्श देतीं

भावना बाहेती

मैं भावना बाहेती कोलकत्ता निवासी हूँ। मेरा जन्म 13 फरवरी 1982 को कोटा शहर में एक मध्यमवर्गीय परिवार में सत्यनारायण मोहता तथा प्रभा मोहता के यहाँ हुआ। परंतु बचपन से शादी तक में फरीदाबाद (हरियाणा) में रही। वहीं मेरी शिक्षा भी हुई। वर्तमान में मेरे पिताजी सत्यनारायण मोहता व माताजी प्रभा मोहता सिंगापुर में ही रह रहे हैं। मेरा भाई महेश मोहता 'एक्सेंचर' नामक कम्पनी में सिंगापुर ही कार्यरत है। भाभी मंजू मोहता सिंगापुर में ही डॉक्टरी की प्रेक्टिस कर रही है। परिवार पारम्परिक के साथ ही अत्यंत धार्मिक प्रकृति का था। अतः बचपन से कब और कैसे ज्योतिष-वास्तु के प्रति रूझान पैदा हो गया, पता ही नहीं चला।

ऐसे बढ़े ज्योतिष - वास्तु की ओर कदम

मैंने अपनी बी.कॉम दिल्ली युनिवर्सिटी से पूर्ण की और साथ में कम्प्यूटर की शिक्षा ली। परंतु शायद इस डिग्री से मैं संतुष्ट नहीं थी। ऐसे में अपनी माता के सहयोग से मैने ज्योतिष सीखने का निर्णय लिया। इंडियन काऊंसिल ऑफ एस्ट्रोलोजिकल साईंस से मैंने ज्योतिष प्रवीण व ज्योतिष विशारद की दो साल की डिग्री प्राप्त की। ज्योतिष में मेरी रूचि को देखते हुए पिताजी ने आगे पढ़ने की सलाह दी। इन्टरनेशनल स्कूल ऑफ एस्ट्रोलॉजी से मैने ज्योतिष शिरोमणि की शिक्षा ली। गुरूजन ने मेरी योग्यता देखकर मुझे अपने ही इंस्टीट्यूट में फैकल्टी के पद पर नियुक्त किया। साथ-साथ मैंने ज्योतिष से जुड़े एआईएफएएस से कई क्रैश कोर्स और वर्कशॉप करके भी ज्ञान अर्जित किया। तीन साल की ज्योतिष शिक्षा के बाद मैंने अपनी प्रैक्टिस प्रारम्भ कर दी।

ससुराल भी बना सहयोगी

एक साल की शिक्षा प्राप्ति के बाद सन् 2005 में शादी हो गई। शुरूआती दो तीन साल मैंने अपने परिवार को ही देना उचित समझा। मेरे परिवार में ससुरजी स्व. गोवर्धनदास बाहेती एवं सासूजी शारदा बाहेती तथा जेठजी शिव बाहेती है जिन्होंने कभी पिता की कमी महसूस नहीं होने दी व जेठानी मितू बाहेती ने बहन की कमी पूरी की। परिवार के साथ-साथ मुझे अपने ज्योतिष ज्ञान को भी आगे बढ़ाना था। अतः मेरे पति अरूण बाहेती ने मेरी ज्योतिष के प्रति रूचि देखकर, ज्योतिष को प्राथमिकता देकर इस क्षेत्र में आगे कदम बढ़ाने की सलाह दी। मुझे ''इंडियन जैम्स एंड ज्वेलर्स'' में ज्योतिष विशेषज्ञ तक का पद सम्भालने का भी मौका मिला।

फिल्मी हस्तियाँ भी बनीं, उनकी मुरीद

मैंने 19 साल की ज्योतिषीय यात्रा में हजारों कुण्डलियों का सफलतापूर्वक विवेचन किया। वहीं मैंने गोविन्दा, रजा मुराद जैसी बड़ी फिल्मी हस्तियों का कुण्डली विश्लेषण भी किया। इस ज्योतिष परामर्श के साथ ज्ञान प्राप्ति का सिलसिला भी सतत चलता रहा। मैंने एआईएफएएस से वास्तु रत्न की उपाधि भी प्राप्त कर ली। मेरी सासू मां का हर पथ पर पूर्ण सहयोग रहा। हाल ही में मैंने अंक ज्योतिष की भी एडवांस डिग्री प्राप्त कर ली है। कोरोना महामारी के कारण अभी मैं घर में ही हूँ लेकिन मेरा सेवा अभियान थमा नहीं है, मैं घर से ही कार्यरत हूँ। ईश्वर की अनुकम्पा से मुझे इस अनमोल ज्ञान की प्राप्ति हुई। मैं उन सभी लोगों की आभारी हूँ जिन्होंने इस यात्रा में मेरा सहयोग दिया।

वैसे तो भारतीय वास्तु शास्त्र अपने आप में एक ऐसा गूढ़ व परिष्कृत शास्त्र है, जो हमारे जीवन को सुखी बनाने के लिये पर्याप्त है। इसी ज्ञान को आधुनिक ऊर्जा विज्ञान तथा विभिन्न यंत्रों द्वारा सरल सहज बनाकर आधुनिक भवनों का भी अत्यंत सटिक वास्तु परीक्षण कर रहे हैं, इंदौर निवासी वास्तुविद अनिल मोहता।

ऊर्जा विज्ञान से वास्तु परामर्श देते अनिल मोहता

अनिल मोहता वैदिक वास्तु के क्षेत्र में एक ऐसा प्रतिष्ठित नाम है, जो किसी अन्य परिचय का मोहताज नहीं हैं। वास्तु में भवन निर्माण से संबंधित शास्त्रोक्त ज्ञान के साथ ही वे ज्योतिष आधारित वास्तु, अंक ज्योतिष, शगुन शास्त्र, रंग विज्ञान, एनर्जी साइंस, बायो एनर्जी, बॉडी स्कैन, ओरा यंत्र विज्ञान, मिनरल मंत्र व आध्यात्मिक ज्ञान के आधार पर वास्तु परामर्श भी प्रदान करते हैं। भवन व भूमि को ऊर्जावान बनाने के लिए प्राचीन वास्तु शास्त्रों, आधुनिक एनर्जी साइंस तथा आधुनिक यंत्रों का बेहतर समन्वय करके निर्मित भवन अथवा नए बननेवाले भवनों को ऊर्जावान बनाने में जुटे हैं।

व्यावसायी परिवार में लिया जन्म

श्री मोहता का जन्म प्रसिद्ध कपड़ा व्यवसायी श्री ब्रजबल्लभ दास व श्रीमती मीना देवी मोहता के द्वितीय पुत्र के रूप में हुआ था। इंदौर में वैष्णव कॉलेज से ग्रेजुएशन करने के बाद 1985 में आपका विवाह प्रतिष्ठित समाजसेवी श्री बालकृष्ण-तुलसी देवी राठी की सुपुत्री ज्योति के साथ हो गया। वास्तु के क्षेत्र में अपने रूझान के कारण श्री मोहता व्यवसायी परिवार में जन्म लेने के बावजूद वर्ष 1996 से वास्तु सलाहकार के रूप में कार्यरत हैं। श्री मोहता ने वर्ष 2000 से 2006 तक सन्त शिरोमणि रामसुखदासजी के शिष्य राजेंद्र मांकड़ के साथ ही प्रभात पोद्दार अरविंदो आश्रम पांडिचेरी, बीएन रेड्डी हैदराबाद, डीडी शर्मा मुंबई से भी वास्तु के गूढ़ रहस्यों को जाना।

परामर्श से बनाए कीर्तिमान

श्री मोहता को राष्ट्रीय जैन संत श्री पुलक सागर जी के आशीर्वाद से उपलाट, वापी में निर्मित 'जिन शरणम तीर्थ' स्थान जैन दिगंबर मंदिर में वास्तु शास्त्र के अनुरूप निर्माण की सलाह देने का अवसर प्राप्त हुआ। यह मंदिर 100 करोड़ की लागत से बन रहा है, जिस पर गोल्ड प्लेटिंग होगी। भारत के विभिन्न शहरों के अलावा दक्षिण अमेरिका, नेपाल, जर्मनी, चाइना एवं स्विट्जरलैंड आदि देशों में वास्तुकार्य हेतु उनका प्रवास भी रहा है। मुंबई में शापूरजी पालोनजी समूह, प्रोजेक्ट विसिनिया पवई, चांदिवली, मुंबई जिसमें 560 फ्लैट के प्रोजेक्ट में भूमि भवन को वास्तु शास्त्र द्वारा एनर्जी बैलेंस कर 2019 में पूर्ण किया। श्री मोहता इंदौर में प्रिंसेस बिजनेस, स्काईपार्क 1-2 प्रकाश स्नेक्स, येलो डायमंड चिप्स मान ग्रुप व बड़े शेयर ब्रोकर हाउस आदि के भी वास्तु सलाहकार रहे हैं।

उपाय शास्त्रों में वर्णित नहीं

आपके अनुसार वास्तु शास्त्र द्वारा एनर्जी बैलेंस कर किसी भी भवन, भूमि, घर, फ्लैट ऑफिस, इंडस्ट्रीज, टाउनशिप, हाई राइज बिल्डिंग, रिसोर्ट, मैरिज गार्डन आदि को बिना अधिक तोड़-फोड़ करे भी ऊर्जावान बनाया जा सकता है व मानसिक शांति, स्वास्थ लाभ व प्रगति पाई जा सकती है। आपका यह भी मानना है कि भूमि के भीतर होने वाली रासायनिक क्रियाओं की वजह से जो जियो पैथिक स्ट्रेस, मैग्नेटिक, इलेक्ट्रिको मैग्नेटिक फील्ड जगह जगह पाया जाता है वैसे ही वातावरण में मौजूद इलेक्ट्रोमैग्नेटिक तरंगों की वजह से वातावरण में तापमान अधिक व वायु में ऑक्सीजन की कमी हो गई है। इलेक्ट्रोमैग्नेटिक तरंगों के बढ़ने का कारण उच्च वोल्टेज, इलेक्ट्रिक लाइन, संचार उपकरण, टावर, मोबाइल, सैटेलाइट रिसीवर, डिवाइस डिश टीवी आदि वाहरी वातावरण पर प्रभाव डाल रहे है जिससे भूमि की उर्वरता व वातावरण में ऑक्सीजन प्रभावित होती है। इसी कारण पेड़-पौधे, फसल आदि भी पूर्ण रूप से फल फूल नहीं पाते हैं।

स्वास्थ्य को चुनौती देते उपकरण

घर के भीतर इलेक्ट्रोमैग्नेटिक उर्जा उत्सर्जन वाईफाई डिवाइस, मोबाइल, लैपटॉप, माइक्रोवेव आदि इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों से होता है। यह सभी चीजें जीवन को आसान बनाने के बावजूद कई स्वास्थ्य समस्याओं का कारण भी बन रही है। विशेष रूप से प्राथमिक विद्यालय की आयु में बच्चों द्वारा मोबाइल के उपयोग से आयु कम हो रही है, शारीरिक दुर्बलता जैसे देखने या सुनने की क्षमता में भी कमी आ रही है। इलेक्ट्रोमैग्नेटिक तरंगों के अधिक संपर्क में आने से तनाव, सिरदर्द, थकान, सीखने की क्षमता में कमी, रचनात्मक कार्यों में कमजोरी व एकाग्रता में कमी हो रही है। इनका कारण मोबाइल फोन से निकलने वाली माइक्रोवेव विकिरण के अधिक संपर्क में रहना होता है तथा इसी कारण ये घातक किरणें किडनी, मानव शरीर के उक्त रक्तचाप व पाचन क्रिया को भी प्रभावित करती है क्योंकि उच्च डिग्री विद्युत चुंबकीय ऊर्जा अवशोषण शरीर में आवश्यक विद्युत प्रवाह को बदल सकता है तथा शरीर में तापमान वृद्धि कर रक्त परिसंचरण को प्रभावित कर सकता है जिससे कैंसर, शुगर, हार्टअटैक व कोलेस्ट्रोल आदि बीमारियां उत्पन्न होती हैं। ईएम टूल एमएसएस प्लेट, रिवर्सल, क्रिस्टल, मेटल आदि

जैसी वस्तुओं का प्रयोग कर विद्युत के चुंबकीय प्रभाव व माइक्रोवेव अल्ट्रावायलेट रेंज आदि के दुष्प्रभाव को दूर किया जा सकता है। भूमि के अधिक चुंबकीय प्रभाव व वातावरण में माइक्रोवेव तरंगों को दूर करने के लिए जमीन के अंदर व ऊपर उपकरण लगाकर विकिरण के दुष्प्रभाव को भी समाप्त किया जा सकता है। विशेष रूप से ये वास्तु संसाधन शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली इम्यून सिस्टम को दूषित नहीं होने देते हैं और हमारा शरीर भी स्वस्थ रहता है।

वर्तमान में उपयोगी कुछ टिप्स

श्री मोहता का कहना है कि आज के महामारी के समय में शास्त्रों में कुछ उपाय दैनिक जीवन में करने की प्रथा चली आ रही है उसे अधिक से अधिक प्रयोग करें। सुबह शाम कंडे पर गूगल, कपूर, नीम की सुखी हुई पत्ती घर में अवश्य जलाएं। यह वातावरण के साथ शरीर में फेफड़ों के लिए भी लाभप्रद हैं। शास्त्रों में कई जड़ी-बूटी व लकड़ी के साथ हवन द्वारा शुद्धिकरण करना भी बताया गया है। वातावरण में उत्पन्न जितने भी कीड़े-मकोड़े, मच्छर, बारीक बैक्टीरिया जो आंखों से नहीं देखे जा सकते हैं वह इस गंध के प्रभाव से प्रभावित होकर घर में प्रवेश नहीं कर पाते। धागे में नींबू और मिर्च डालने से धागा उसके रस से गिला होता है और उसकी गंध से भी कीड़े मकोड़े दूर रहते हैं। भवन के भीतर पूजन सामग्री द्वारा हवन, धूप या दीप का विधान है, जंतु इनकी गन्ध से भी प्रवेश नहीं करते। जैसे मच्छर के लिए केमिकल निर्मित अगरबत्ती, फिनाइल या सैनिटाइजर स्प्रे किया जाता है उसी प्रकार शंखनाद, ओम धुन या घंटी बजाना आदि से साउंड फ्रिकवेंसी निकलती है, उससे भी कीड़े - मकोड़े नष्ट होते हैं। अभी वर्तमान में वातावरण में गांव में शहरों के मुकाबले 18 प्रतिशत ऑक्सीजन अधिक है ऐसे में घर के आस-पास ऑक्सीजन देने वाले अरेका पाम, लेडी पाम, एलोवेरा, गोल्डन पोथोस, डेंडरोबिम ऑर्किड, स्पाइडर प्लांट, स्नेक प्लांट, नागफनी जैसे पेड़ पौधे अधिक से अधिक लगावे ताकि वर्तमान में चल रहे पेंडेमिक कोविड-19 व आने वाले समय में 5जी के रेडिऐशन को नियंत्रित कर सकें। इस आधुनिक साईंस के साथ नेगेटिव ऊर्जा को नियंत्रित रख स्वस्थ्य जीवन जीना ही उद्देश्य होना चाहिऐ।

आपकी कोई समस्या अब नहीं रहेगी 'समस्या'

जहाँ आप पाऐंगे

- ज्योतिष की सभी विधाओं के ख्यात विद्वानों का मार्गदर्शन।
- वास्तु दोष से मुक्ति के लिये विख्यात वास्तुविदों का परामर्श।
- कार्य के 'शुभ' आरंभ के लिये विशेषज्ञों से प्रमाणित मुहूर्त।
- वेदपाठी विद्वानों द्वारा नवग्रह शांति, मंत्र जाप।
- मंगल दोष निवारक अनुष्ठान (भातपूजा)।
- वेद विद्वानों से वैदिक कर्मकाण्ड-अनुष्ठान।
- हस्तरेखा के ख्यात विद्वानों द्वारा समाधान।
- कालसर्प दोष निवारण अनुष्ठान।
- ज्योतिष मर्मज्ञों द्वारा प्रमाणित सूक्ष्मतम् गणनाओं से युक्त जन्म पत्रिका निर्माण।
- रत्न विशेषज्ञों द्वारा परीक्षित असली रत्न, उपरत्न, सिद्ध माला, रुद्राक्ष आदि।

ज्योतिष व वास्तु के केन्द्र उज्जयिनी में ऋषिमुनि समूह लेकर आया है आपकी सभी समस्याओं का समाधान

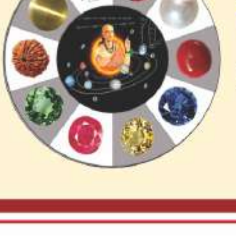

ऋषिमुनि
वैदिक सॉल्युशन्स

90, विद्या नगर, सांवेर रोड़, उज्जैन (म.प्र.)
मो. 094250-91161
e-mail : rishimuniprakashan@gmail.com

कहते हैं कि ज्योतिष जैसा गुढ़ ज्ञान वास्तव में सीखा नहीं जा सकता, यह तो केवल ईश्वरीय प्रेरणा से ही प्राप्त होता है। उसी के परिणाम स्वरूप भविष्यवाणियाँ सच होती हैं अन्यथा कई पुस्तकें पढ़ने के बावजूद भी कई ज्योतिषियों की भविष्यवाणी अक्सर सत्य सिद्ध नहीं हो पातीं। यह बात वास्तव में पूना निवासी ज्योतिर्विद अनिल तोषणीवाल पर खरी उतरती सी प्रतीत होती हैं। आईये जानें कैसे बढ़ें ज्योतिष की ओर उनके कदम?

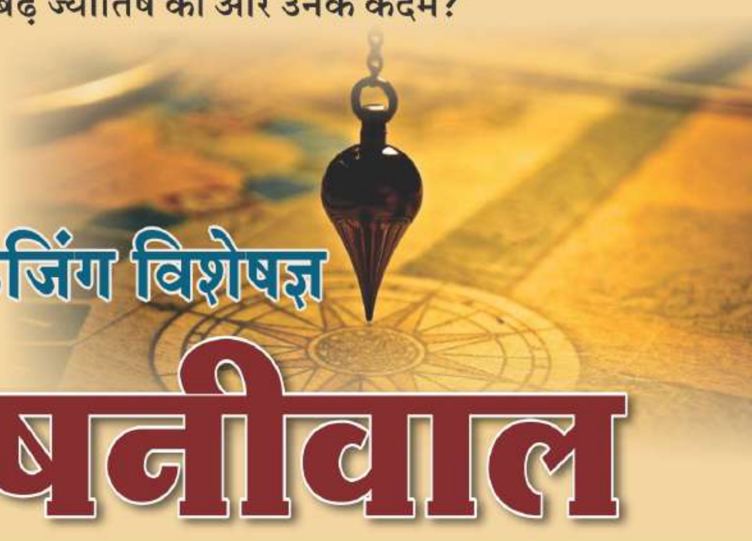

आलौकिक प्रेरणा से बने डाऊजिंग विशेषज्ञ

अनिल तोषनीवाल

पुना में प्रतिष्ठित और सिद्धहस्त डाऊजिंग ज्योतिर्विद के रूप में पहचान रखने वाले रविवार पेठ निवासी अनिल बालकिशन तोषनीवाल (नागौरी) का व्यवसाय जगत से ज्योतिष के क्षेत्र में आगमन वास्तव में किसी करिश्मा से कम नहीं है। श्री तोषनीवाल का जन्म 12 अक्टूबर 1960 को पूना में कमलाबाई-बालकिशन तोषनीवाल के यहाँ तीन भाईयों में मंझले पुत्र के रूप में हुआ था। स्कूली शिक्षा पूना में मराठी माध्यम से 10वीं तक और 11-12वीं अंग्रेजी माध्यम से उत्तीर्ण की। पिताजी बालकिशन तोषनीवाल एक प्रिंटिंग प्रेस में नौकरी करते थे। गरीबी के कारण श्री तोषनीवाल का आगे शिक्षण नहीं हो पाया और वे स्वयं ड्रायफ्रूट्स का होलसेल व्यवसाय करने लगे। फिर 22 नवम्बर 1983 को पूना निवासी संगीता सुपुत्री कन्हैयालाल जाजू के साथ परिणय सूत्र में बंध गये और 1 जनवरी 1984 को व्यवसाय के निमित्त हैदराबाद में जा बसे। वहां हैदराबाद सीटी कोठी में रहते हुए किराना दुकान प्रारम्भ की, कारोबार भी अच्छा चल रहा था लेकिन वहाँ अक्सर हिंदू मुसलमान के झगड़े होते थे। उससे तंग आकर वे वापस पूना 1 जनवरी 1992 को आ गये। इसी दौरान 10 नवम्बर 1990 को पुत्री माधुरी का जन्म हुआ था।

शेयर व्यवसाय में भी रखा कदम

इसके बाद दो साल तक पुणे में ही शेयर्स का व्यवसाय किया पर इसमें उन्हें अपेक्षित सफलता नहीं मिल पायी। उसके साथ साथ वे शेयर्स में भी इन्वेस्टमेंट करने लगे। इन तमाम प्रयासों के बावजूद जीतनी उन्हें कमाई होनी चाहिये वो हो नहीं पा रही थी। अतः परिवार वालों और मित्रों ने शेयर ब्रोकर का व्यवसाय करने को कहा जो उन्होंने दूसरी पुत्री खुशबू के जन्म दिवस पर 30 मई 1994 को प्रारम्भ किया, जिसका नाम रखा "संगीता इनवेस्टमेंट। इसमें उन्हें अच्छी सफलता मिली और इसके बाद उन्होंने कभी वापस पीछे मुड़कर नहीं देखा। उसी कमाई से उन्होंने खुद का फ्लैट 1999 में लिया और खुद का ऑफिस वर्ष 2014 में सदाशिव पेठ पूना में लिया। वर्तमान में भी उनका यह व्यवसाय चालू है। उस समय शेयर व्यवसाय का काम करने का समय सुबह 10 से 3 बजे तक था। फिर कुछ काम नहीं रहता था। तो उन्होंने वर्ष 2006 में प्रॉपर्टी ब्रोकर का काम शुरू कर दिया। वो अच्छा ही चला। इसमें उनके मित्र व परिवार सहयोगी बने रहे।

फिर आया जीवन में उतार

व्यवसाय अच्छा चल रहा था, कुछ समय पश्चात शेयर्स मार्केट में पूरी मंदी छा गई। अमेरिका की वजह से पूरा मार्केट नीचे गिरने लगा और उनका व्यवसाय कम होता गया और जिससे अच्छा खासा नुकसान उठाना पड़ा। उस वक्त तो प्रॉपर्टी ब्रोकर के काम ने उनका साथ दिया, पर वो भी ज्यादा दिन नहीं चला और उसमें भी मंदी आ गई। आर्थिक परेशानियाँ बढ़ती गई और बैंकों का कर्ज भी बढ़ने लगा। घर खर्च, बच्चों की फीस भरने तक में काफी परेशानी हुई पर उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। जिस तरह शेयर्स के भाव नीचे जाते हैं तो वे ऊपर भी आते हैं यही सोच उन्होंने अपनी जिंदगी में भी सकारात्मकता के साथ स्वीकार कर ली। फिर एक वक्त ऐसा आया कि सभी काम बंद हो गये। घर की हालत बहुत ही खराब होने लगी और वे अत्यंत परेशान रहने लगे।

अन्तर्प्रेरणा से दिखी नई राह

श्री तोषनीवाल कहते हैं, मुझे एक अच्छी आदत थी कि खाली समय में कुछ ना कुछ सीखना, तो मैंने उस वक्त पेंडुलम डाऊजिंग सीखा। मैं घर पर ही थोड़ी - थोड़ी प्रेक्टिस करने लगा। मैं जो बातें लोगों को बताता वह सच होती थी और मैं लोगों को उनके भविष्य के

बारे में बताने लगा। लोगों का मुझ पर विश्वास बढ़ गया और मैं उनको सलाह देने लगा। उसक वक्त मैं किसी से पैसे नहीं लेता था, क्योंकि क्या सही क्या गलत मुझे पता नहीं था। लोगों की भीड़ लगने लगी, प्रॉपर्टी का काम कम होता गया और डाऊजिंग का ज्यादा चलने लगा। उस वक्त मैं लोगों को कुछ चीजें देता उससे लोगों को और अच्छा परिणाम आता गया। वो राशि रत्न लोगों को लाभ पहुंचाते। इस दौरान मेरा व्यवसाय तो कम हुआ पर मेरी भविष्यवाणी सही होती गयी। फिर मैंने सोचा कि क्यों न अपना खुद का राशि रत्न और वास्तु शास्त्र में लगने वाली चीजों का व्यवसाय करूं, पर मेरे पास पैसे नहीं थे। मेरा शेयर्स व्यवसाय चालू था, पर उतनी कमाई नहीं होती थी। मैंने अपने दोस्तों से इस व्यापार के बारे में कहा लेकिन कोई भी पैसों की मदद करने को तैयार नहीं था, लेकिन मुझे वास्तु प्रोडक्ट का कारोबार तो करना था। एक दिन गुस्से में आकर मैंने आफिस का फ्रिज ओएलएक्स पर बेच दिया और उसी पैसों से मैंने राशि रत्न और वास्तु प्रोडक्ट का व्यवसाय करने लगा। पूंजी कम खर्च ज्यादा होने लगा पर मैंने हिम्मत नहीं हारी और उसी में ज्यादा से ज्यादा ध्यान देने लगा। ऊपर वाले ने मेरी बात सुन ली और ये व्यवसाय चल पड़ा। अच्छा खासा आज मेरा नाम हो गया और लोगों ने मुझे साथ भी दिया फिर मैं डाऊजिंग की क्लास लेने लगा, लोग आते गये और मैं सिखाता गया और उसके साथ साथ मैंने हिलींग भी सीख लिया। वो भी मैं लोगों को करवाता गया। लोग अच्छे होने लगे और उनकी दुआ से मेरा नाम हुआ। उसके साथ मेरा व्यवसाय भी चलने लगा। उसके बाद मैंने वापस पीछे मुडकर नहीं देखा और आज मैं अच्छी परिस्थिति में हूं।

स्वयं भी अपनी भविष्यवाणियों से हुए चकित

श्री तोषनीवाल बताते हैं कि मेरे जीवन में ऐसे अनुभव भी आये कि मुझे भी अपनी की हुई भविष्यवाणी पर विश्वास करना या सोचना पडता पर वो बात आगे चलकर सही होने लगी। एक दफा मेरे रिश्तेदार ने मुझे शादी की तारीख निकालने को कहा। मैंने उसे तारीख निकाल कर दी और मैं भूल गया। उस रिश्तेदार को इतनी जल्दी थी कि उसने दूसरे ज्योतिष से शादी की दूसरी तारीख निकालवा ली और शादी तय करके मुझे पत्रिका भेज दी। मुझे बुरा लगा। अब शादी को तीन दिन बचे थे और शादी के तीन दिन पहले उसके बड़े देवर का देहांत हो गया और शादी रूक गयी। फिर उसके बाद मैंने जो तारीख दी थी, उसी तारीख पर वो शादी हुई। इसी प्रकार एक मेरी बुआ की लड़की को किसी डॉ. ने कहा कि उसे कैंसर है, वो डर गयी। सभी ने मिलकर उसका ऑपरेशन करवा दिया और उस हिस्से को (पार्ट को) बॉम्बे परीक्षण के लिए भेज दिया। उस वक्त मुझे कुछ भी मालूम नहीं था। एक दिन दिवाली के मिलने के लिए उसके घर गये। मैंने उसका डाऊजिंग और हिलींग किया। उससे आधार पर मैने कहा था कि तुझे कैंसर नहीं है। पर वो इस बात को मानने के लि तैयार नहीं थी। मैंने बॉम्बे परीक्षण के लिये लिए जो सेम्पल भेजा था, उसका परिणाम आने की तारीख भी बताई। फिर वो सब बाते मैं भूल गया लेकिन उसके बाद वो मुझे ढूंढते हुए आयी और खुशी के मारे रोने लगी। जो कुछ भी मैंने कहा था वो सब कुछ सही साबित हुआ है। जो तारीख मैंने दी थी, उसी तारीख को वो रिपोर्ट आयी थी। उसमें लिखा था कि आपको कोई कैंसर नहीं है।

शुद्ध लाएं - शुद्ध खाएं - शुद्ध खिलाएं

सत्तू तीज पर माहेश्वरी बहनों की पहली पसंद

गुणवत्ता के लिए प्रख्यात राजेश मिमानी ग्रुप का उत्पाद

गणपति
Ganpati
A Product of " R.Mimani" Group

GANPATI TASTY FOODS PVT. LTD. BIKANER
9929899292, 9829841344, 9351531972, 9351544318
e-mail: sales.mappl.gtfpl@gmail.com

माहेश्वरी बहनों के लिए 5 किलो पैक पर विशेष छूट के साथ उपलब्ध ▸ सम्पर्क : 98298-21133

आमतौर पर कई लोगों के अंदर ज्योतिष शास्त्र को लेकर ऐसा सोची बन गई है, जैसे यह कोई अंधविश्वास ही हो। जबकि हकीकत देखें तो यह विशुद्ध विज्ञान है। ऐसे मे पीलीबंगा जिला-हनुमानगढ़ निवासी दीपिका होलानी, एक ऐसी ही ज्योतिर्विद हैं, जो इसे विज्ञान की कसौटी पर कसते हुए ऐसे सटिक समाधान दे रहीं हैं, जिसने लोगों के जीवन को एक नई दिशा प्रदान की है। यूजीसी नेट जैसी महत्वपूर्ण परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद भी ज्योतिष की ओर कदम बढ़ाना वास्तव में अपने आपमें एक आश्चर्य की विषयवस्तु ही है। आईये जानें कैसे बढ़े दीपिका के कदम ज्योतिष की ओर।

ज्योतिष का वैज्ञानिक पक्ष बतातीं दीपिका माहेश्वरी

पीलीबंगा जिला हनुमानगढ़ (राजस्थान) निवासी दीपिका माहेश्वरी की पहचान क्षेत्र में एक ऐसी विद्वान के रूप में है, जो बीकानेर युनिवर्सिटी से इतिहास विषय में पोस्ट ग्रेजुएशन करके टॉपर रही व यूजीसी नेट जैसी राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा उत्तीर्ण करके भी ज्योतिष के क्षेत्र में अपनी सेवा दे रही हैं। उनका परामर्श भी ऐसा है कि जिसे लोग सराहे बिना नहीं रहते। इस क्षेत्र में उनका पदार्पण भी वास्तव में अकल्पनीय ही है। शुरू से ही उन्हें किताबें पढ़ने का काफी शौक था। साथ ही साथ हस्तरेखा देखना और ज्योतिष शास्त्र से जुड़ी किताबें पढ़ना भी काफी अच्छा लगता था। अपने भविष्य को जानने की उत्सुकता में उन्होंने ज्योतिष शास्त्र संबंधी कई ग्रंथ, मैगजीन, आर्टिकल लेख आदि पढ़ने शुरू कर दिये, ऑनलाइन अध्ययन किया। यूट्यूब पर आने वाले बहुत से ज्योतिष विद्वानों को भी उन्होंने सुना। सैद्धांतिक तौर पर ज्योतिष को समझने के साथ-साथ व्यावहारिक तौर पर यह कैसे अच्छा और बुरा प्रभाव दे सकता है, यह जानने के लिए उन्होंने अपने आसपास के लोगों की जन्म कुंडली लेकर उनकी ग्रह दशाओं को भी पढ़ना शुरू कर दिया। निरंतर कुंडली विश्लेषण और अभ्यास से इस विषय पर उनकी पकड़ अच्छी होती गई। इस विषय की गहराई को समझते हुए इस विद्या में 10 साल का अनुभव प्राप्त किया, बस इसी ने उनके कदम ज्योतिष परामर्श की ओर बढ़ा दिये।

भ्रम दूर करना भी उद्देश्य

दैनिक जीवन में प्रायः ज्योतिष शास्त्र से अपने भविष्य को लेकर जानने की इच्छा सभी में होती है लेकिन इस विद्या को लेकर काफी तरह के भ्रम और अंधविश्वास समाज में फैले हुए हैं, जिस वजह से ज्योतिष के नाम पर लोगों का विश्वास कम होता जा रहा है। इस बात को ध्यान में रखकर जो ज्ञान उन्होंने पाया उसे लोगों तक पहुंचाने के लिए अपने यूट्यूब चैनल के माध्यम से ज्योतिष संबंधी वीडियो बनाना शुरू किया। इसमें उनका विश्वास था कि ज्ञान प्राप्त करना मात्र ही काफी नहीं है बल्कि उस ज्ञान को अपने आसपास के लोगों में बांटा जाए तो ज्ञान और बढ़ता है और हमारी प्रतिभा और निखरती है, हमें नई चीजें और अनुभव भी प्राप्त होता है। इसी चीज को समझते हुए 10 साल के इस अनुभव को वे जुलाई 2019 में शुरू किए हुए अपने यूट्यूब चैनल 'Jyotish gyan by Deepika Maheshwari' के माध्यम से साझा कर रही हैं, जिसमें लक्ष्य है कि सही ज्योतिषीय जानकारी ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंच पाए।

सैकड़ों विद्वानों से सतत् सम्पर्क

इस विद्या को और गहराई से जान सकें, इसके लिये ज्योतिष को सीखने के साथ-साथ ज्योतिष सिखाने की श्रृंखला भी प्रारंभ की। इसी दौरान उनका संपर्क अन्य बहुत से ज्योतिष विद्वानों से हुआ और अनेक ज्योतिष विद्यापीठ के साथ उन्होंने काम किया एवं अनेक ज्योतिष विद्वानों के साथ वेबीनार में हिस्सा भी लिया, उनके साथ इस ज्ञान को साझा किया और बहुत से ज्योतिषीय आर्टिकल भी उन्होंने लिखे। वर्तमान में वे अपने फेस बुक पेज व टेलीग्राम ग्रुप के माध्यम से ज्योतिष संबंधी सेवाएं प्रदान कर रही हैं जिसमें प्रतिदिन दैनिक पंचांग, सनातन धर्म में मनाए जाने वाले तीज-त्योहार, व्रत आदि के महत्व के साथ-साथ नवग्रहों से जुड़े ज्योतिषीय उपायों संबंधित जानकारी प्रदान की जाती है। समय-समय पर उनके द्वारा वेबीनार आयोजित करवाकर ग्रुप सदस्यों को ज्योतिष परामर्श भी दिया जाता है। इन सब ज्योतिषीय गतिविधियों को करने के साथ-साथ वर्तमान में एस्ट्रोलॉजर और काउंसलर के नाते एक प्रमाणित ज्योतिष शास्त्र की सलाहकार संस्था Future Study Online से जुड़ी हैं, जहां जन्म कुंडली, प्रश्न कुंडली, केपी एस्ट्रोलॉजी, एस्ट्रो वास्तु, अंक शास्त्र आदि ज्योतिष की अनेक विद्याओं का प्रयोग करते हुए देश और विदेश के हजारों लोगों को फोन के माध्यम से सफल मार्गदर्शन दे रही हैं और उनके जीवन की समस्याओं का समाधान इस विद्या के बलबूते पर करने का अथक प्रयास कर रही हैं।

उच्च मध्यमवर्गीय व्यवसायी परिवार में जन्म

दीपिका का बठिंडा (पंजाब) में उच्च मध्यमवर्गीय व्यवसायी परिवार में अनाज व्यवसायी सुरेंद्र पाल होलानी एवं श्रीमती पुष्पा देवी होलानी के यहाँ जन्म हुआ था। फिर कुछ कारणवश उनका परिवार राजस्थान में आकर बस गया। माताजी श्रीमती होलानी एक पढ़ी-लिखी धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थीं। अतः शुरू से ही धर्म में विश्वास और आध्यात्मिक मूल्यो और संस्कारों की सौगात माता-पिता से संस्कारों के रूप में मिली। माताजी श्रीमती होलानी वर्ष 2014 के आसपास गंभीर बीमारी कैंसर से पीड़ित हुई और मई 2019 में उनका देहावसान हो गया। वर्तमान में उनके परिवार में एक विवाहित बड़े भाई रजनीश होलानी हैं, जिन्होंने पोस्ट ग्रेजुएशन एडमिनिस्ट्रेशन विषय से किया और पिताजी के साथ ही पारिवारिक व्यापार में जुड़े हुए हैं। दीपिका को ज्योतिष के साथ-साथ ऐसे सभी रचनात्मक कार्य करना भी पसंद हैं जिससे कुछ सीखने को मिले। यही कारण है कि संगीत सुनना, नृत्य करना, खाना बनाना, पेंटिंग करना, ड्राइंग करना, फैशन डिजाइनिंग, योगा, मेडिटेशन, एक्यूप्रेशर, होम्योपैथी, सुजोक पद्धति आदि सभी उनकी हॉबी का हिस्सा रहीं। किसी भी चीज को ज्यों का त्यों ना मानकर उस चीज की गहराई में जाना और उसे तर्क पूर्वक समझना उनकी आदत में शुरू से शामिल था। यही शौक व आदत उन्हें न केवल ज्योतिष की ओर ले गई बल्कि इसमें उनसे नवीन शोध भी करवाये। स्वयं दीपिका कहती हैं, उन्हें इस बात का संतोष है कि आज इसी ज्योतिष विद्या के बलबूते वे समाज और मानवता की सेवा करने का प्रयास कर रही हैं।

भारत अपने ज्ञान से विश्व गुरू रहा है। इस बात को सम्पूर्ण विश्व को अपने वास्तु व ज्योतिष के ज्ञान से यूएसए में रहते हुए भी मनवाने का प्रयास करती रही हैं, दिल्ली निवासी श्रेया भुराड़िया।

वास्तु का ध्वज फहराती
श्रेया भुराड़िया

दिल्ली निवासी श्रेया भुराड़िया की पहचान एक ऐसी इंटीरियर आर्किटेक्ट के रूप में है, जो वास्तु व ज्योतिष विशेषज्ञ के तौर पर भी सेवा दे रही है। वर्तमान में दिल्ली में निवास करते हुए व्यावसायिक रूप से श्रेया अपनी कम्पनी ''श्रेलेमेंट'' का संचालन कर रही है। इसमें वे ज्योतिष व वास्तु से संबंधित परामर्श देकर लोगों का मार्गदर्शन करने में भी पीछे नहीं रहतीं।

संस्कारों के साथ मिला ''वैदिक ज्ञान''

श्रेया को ज्योतिष व वास्तु के प्रति रूचि वास्तव में संस्कारों के रूप में ही प्राप्त हुई। स्वयं श्रेया कहती हैं, मैं वास्तु को सुनकर और उस पर विश्वास करते हुए बड़ी हुई हूँ और इससे मेरे परिवार को मदद भी मिली है। भले ही मैंने प्रैट इंस्टीट्यूट, न्यूयॉर्क से पढ़ाई की हो, लेकिन मैंने अपनी कई परियोजनाओं में वास्तु को शामिल करने की कोशिश की जिसे वे लोग 'फेंग शुई' के रूप में जानते हैं। लक्ष्य रहा कि पश्चिमी लोगों को भी इसके बारे में शिक्षित किया जा सके और वे भी यह जान सकें कि इस तरह के वैज्ञानिक अध्ययन मौजूद हैं और इनका हमारे जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है? वास्तु हमारे लिए नई संभावनाएं पैदा करता है। जैसे यह हमारे जीवन के दृष्टिकोण को व्यापक बनाता है, यह हमारे रिश्तों में प्यार और गर्मजोशी भरता है, बाधाओं को दूर करता है और वित्तीय नुकसान से उबरता है। वास्तु के पास सभी समस्याओं का समाधान है। अपने घर में कुछ चीजों को संतुलित करने से ही हमें अपार अवसर, प्यार और खुशी मिलती है।

सुखी जीवन के कुछ टिप्स

चर्चा में श्रेया सुखी जीवन के लिये वास्तु की कुछ टिप्स बताती हैं। वे कहती हैं, पूर्व दिशा कनेक्शन का क्षेत्र है इसलिए इस क्षेत्र में आपका ड्राइंग या लिविंग रूम फलदायी होगा। यह दुनिया के साथ आपकी कनेक्टिविटी को पोषण देता है। यह दिशा सफल बैठकें करने के विचार को नियंत्रित करती है। पश्चिम धन का क्षेत्र है इसलिए यहां अपना शयनकक्ष या भोजन कक्ष होना फायदेमंद है। यह जीवन की इच्छाओं को पूरा करने में मदद करता है। इस क्षेत्र में शौचालय होने से कोई लाभ नहीं होगा। उत्तर अवसरों का क्षेत्र है। यह फलदायी होगा यदि आपका यहां पारिवारिक लाउंज या पौधे हों। अगर यह जोन स्वस्थ है तो बहुत सारे अवसर और पैसा मिलेगा। दक्षिण शांति का क्षेत्र है। इस दिशा में सोने से मन को शांति और सुकून मिलता है। यदि कोई व्यक्ति अनिद्रा या थकान से पीड़ित है तो घर के इस क्षेत्र में कुछ असंतुलन अवश्य है।

आमतौर पर रोग एक विपदा के रूप में ही आते हैं। वैसे तो खरगोन (म.प्र.) निवासी रत्नेश राठी को भी रोग ने शारीरिक कष्ट तो दिया लेकिन इस अवधि में पैतृक रूप से उन्होंने वह ज्योतिष ज्ञान प्राप्त किया जो आज कई लोगों के जीवन को रोशन कर रहा है।

विरासत में मिला ज्योतिष
रत्नेश राठी

खरगोन (म.प्र.) में श्री बालाजी ज्योतिष वास्तु अनुसंधान केंद्र का संचालन करने वाले रत्नेश राठी की क्षेत्र में एक ऐसे ज्योतिर्विद के रूप में प्रतिष्ठा है, जो मात्र 19 वर्ष की उम्र से इस क्षेत्र में अपनी महत्वपूर्ण सेवा दे रहे हैं। अपनी 10 वर्ष की इस सेवा यात्रा में वे स्वास्थ्य बिगड़ना और यह लंबे समय से क्यों चल रहा है, विदेश यात्रा योग, लघु जीवन योग, ध्यान योग, नौकरी आदि के बारे में सटीक जानकारी प्रदान कर रहे हैं। वास्तु के बारे में 4 दिशाओं को 64 दिशाओं में विभाजित किया ताकि वास्तु की सही जानकारी मिल सके। उन्होंने व उनके मित्र ज्योतिषाचार्य प्रदीप सोनी ने वर्ष 2016 में नक्षत्रों पर शोध से यह जाना कि वर्तमान में क्या हो रहा है। बाल योग, वित्त योग, नौकरी, स्वास्थ्य, विदेशा योग आदि कई क्षेत्रों में व मार्गदर्शन दे रहे हैं।

पैतृक रूप से मिला ज्योतिष ज्ञान

श्री राठी का ज्योतिष की ओर अग्रसर होना वास्तव में भाग्यवश ही कहा जा सकता है। स्वयं श्री राठी बताते हैं, कि उनका जन्म 19 जुलाई 1992 को हुआ था। उनको ज्योतिष की प्रेरणा उनके दादाजी स्व. श्री किशनदास राठी से मिली, जो एक अच्छे ज्योतिषी थे। श्री राठी ने बचपन में उनसे ज्योतिष की जानकारी ली थी। 17 साल की उम्र में स्वास्थ्य खराब हो गया था, इसके बाद इन्होंने इस समय का उपयोग कर ज्योतिष का पूरा ज्ञान प्राप्त कर लिया। लक्ष्य था तो अपनी इस बीमारी का कारण ज्योतिष से खोजना। इसके लिये कई विद्वानों को गुरू भी बनाया। फिर मात्र 19 साल की उम्र से ही ज्योतिष परामर्श का काम शुरू कर दिया और ज्योतिष में नक्षत्र आदि को गहराई से जाना। इसके पश्चात् 24 वर्ष की उम्र से व्यावसायिक रूप से सशुल्क मार्गदर्शन दे रहे हैं।

वास्तव में वास्तु का अर्थ मात्र विभिन्न उपायों से दोषों का समाधान ही नहीं है। वास्तव में तो इसका सही समाधान ही है, भवन की आंतरिक व्यवस्था को ऐसा बदल देना जिससे वास्तु दोष स्वतः ही दूर हो जाऐं। कुछ ऐसी ही सोच के साथ वास्तु के अनुरूप इंटीरियर डिजाईन कर रही हैं, दिल्ली निवासी अनुपमा बिहानी।

इंटीरियर से ही वास्तु समाधान करतीं

अनुपमा बिहानी

सिविल लाइन्स दिल्ली में अपनी इंटीरियर डिजाईनिंग फर्म ''मीराबेल'' का संचालन करने वाली अनुपमा बिहानी क्लाइंट्स के बीच विश्वास का एक विशिष्ट नाम बन गई हैं। इसका कारण है, इंटीरियर डिजाइनिंग के साथ-साथ उनका वास्तु का वह ज्ञान जो बनाता है, उन्हें अन्य इंटीरियर डिजाइनर्स से कुछ अलग। आमतौर पर वास्तुविदों से परामर्श लेने वालों के यहां भरे पड़े वास्तु समाधान आगंतुकों के प्रश्नों का केंद्र होते हैं, लेकिन अनुपमा की विशेषता इसमें यही है कि ये सम्पूर्ण इंटीरियर को ही अपने वास्तु ज्ञान के साथ ऐसे डिजाईन करती हैं कि अलग से किसी रिमेडीज (समाधान) की जरूरत ही नहीं होती।

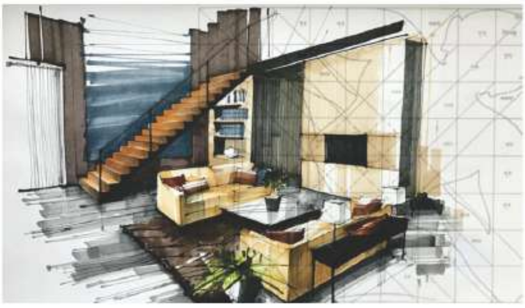

इंटीरियर से वास्तु का सफर

अर्थशास्त्र से स्नातक अनुपमा का हमेशा से ही रचनात्मक कला तथा आध्यात्म की ओर रूझान रहा है। कला के प्रति इसी रुझान ने उनके कदम इंटीरियर डिजाइनिंग की ओर बढ़ा दिये। फिर इसकी शिक्षा प्राप्त करते-करते उन्होंने पाया कि विभिन्न वस्तुओं के स्थानों के परिवर्तन से वहाँ रहने वालों के मूड में भी परिवर्तन होता है। बस उन्होंने वस्तुओं की आकृति, रंग व डिजाईन में परिवर्तन करने का प्रयोग करते-करते वास्तु का गहन अध्ययन प्रारम्भ कर दिया।

वास्तु सलाह का केंद्र भी है, मीराबेल

गहन वास्तु शास्त्र के अध्ययन के पश्चात अनुपमा ने फ्रीलांस फर्म के रूप में वर्ष 2005 में ''मीराबेल'' की स्थापना की। इस इंटीरियर डिजाईनिंग फर्म की संकल्पना ही उन्होंने प्रत्येक व हर रिक्त स्थान आवश्यकता तथा उपयोगिता के अनुरूप सुंदर ढंग से डिजाइन करना रही। उनका मानना है कि कोई भी व्यक्ति सुविधाजनक इंटीरियर से प्रसन्न रहता है, न कि मात्र सुंदर इंटीरियर से। इस फर्म को उन्होंने कार्यस्थल के साथ वास्तु शास्त्र के अनुरूप फर्नीचर डिजाईन स्टूडियो के रूप में विकसित किया।

ऊर्जा संतुलन है वास्तु

अनुपमा के अनुसार वास्तव में वास्तु हमारे आसपास की छुपी ऊर्जा को पहचानने व उन्हें संतुलित करने का भारतीय आर्किटेक्ट विज्ञान है। ऊर्जा का संतुलन वास्तव में हमारे जीवन में आमूलचूल परिवर्तन ला सकता है। यह स्वास्थ्य, संपन्नता व सम्पदा तथा खुशी सभी पर प्रभाव डालता है। अनुपमा की फर्म मकान, ऑफिस, फैक्ट्री तथा कमर्शियल काम्पलेक्स सभी को वास्तु परामर्श प्रदान कर उनके वास्तु दोषों का समाधान कर रही है।

शुभकामनाओ सहित

Dalia's™
High in Quality, Rich in Taste

श्री निवास एंड ब्रदर्स
SRINIVAS & BROTHERS

किराणा एवं सूखे मेवे व सभी किस्म के मुरब्बे तथा अचार एगमार्क शहद उपवन ब्रेड-ए
सच्चा साबू एगमार्क साबुदाना सुपर कोकिला मेहंदी

14-7-371/17, बेगम बाजार, राजाबहादुर बिल्डिंग के सामने, हैदराबाद-500012
फोन-24745570, 24606726, 24615438
e-mail : contact@dalias.in web : www.dalias.in

वर्ष 1992 में विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने खोज की कि एक निर्मित इमारत भी किसी व्यक्ति को बीमार कर सकती है। वास्तव में इसका कारण होती है, जियोपैथिक स्ट्रेस अर्थात पृथ्वी की सतह से उत्सर्जित ऊर्जा, जिसमें मानव के सामान्य कामकाज को बदलने की क्षमता होती है, उसे जियोपैथिक स्ट्रेस कहा जाता है। जियोपैथिक स्ट्रेस (जीएस) पृथ्वी की सतह की वह ऊर्जा है, जो निर्मित पर्यावरण के लिए सबसे बड़ा खतरा है।

स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा

जियोपैथिक स्ट्रेस

निमिषा दामानी, मुंबई

निर्मित पर्यावरण घरों, सड़कों, फुटपाथों, दुकानों आदि का निर्माण करता है, जबकि जियोपैथिक स्ट्रेस निर्मित पर्यावरण के प्रत्येक भाग को प्रभावित करता है। यह ऊर्जा धातुओं, ठोस व अन्य पदार्थों में प्रवेश करती है, जिसमें उच्च स्तर की अभेद्यता होती है। विभिन्न तरीके हैं जिनके द्वारा इस भू-तनाव का पता लगा सकते हैं। शोध से अब यह अच्छी तरह से साबित हो गया है कि जियोपैथिक स्ट्रेस निर्मित वातावरण को प्रभावित करता है। जैसे अगर लोग तनाव वाले क्षेत्रों में सोते हैं, तो ऐसे क्षेत्र कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों के लिए अतिसंवेदनशील होते हैं। दूसरी ओर, अगर भू-पर्यावरणीय तनाव सड़क के वातावरण पर मौजूद है, तो ऐसे क्षेत्र दुर्घटनाओं के लिऐ जिम्मेदार चालकों की क्रिया-प्रतिक्रिया के समय को बढ़ा सकते हैं। जियोपैथिक स्ट्रेस वाले क्षेत्र में पेड़ की उपस्थिति से भी कैंसर हो सकता है। भू-वैज्ञानिक रूप से तनाव वाले क्षेत्रों पर बिजली गिरने की संभावना अधिक होती है। जियोपैथिक स्ट्रेस की स्थिति में कांक्रीट रोड खराब हो सकती है या उससे क्रेक विकसित हो सकते हैं। अतः इस तरह निर्मित पर्यावरण के लिये जियोपैथिक स्ट्रेस महत्वपूर्ण खतरों में से एक है।

निर्मित पर्यावरण पर प्रभाव

निर्माण पूर्व की गतिविधियों में पहले 'भूमि परीक्षण' को अभिन्न अंग माना जाता था, लेकिन आज कल यह देखा गया है कि ऐसा करना आमतौर पर उपेक्षित हो गया है। शोधपूर्ण अनुसंधान से पता चलता है कि जियोपैथिक स्ट्रेस निर्मित पर्यावरण के लगभग हर हिस्से को प्रभावित करता है। बदलती जलवायु के साथ-साथ प्राकृतिक वातावरण मनुष्य की जीवन शैली के लिए उपयुक्त नहीं है, या व्यक्ति जानवर पर्यावरण के साथ समयोजन करके जी लेते हैं। मनुष्य प्राकृतिक परिवेश में उपयुक्त परिवर्तन की कोशिश कर रहा है। ऐसे रुपांतरित पर्यावरण को 'निर्मित पर्यावरण' के रूप में जाना जाता है। कुछ स्थानों पर पृथ्वी से ऊर्जा जो मानव शरीर प्रणालियों के सामान्य कामकाज को परेशान करने की क्षमता रखती हैं, उन्हें 'जियोपैथिक स्ट्रेस' के रूप में जाना जाता है, क्योंकि लोग निर्मित पर्यावरण वाले कुछ स्थानों में होने वाली घटनाओं से अनजान होते हैं। भू-जल की उपस्थिति जियोपैथिक स्ट्रेस के साथ निकटता से जुड़ी हुई है।

भूमिगत जल धारा है आम वजह

जियोपैथिक स्ट्रेस का सबसे सामान्य कारण एक भूमिगत जल धारा है। जब पानी चट्टानों से बहता है, तो यह कुछ विद्युत चुंबकीय क्षेत्र को जन्म देता है। यह क्षमता उसके यांत्रिक घर्षण के कारण उपसतह में उत्पन्न होती है, क्योंकि यह फिशर्स, दोषों, जोड़ों और वंश आदि के माध्यम से बहती है (गेल्डार्ट, 1976, मरिसन, 2004)। यह विद्युत चुंबकीय क्षेत्र पृथ्वी की सतह और इसके ऊपर से 220 किमी (रॉल्फ, 2005) की दूरी तक एक ऊर्ध्वाधर मैदान में उगता है। उन्हें दोपहर, मध्य-गर्मियों, पूर्णिमा और अधिक समय तक बढ़े हुए सौर चमक (सनस्पॉट) गतिविधि के दौरान मजबूत होने के लिए जाना जाता है। जमी हुई सर्दियों के दौरान उन्हें कनाडा के टुंड्रा में निष्क्रिय कर दिया गया है। उन्हें उच्च स्तर के आयनीकरण विकिरण के साथ और बिजली के हमलों व अन्य वायुमंडलीय घटनाओं के लिये भी जाना जाता है। भू-गर्भीय तनाव एक भूगर्भीय दोष रेखा से भी उत्पन्न हो सकता है। अर्थात् आधारशिला में एक गहरी दरार जो पृथ्वी के भीतर गहरे विकिरण को सतह तक आने देती है। जियोपैथिक स्ट्रेस जोन की ओर जाने वाले अन्य कारक हैं-लेई लाइन, ग्लोबल जियोमैग्नेटिक ग्रिड क्रॉसिंग, अंडरग्राउंड कैवर्न्स और नैचुरल कॉर्डिनेशन।

▪ लेखिका निमिषा विरल दामानी मुंबई के प्रसिद्ध वास्तुशास्त्री के.सी.आर. तोषनीवाल की बेटी है। विगत दो वर्षो से जियोपैथिक स्ट्रेस सलाहकार के रूप में कार्य कर रही है। विगत दो वर्षो में 40 से अधिक शहरों में अपनी सेवाऐं दे चुकी है।

वर्तमान दौर की कड़ी प्रतिस्पर्धा में सिर्फ वही सफल होता है, जो-''श्रेष्ठ'' हो और श्रेष्ठ होने के लिये जरूरी है, भाग्य का भी साथ। और भाग्य को यदि अनुकूल बना सकता है, तो वह है, हमारे ऋषि मुनियों के द्वारा करोड़ो वर्षो की शोध के बाद प्राप्त ज्ञान ज्योतिष, वास्तु व वैदिक कर्मकाण्ड। लेकिन समस्या है, तो यह कि किस पर करें विश्वास? कौन देगा हमें सही सलाह? इसी का समाधान लेकर आया है, उज्जैन के प्रख्यात प्रकाशन समूह ''ऋषिमुनि प्रकाशन'' द्वारा स्थापित ''ऋषिमुनि वैदिक साल्युशन्स'', जो पिछले 25 वर्षो से दे रहा है सभी विधाओं के ख्यात विशेषज्ञ विद्वानों की सलाह और वह भी एक छत के नीचे।

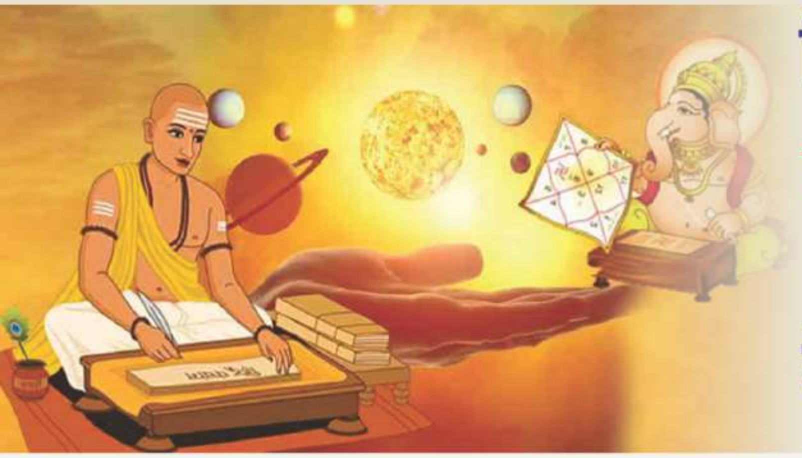

विश्वास का पर्याय बना ऋषि मुनि वैदिक सॉल्युशन्स

वर्तमान दौर में ज्योतिष वास्तु व कर्मकाण्ड के नाम पर जो ठगी की दुकानें खुल गई हैं और वे इन पवित्र शास्त्रों की गरिमा को क्षीण कर रही हैं। उस गरिमा को पुनर्स्थापित करने के उद्देश्य को लेकर ही ऋषि मुनि वैदिक सॉल्युशन की स्थापना की गई। वास्तव में ''ऋषिमुनि वैदिक साल्युशन'' देश के प्रख्यात ज्योतिष, वास्तु व कर्मकांड के मर्मज्ञ विद्वानों का एक ऐसा समूह है, जिसने पिछले 25 वर्षो से सतत रूप से शास्त्र सम्मत, विश्वसनीय व सटीक मार्गदर्शन प्रदान करने का अनुभव है। इसमें आपको इसकी विभिन्न विधाओं जैसे मुहूर्त शास्त्र, गृह शांति, रत्न विशेषज्ञ, यंत्र-मंत्र के विशेषज्ञ आदि जैसे विद्वानों का भी मार्गदर्शन प्राप्त होता है। उज्जैन नगर हमेशा से ज्योतिष ज्ञान की केन्द्र स्थली रहा है। इसने सम्पूर्ण विश्व को आचार्य वराहमिहिर, पंडित सूर्यनारायण व्यास जैसे कई विश्वविख्यात विद्वानों दिये हैं। ऐसी ही पावन नगरी में विख्यात प्रकाशन समूह ऋषि मुनि माहेश्वरी समाज के लिये श्री माहेश्वरी टॉईम्स मासिक व वैवाहिक डायरेक्ट्री श्री माहेश्वरी मेलापक सहित लगभग दो दशक से क्षेत्र के सर्वाधिक लोकप्रिय पंचांग ''**श्री विक्रमादित्य पंचांग**'' व ''**श्री अवंतिका पंचांग**'' का प्रकाशन करता चला आ रहा है। अभी तक ऋषिमुनि ने सैकड़ों ख्यात पुस्तकों का प्रकाशन भी किया है।

कालगणना का केंद्र है उज्जैन

आदि काल से भारतीय ज्योतिष के अनुसार उज्जैन को पृथ्वी के केन्द्र में स्थित माना गया है। यही कारण है कि यह तमाम ज्योतिर्विदों की शोध स्थली रहा। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार यह नगर अकाल मृत्यु से मुक्ति दिलाने वाले ''भगवान श्री महाकालेश्वर'' की नगरी के रूप में प्रतिष्ठित है। यहीं मंगल ग्रह की जन्म स्थली भी है, जहाँ वर्तमान में प्रसिद्ध मंगलनाथ मंदिर स्थापित है। इसी तरह देवगुरू बृहस्पति का भी यहाँ अति प्राचीन प्रसिद्ध मंदिर है। अतः महाकालेश्वर में ''महामृत्युजंय '' व अन्य अभिषेक, मंगलनाथ में मंगल ग्रह की शांति के लिये भातपूजा तथा बृहस्पति मंदिर में गुरू शांति के लिये पीली पूजा का विशेष महत्व है। सृष्टि की केन्द्र स्थली होने से नवग्रह शांति का भी यहाँ विशेष महत्व है। विद्वानों की नगरी होने से यहाँ के हर परामर्श व कर्मकाण्ड को प्रमाणिक माना जाता है।

एक छत के नीचे सम्पूर्ण समाधान

यहाँ आप प्राप्त कर सकते हैं ज्योतिष की सभी विधाओं के ख्यात विद्वानों का मार्गदर्शन, वास्तु दोष से मुक्ति के लिये विख्यात वास्तुविदों का परामर्श, कार्य के 'शुभ' आरंभ के लिये विशेषज्ञों से प्रमाणित मुहूर्त, वेदपाठी विद्वानों द्वारा नवग्रह शांति, मंत्र जाप, मंगल दोष निवारक अनुष्ठान (भातपूजा), वेद विद्वानों से वैदिक कर्मकाण्ड-अनुष्ठान आदि सेवा उपलब्ध है। इसके साथ ही हस्तरेखा के ख्यात विद्वानों द्वारा समाधान, कालसर्प दोष निवारण अनुष्ठान, ज्योतिष मर्मज्ञों द्वारा प्रमाणित सूक्ष्मतम् गणनाओं से युक्त जन्म पत्रिका निर्माण आदि सेवाऐं भी प्राप्त हैं। इनके साथ ही रत्न विशेषज्ञों द्वारा परीक्षित असली रत्न, उपरत्न, सिद्ध माला, रुद्राक्ष आदि भी यहाँ जनहित में उचित मूल्य पर उपलब्ध करवाऐ जा रहे हैं।

जिस तरह किसी भी वस्तु का स्थान वास्तु को प्रभावित करता है, ठीक उसी तरह उसका आकार भी प्रभावित करता है। कुछ आकृतियाँ हमारे लिये शुभ होती हैं, तो कुछ अशुभ।

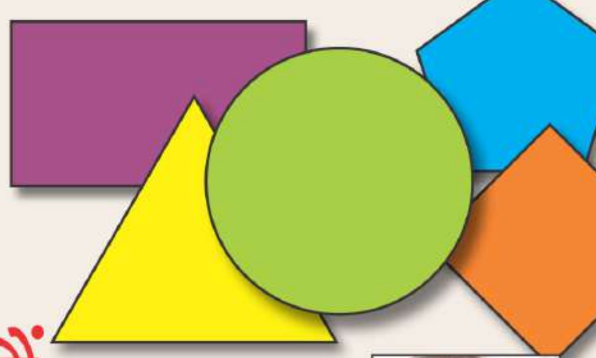

आकार भी तय करते हैं सुख-समृद्धि

अनुपमा बिहानी, दिल्ली

वास्तु एक विज्ञान है जो जीवन के पञ्च तत्वों से जुड़ा है, यह हमें अनेकों रूप में लाभ पहुँचाता है। यह तो आपने सुना होगा, विज्ञान कहता है कि कोई भी वस्तु जो जगह घेरती है वह पदार्थ है। मैं वास्तु सलाहकार अनुपमा बिहानी 2005 से इस क्षेत्र में काम कर रही हूँ और मेरा दृढ़ विश्वास है कि जो कोई वस्तु जगह घेरती है वह हमारे वर्तमान और भविष्य के निर्माण में योगदान करती है। सिर्फ वस्तु ही नही बल्कि रंग और आकार भी हमें अनुकूल/प्रतिकूल परिणाम देते है। आज हम आकार पर ही चर्चा करेंगे। चौकोर, गोलाकार, आयताकार, अंडाकार, पंचभुज, षट्भुज चाहे कोई भी आकार हो सभी ऊर्जा निर्माण करते हैं और इस ऊर्जा को बढ़ाते है। दिन-प्रति दिन की दिनचर्या में हम अनेकों वस्तुओं का उपयोग करते हैं, जैसे : दीवार की घड़ी, गैस सिलेंडर, डाइनिंग टेबल, पेंटिंग, सेंटर टेबल, कलाकृतियाँ, कलाई में पहनने की घड़ी, सीलिंग लाइट्स। ये हमेशा सही दिशा में रखे/लगाए जाएँ।

दिशा अनुसार आकृति

पश्चिम दिशा में दीवार पर लगी गोलाकार घड़ी यह सुनिश्चित करती है कि आप सही समय पर लाभदायक सौदे का प्रबंधन करेंगे। यदि आप छात्र हैं तो दिए गए समय में अपनी परीक्षा समाप्त कर लेंगे। पूर्व में रखी आयातकार खाने की टेबल, अच्छे सामाजिक जीवन की सुविधा प्रदान करती है, आप एक अच्छे मेजबान बनते हैं। इसी प्रकार दक्षिण दिशा में चौकोर सुनहरे फ्रेम में खिले हुए रजनीगंधा के फूलों का चित्र लगा देने से निवासी को समाज में अच्छा नाम व प्रसिद्धि मिलती है। उत्तर दिशा की दीवार पर पेंटागन के आकार में दर्पणों के समूह को लगाने से आपको अनंत अवसर प्राप्त होते है। यहाँ तक कि जिनके घर में सीलिंग लाइट गोलाकार लगी होती है वे नये विचारो को अपनाने की सोच रखते हैं और चौकोर सीलिंग लाइट्स वाले थोड़े संकुचित् विचार रखते है।

गोलाकार आकृति है निर्णायक

क्या आपने कभी ध्यान दिया कि कसीनों में टेबल गोल होते है? जिस चबूतरे के चारों तरफ़ पंच बैठते है वह भी गोल होता है। यह गोल आकार आपको ज्यादा अवधि के लिए अपनी सीट पर टिककर, बैठा कर रखता है। किसी न किसी निर्णय पर ज़रूर पहुँचते है या तो हार जाते है या जीत जाते है, लेकिन कही न कही पहुँच ज़रूर जाते है, जैसे कि आप गाड़ी चलाते वक्त देखते है गोल चक्कर। ये गोल चक्कर भी आपको किसी न किसी राह पर पहुँचा देता है। गाड़ी खरीदने के लिए जब आप एक शो-रूम पर जाते है तब आपने देखा होगा कि गाड़ी दिखाकर सेल्समैन आपको एक टेबल पर बिठा देता है और यह टेबल अगर आप ध्यान करेंगे तो गोल ही होती है - निर्णायक स्थान।

स्थिर रखने में भी गोलाकार मददगार

ज़रा सोचिए गाँव के कुएँ गोल आकार के क्यों होते है? क्यों कोई और आकार के नही होते? गोल आकार आपको बाँधने में मदद करता है जैसे कसीनो की टेबल पर जब आप बैठते है तो आपको जल्दी से उठने का मन नही करता। इसी तरह पंच जब अपना फैसला सुनाते हैं तो आप बैठकर टिककर उसको सुनकर ही उठते है। ऐसे ही बहते पानी को रोकने के लिए गोल आकार का प्रयोग किया जाता है इसलिए पानी कुएँ में स्टोर हो जाता है। ये सब कुछ वैज्ञानिक रूप से नियोजित है, यह सदियों से हैं। हम वास्तु विज्ञान की गहराई से अनभिज्ञ हैं लेकिन यह हमेशा से मौजूद रहा है। हमारी सोच हमारे जीवन को तब भी और आज भी प्रभावित कर रही है। ध्यान देने योग्य बात यह है कि किसी भी आकार का कितना प्रयोग करना उचित होगा क्योंकि "EXCESS OF EVERYTHING IS BAD..!" इसी प्रकार बाकी के आकार भी हमारी सोच को पूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं।

वास्तुशास्त्र वास्तव में क्या है? यह बहुत ही गहन प्रश्न है, परंतु सरल भाषा में कह सकते हैं कि किसी भी वस्तु में उसके स्वरूप का स्थापन प्रकृति के नियमों के अधीन रहकर करना, उसे हम वास्तु कह सकते हैं। लेकिन वास्तु वास्तव में यहीं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह हमारे आवास - व्यवसाय ही नहीं सम्पूर्ण स्थापत्य अर्थात् निर्माण को प्रभावित करता है।

अत्यंत विस्मयजनक है वास्तुशास्त्र

केसीआर तोषनीवाल
मुम्बई

वास्तु शब्द वैशाख महिने में बार बार सुनने में आता है। खास करके अक्षय तृतीया पर अनेक मकानों की वास्तु शान्ति तथा नये मकान का भूमि पूजन होता है। 'राजवल्लभ' वास्तुशास्त्र का एक अनुपम, विस्तृत एवं दुर्लभ ग्रंथ है, यह पुस्तक 100 वर्ष पहले ईस्वी सन 1891 में प्रकाशित हुई थी, इसकी प्रस्तावना की जानकारी के अनुसार 550 वर्ष पहले संवत 1480 में उदयपुर के महाराणा कुंभकर्ण के समय में श्री मंडन सुक्रधर ने एक ग्रंथ रचा था उसके आधार पर 'राजवल्लभ' सौ वर्ष पहले लिखा गया था। राजवल्लभ पुस्तक में शार्दुलबिक्रिडित छंद में एक श्लोक लिखा हुआ है उसके हिसाब से गृह आरम्भ एवं गृह प्रवेश करने से शोक उत्पन्न होता है, वैशाख में धन की प्राप्ति होती है, ज्येष्ठ में मृत्यु, आषाढ़ में पशुनाश, श्रावण में पशु की वृद्धि, भादवा में घर शून्य, अश्विन में क्लेश, कार्तिक में सेवकों का नाश, मार्गशीर्ष एवं पोष में धन-धान्य की प्राप्ति, माघ में अग्नि का भय एवं फाल्गुन मास में गृह आरम्भ या प्रवेश करें तो लक्ष्मी की वृद्धि होती है।

अधिकांश पुराणों में भी उल्लेख

वास्तु के मायने क्या हैं? वास्तुशास्त्र क्या है? वैसे तो यह बहुत ही गहन प्रश्न है, परंतु सरल भाषा में कह सकते हैं कि किसी भी वस्तु में उसके स्वरूप का स्थापन प्रकृति के नियमों के अधीन रहकर करना, उसे हम वास्तु कह सकते हैं। उदाहरणार्थ - कोई मंदिर बनाकर भगवान की मूर्ति रखने को केवल स्थापत्य कह सकते हैं, मतलब इमारत से विशेष कुछ नहीं परंतु मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा होने के बाद उसमें भगवान आकर बस गये ऐसा समझा जाता है और लोग पूजा करने लगते हैं। ये जो प्राण प्रतिष्ठा है इसको ही वास्तु पूजन कह सकते हैं। वास्तु पूजा कोई निरर्थक व्यायाम नहीं है। हिंदू पुराणों तथा वेदों में अथर्वेद, यजुर्वेद, भविष्य पुराण, मत्स्य पुराण, वायु पुराण, पदम पुराण, विष्णु धर्मोत्तर पुराण, गर्ग संहिता, नारद संहिता, शार्डगधर संहिता, वृहत संहिता आदि अनेक ग्रंथों में वास्तुशास्त्र का महासागर पड़ा हुआ है। वेदों, पुराणों, संहिताओं में छूटे, भूले वास्तु के साहित्य को संकलित करके 'राजवल्लभ' मय शिल्पम, शिल्प रत्नाकर, समरांगण सुत्रधार आदि अनेकों महाग्रंथ रचे गये थे जो अब मुश्किल से मिलते हैं एवं दुर्लभ हैं।

वास्तु विरूद्ध निर्माण कष्टप्रद

वास्तुशास्त्र का मतलब कुदरत के नियमों सिद्धांतों के अधीन रहकर निर्माण, घर, मंदिर, शहर, किला, बगीचा, खेत, फैक्ट्री, ऑफिस सहित कोई भी बाँधकाम/निर्माण करना आता है। इसमें नियम एवं सिद्धांत भंग करते हैं तो मनुष्य द्वारा किये गये निर्माण से कष्ट, हानि, मानसिक, शारीरिक एवं आर्थिक हानि, नुकसान उठाना ही पड़ेगी, इसमें संदेह नहीं। इन बातों को विज्ञान का लेप चढ़ाकर समझाना है तो इस प्रकार है कि पृथ्वी के चुम्बकीय प्रवाहों, दिशाओं, सूर्य की किरणों, वायु प्रवाह एवं गुरूत्वाकर्षण के नियमों का समन्वय पूर्णरूपेण वास्तुशास्त्र में है। हिंदू धर्म ग्रंथों में इस समय पर विस्तृत लिखा गया है। इसलिये इस विषय का कोई भी जानकार मनुष्य स्थापत्य के निर्माण में कमी हो तो तुरंत पहचान लेगा। यह आग, चोरी, लूटपाट, कोर्ट कचहरी के झंझट, बीमारी, मृत्यु, आर्थिक एवं मानसिक परेशानी एवं हानि इत्यादि प्रकार के खराब प्रभावों की चेतावनी दे सकता है। जहाँ प्रकृति के नियमों के अनुरूप पालन किया हो तो उसमें रहने वाले, सुख समृद्धि एवं यश, धन, धान्य प्राप्ति करते हैं, ऐसा कहा गया है। हम लोग कई बार देखते हैं कि एक छोटे से रूम में रहने वाला मनुष्य बहुत धनवान बनकर बंगले में रहने जाता है, परंतु पहले वाले रूम को बहुत शकुनी मानकर बेचता नहीं है, इसमें कितना योगानुयोग, वहम और तथ्य है, इम नहीं जानते परंतु इन घटनाओं के पीछे कोई अदृश्य बल काम करता है ऐसा मानने का मन जरूर होता है।

हर जगह वास्तु का प्रभाव

'वास्तुशास्त्र' केवल भवन निर्माण/बांधकाम के साथ ही निर्मित भवन के उपयोगों को भी विस्तृत रूप से बताता हैं। जैसे घर में रसोईघर, पूजाघर, शयनकक्ष, पानी की जगह, टायलेट, बाथरूम आदि, फैक्ट्रियों में मशीन के प्लेसमेंटस, रॉ मटेरियल रूम, स्टॉक रूम, स्टोर रूम, बैठक, जनरेटर रूम,अण्डग्राउण्ड वाटर टैंक, बोरवेल इत्यादि, आफिसों में मेन केबीन, अकाउन्टस रूम, तिजोरी, स्टॉक रूम, सेल्सरूम इत्यादि सभी निर्माणों के अंदर किस निर्माण में कैसे, किस जगह क्या काम, किस तरह करना चाहिये इसके लिए वास्तुशास्त्र विस्तृत दिशा निर्देश देता है। ऐतिहासिक एवं प्राचीन इमारतों को वास्तुशास्त्र की दृष्टि से निहारों तो आपको उनके बांधने की खूबियों, खामियों तथा उनके मालिकों के उतार चढ़ाव की हकीकतों का अदभुत सम्मिश्रण मिलेगा। दंग रह जाने लायक प्रयोगों के रूप में हमारे मित्रों और पड़ोसियों के घर, दुकान, फैक्ट्रियों आफिसों में फेरफार करके दिशा निर्देश दिये तो धंधा ही नहीं बाकी दूसरी मानसिक, आर्थिक, शारीरिक परेशानियां भी दूर हो गई।

शुद्ध वैज्ञानिक है वास्तुशास्त्र

वास्तु के तत्वों को अब वर्तमान वैज्ञानिक मूल्यों के साथ विनियोजन करते हैं। एक उदाहरण देकर समझाता हूँ- शास्त्रों के प्रमाण के अनुसार अग्नि को प्रज्जवलित करने के लिए अग्निकोण श्रेष्ठ है, पानी के लिए ईशान कोण श्रेष्ठ है। इसी आधार पर आपके घर, होटल का रसोईघर, फैक्ट्री का बायलर, जनरेटर, ट्रांसफार्मर रूम अग्निकोण में ही होना चाहिये। पानी की जगह अग्नि तथा अग्नि की जगह पानी का उपयोग करते हैं तो बहुत ही अनर्थ होता है और शांति तथा समृद्धि में बाधा, रूकावटें निरंतर बनी रहती है। इसी हिसाब से अग्नि रखने की जगह कुआं या पानी की टंकी हो तो धन हानि, स्त्री हानि, पुत्र हानि,बैर दुश्मन बढ़ने तक की शंका रहती है। पर यह घबराने की बात नहीं है, आपके स्थानापन्न को देखकर, फेर बदलकर इन गलतियों को दूर किया जा सकता है। वास्तुशास्त्र में दरवाजों का भी बहुत महत्व है। राजवल्लभ में 5वें अध्याय के मालिनी छंद में एक श्लोक है। उसका अर्थ इस प्रकार है- यदि दरवाजे अपने आप खुलते एवं बंद होते हैं तो भय पैदा करते हैं। द्वार की एक शाखा मोटी या दूसरी पतली हो तो भय पैदा करती है, शाखा के बिना द्वार हो तो स्त्री अथवा पुरूष का नाश होता है।

भूमि परीक्षण से शुरूआत

समय के बदले हुये दृष्टिकोण में जाति का महत्व आजकल केवल चुनाव में ही रह गया है, परंतु वास्तुशास्त्र वर्ण व्यवस्था के आधार पर ही जमीन पसंद करने को कहता है। उत्तर की तरफ पानी का बहाव जाता हो तो, ढाल वाली जमीन ब्राह्मण के लिये श्रेष्ठ है, पूर्व की तरफ पानी की गति वाली जमीन क्षत्रियों के लिए श्रेष्ठ है। दक्षिण की तरफ गति वाली जमीन वैश्यों के लिए श्रेष्ठ है तथा पश्चिम की तरफ बहाव, ढाल वाली जमीन शुद्रों के लिए उत्तम है। जिस जमीन पर घर बनाना हो उस जमीन पर पानी का बहाव पूर्व, ईशान और उत्तर दिशा की तरह हो तो सुख मिलता है। अग्निकोण की तरफ हो तो अग्नि का भय उत्पन्न करता है, दक्षिण की तरफ हो तो मृत्यु का नेत्रर्ऋत्य की ओर हो तो चोरी का, वायव्य कोण की तरफ हो तो धन्य का नाश तथा पश्चिम दिशा की ओर हो तो शोक व भय उत्पन्न करती है। इस शास्त्र में जमीन परिक्षण, वृक्ष लगाने, घर-मंदिर, तिजोरी रखने से लेकर शहर, उपशहर के आयोजन का स्पष्ट वर्णन दिया गया है। संस्कृत के छंदों वाले इस शास्त्र में छंद, अंकगणित, भूमि विज्ञान, ज्योतिष, नक्षत्र, सूर्य किरणों, चुम्बकीय, प्रवाहों आदि का इतना सुंदर समन्वय किया गया है कि दिमाग चकरा जाये। इस शास्त्र के निर्माण करने वाले अपने पूर्वजों का अनायास ही आदरपूर्वक स्मरण हो जाता है।

आज के आर्किटेक्ट के लिये भी मार्गदर्शक

राजवल्लभ के अनुसार 'शिल्पी स्थपति' (आर्किटेक्ट)' को स्थापत्य विद्या उपरांत, सामुद्रिक, ज्योतिष, वास्तुप्रत्यमान, लम्बाई, चौड़ाई, पत्थर का जड़ाव, चुनाई, गणित, छंद शास्त्र, यंत्र कर्म और पाषाण सिद्धी जैसी विद्या का ज्ञान होना चाहिये। आजकल के आर्किटेक्टों से इस विद्या की अपेक्षा कैसे रख सकते हैं, पर परिस्थिति इतनी हताशा जनक नहीं है। आज के विद्यार्थियों को गांव में भेजकर पुराने महलों, हवेली, झोपड़ों व घर की रचनाओं तथा उसमें रहने वालों के रहन-सहन का अभ्यास करने को कहना चाहिये। वास्तु शास्त्र में मध्य भाग ब्रह्म अथवा शक्ति केंद्र खुला रख कर तथा उस पर कोई चुनाई नहीं करने को कहता है तो आज के आर्किटेक्ट पश्चिम का अंधानुकरण कर स्काय स्केपर बनाते जा रहे हैं। वास्तु अनुसार सामान्य आदमी को मकान खरीदते, बनवाते समय मकान का मुंह आज बाजू के रास्ते, घर का दरवाजा, बांधनी देखनी चाहिये तथा मन में खटका पैदा करे इस प्रकार का कुछ महसूस नहीं होना चाहिये। घर के अंदर दरवाजे, रसोई, पानी रखने की जगह, सोने की जगह, पूजाघर इत्यादि योग्य होना चाहिये। सामान्य तरीके से उत्तर और पूर्व की तरफ जिस प्लॉट के रास्ते जाते हो वो श्रेष्ठ है, दक्षिण एवं दक्षिण पूर्व के रास्ते हो तो उस जगह से दूर रहना ही श्रेयस्कर है तथा पश्चिम, उत्तर-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण और पश्चिम के कोने में जाने वाले रास्ते के प्लॉट या मकान साधारण फल प्रदान करते हैं। जिस प्लॉट या मकान के चारों और रास्ते हों वो सर्वश्रेष्ठ है, उसका कोई सानी नहीं हो सकता।

वर्तमान में ज्योतिष में फलित कथन के लिये पाराशरी, जैमिनी आदि कई ज्योतिष पद्धतियाँ प्रचलित हैं। वैसे तो यह पद्धतियाँ अपना-अपना महत्व रखती है, लेकिन इनमें मात्र भाव व राशियों के आधार पर ही होने वाला फल कथन सटीक नहीं होता। इसी का समाधान है, कृष्णमूर्ति पद्धति जो 12 राशि के स्थान पर नक्षत्रों, उपनक्षत्रों व उनके भी उपभागों के आधार पर सूक्ष्म गणना हेतु प्रचलित है।

ऋषि बाहेती, स्वीडन

सटिक ज्योतिष फलित का आधार बनती कृष्णमूर्ति पद्धति

कृष्णमूर्ति पद्धति वैदिक एस्ट्रोलॉजी से अलग सूक्ष्म गणनाओं के लिए प्रसिद्ध है। यदि हम अन्य पद्धतियों की बात करें तो पाराशरी, जैमिनी आदि कई ज्योतिष पद्धतियां हैं, वे भी अपने आपमें पूर्ण हैं। कृष्णमूर्ति पद्धति कोई प्राचीन पद्धति नहीं है। जैमिनी सिद्धांत तो अपने आपमें पूर्ण सिद्धांत है जो हमारे मौसम आदि की गणना के लिए प्रसिद्ध है। कृष्णमूर्ति पद्धति में राशि को महत्व न देते हुए नक्षत्र को महत्व दिया गया है। दक्षिण भारत के श्री केएस कृष्णमूर्ति ने भारतीय एवं पाश्चात्य ज्योतिष का गहन अध्ययन किया तथा अपनी पद्धति में समावेश भी किया। उन्होंने भारतीय एवं पाश्चात्य दोनों पद्धतियों में कुछ वैज्ञानिक त्रुटियां महसूस कीं। उन्होंने महसूस किया कि भारतीय ज्योतिष की कड़ियाँ भारत में एक लम्बे समय तक परतंत्रता के काल में बिखर गयी या लुप्त हो गई। सूक्ष्म अध्ययन एवं शोध के पश्चात् श्री कृष्णामूर्ति महर्षि पाराशरजी की विंशोत्तरी दशा से भी बहुत प्रभावित हुए। महर्षि पाराशर के अनुसार कुंडली में चंद्र जिस राशि में स्थित होता है, उस राशि का या उसके स्वामी का प्रभाव बहुत कम होता है, किन्तु चंद्र जिस नक्षत्र में होता है, उसके स्वामी की महादशा होती है एवं जो नक्षत्र नवांश होता है, उसकी अंतर दशा होती है, जिसका प्रभाव मुख्यरूप से उस जातक पर होता है। विंशोत्तरी दशा के नियमों पर आधारित नियमों के आधार पर ही नक्षत्रों का विभाजन उप नक्षत्रों तथा उप उप नक्षत्रों में करके उन्होंने फलादेश की विद्या में एक नई पद्धति को जन्म दिया। यही नहीं, कृष्णामूर्ति जी ने चन्द्रमा ही नहीं, वरन शेष सभी ग्रहों की स्थिति नक्षत्र, उप नक्षत्र, उप नक्षत्रों में बांट दी।

कार्येश है फल कथन का आधार

कृष्णमूर्ति पद्धति किसी भी घटना की भविष्यवाणी करने के लिए यह सबसे सरल और सटीक तकनीक है। इस पद्धति में बहुत सारे श्लोक, सूत्र, अपवाद और अन्य जटिल नियमों को याद करने की आवश्यकता नहीं है। अन्य ज्योतिष पद्धतियों में कई भ्रांतियां भी है। केपी पद्धति भविष्यवाणी की नक्षत्र प्रणाली और इसके उपस्वामी पर आधारित है। केपी पद्धति के अनुसार एक ग्रह अपने भाव (जिन भावों का स्वामी है और जिस भाव में बैठा है) के अलावा अपने स्टार-लॉर्ड (नक्षत्राधिपति) के भावों का फल देता है अर्थात वह नक्षत्राधिपति जिन भावों का स्वामी है और जिस भाव में बैठा है। किसी भी घटना के होने या ना होने में कार्येश ही भूमिका निभाते हैं। यदि दशांतर्दशा आदि के स्वामी किसी एक घटना के होने के कार्येश हैं तभी उस दशा विशेष में वह घटना घटेगी और वह लाभप्रद होगी या हानिकारक, यह कार्येश का उपस्वामी निर्धारित करेगा। यदि कार्येष का उपस्वामी भी उस घटना से सम्बन्धित भावों का कार्येष है तो फल मिलेगा अन्यथा नही। यदि नकारात्मक भावो से सम्बन्धित है तो फल नकारात्मक मिलेगा।

ग्रह की अपेक्षा नक्षत्र अधिक बली

शास्त्रों के अनुसार ब्रह्मांड में सभी ग्रह 360 डिग्री के काल्पनिक राशि-चक्र में वृत्ताकार पथ पर भ्रमण करते हैं । इस राशि-चक्र को 30 डिग्री के 12 भागों में वर्गीकृत किया गया है, जिसे राशि चिन्ह या 'राशी' के रूप में जाना जाता है। इस प्रकार 360 डिग्री के राशि-चक्र में 27 नक्षत्र होते हैं जिन्हें 249 उपनक्षत्रों में विभाजित कर दिया जाता है और इन 249 उपनक्षत्रों को और भी अधिक 2193 भागों में। 13 डिग्री 20 मिनट के 27 बराबर भाग, जिन्हें नक्षत्र कहा जाता है, फिर से, प्रत्येक तारे को 9 भागों में विभाजित किया जाता है, जिन्हें 'उप' के रूप में जाना जाता है। केपी सिस्टम में 'सब' डिवीजनों के लॉर्ड्स को 'सब लॉर्ड्स' के रूप में भी जाना जाता है। प्रत्येक राशि चक्र में 2 और 1/4 नक्षत्र होते हैं और हमने केपी प्रणाली में विशेष नक्षत्र के 9 डिवीजनों का अनावरण किया है। इन 9 डिवीजनों में से हर एक भाग कुछ ग्रहों को आवंटित किया गया है।

ऐसे होता है सटिक फल कथन

केपी पद्धति में किसी भी फल के निर्णय के लिये केवल एक भाव नहीं बल्कि भाव का समूह होता है। प्रत्येक भाव से 12वां भाव नकारात्मक परिणाम देता है। किसी घटना के सकारात्मक या नकारात्मक फल ग्रह व कार्येश बताता है। इसके लिए दशा, भुक्ति अंतर्दशा के ग्रह के कार्येश देखना चाहिए। उदाहरण के लिए विवाह में सकारात्मक भाव – 3,7,11 तथा नकारात्मक भाव – 2,6,10 देखे जाते हैं। अगर सातवें भाव का सबलॉर्ड विवाह के लिए वचनबद्ध है कुंडली में, तो भी उसकी दशा एवं भुक्ति अंतर्दशा में सकारात्मक भाव 2,7,11 होंगे तभी विवाह संभव होगा। यदि 2,6,10 भाव सक्रिय होंगे तो नकारात्मक परिणाम आएंगे। इसी तरह नौकरी के लिए सकारात्मक भाव – 2,6,10 तथा नकारात्मक भाव – 1,5,9 महत्वपूर्ण हैं। इसी प्रकार अन्य गतिविधियों के लिये भी सटिक फलकथन किया जाता है।

कुलदीप सलूजा

कोरोना की पहली लहर के बाद आई दूसरी लहर ने इस महामारी को मौत की बीमारी ही बनाकर रख दिया। कई लोग ही नहीं बल्कि परिवार तक मौत के ग्रास बन गये। इन मौत के आंकड़ों को यदि वास्तु की नजर से देखा जाऐ तो ये अधिकांश मौतें ऐसे परिवारों में अधिक हुई जिनके मकानों में वास्तु दोष था। आईये देखें कौन सा दोष बना इस दौर में प्राणघातक?

वास्तुदोष ने बढ़ाये कोरोना से मौत के आंकड़ें

देश में कोरोना के कारण हो रही मौतों से सभी के मन में दहशत व्याप्त है। विशेषज्ञों द्वारा भारत में अगस्त-सितम्बर के महीने में तीसरी लहर की सम्भावना भी व्यक्त की जा रही है जो कि कोरोना की दूसरी लहर से भी ज्यादा तीव्र और खतरनाक स्तर की होगी। मृत्यु संसार का अटल सत्य है परन्तु असामयिक मृत्यु को अनहोनी कहा जाता है। जैसा कि हम कोरोना की दूसरी लहर में देख रहे है, देखते ही देखते कम उम्र के नौजवानों की भी मौतें हो रही है, जिन्हें कोई अन्य बीमारी भी नहीं थी। दुर्भाग्य से कहीं-कहीं तो बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक पूरा परिवार ही काल का ग्रास बन गया हैं। लगभग 30 वर्षों के वास्तु अध्ययन के आधार पर मैनें पाया कि जिन घरों में किसी भी कारण से अनहोनी होती है उन घरों में दो वास्तुदोष अवश्य होते है। पहला वास्तुदोष नैऋत्य कोण (दक्षिण और पश्चिम दिशा का कोना (SOUTHWEST CORNER) में और दूसरा ईशान कोण (उत्तर और पूर्व दिशा का कोना (NORTHEAST CORNER) में।

दोष बने भयावह

नैऋत्य कोण (SW) के वास्तुदोष जैसे - नैऋत्य कोण में भूमिगत पानी की टँकी, कुआँ, बोरवेल, सैप्टिक टैंक, बेसमेंट या किसी भी प्रकार से इस भाग में घर के अंदर या घर और कम्पाऊण्ड वॉल के बीच खुली जगह में इस भाग का फर्श नीचा हो या घर या कम्पाऊण्ड वॉल का दक्षिण, पश्चिम दिशा का यह कोना किसी भी रूप में बढ़ जाए या घर या कम्पाऊण्ड वॉल का मुख्य द्वार इस कोने पर हो या इस कोने के दक्षिण या पश्चिम दिशा में किसी भी ओर से रास्ता आकर टकरा रहा हो। इनमें से ही कोई एक दोष होता है। ईशान कोण (NE) के वास्तुदोष जैसे - घर के अंदर का इस भाग का फर्श या घर और कम्पाऊण्ड वॉल के बीच खुली जगह में इस भाग की जमीन का लेवल अन्य दिशाओं की तुलना में ऊँचा हो जाए, उत्तर और पूर्व दिशा के इस कोने की दीवार अन्दर की ओर दब जाए, कट जाए, गोल हो जाए या घट जाए। इनमें से कोई एक दोष होता है।

बिना दोष के मकान वाले हुए स्वस्थ

कोरोना महामारी में जिन घरों में नैऋत्य कोण (SW) और ईशान कोण (NE) के उपरोक्त दोष नहीं हैं वहाँ निवास करने वाले भी कोरोना से संक्रमित तो होते हैं परन्तु उनमें से ज्यादातर घर पर ही रहकर जल्दी स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करते हैं, उन्हें दवाईयाँ समय पर उपलब्ध हो जाती है। यदि किसी कारण उन्हें अस्पताल में भी भर्ती करना पड़े तो आसानी से अस्पताल में जगह मिल जाती है, ऑक्सीजन उपलब्ध हो जाती है, जीवन रक्षक दवाईयाँ, इंजेक्शन इत्यादि सभी सुलभता से प्राप्त हो जाते हैं। लेकिन जिन घरों में उपरोक्त में से एक भी वास्तुदोष है तो उन्हें कोरोना संक्रमण गम्भीर हो सकता है। सही इलाज मिलने में समस्याओं का सामना करना पड़ता है, इलाज में पैसा जरूरत से ज्यादा लगता है, परन्तु जीवन को कोई खतरा नहीं रहता। मेरी सलाह है कि, जिन घरों में नैऋत्य कोण और ईशान कोण में यदि कोई वास्तुदोष है तो उन्हें दूर कर अनहोनी से बचें। जिनके घर में अनहोनी हो चुकी है उन्हें भी परिवार के बाकी बचे सदस्यों की जीवन रक्षा के लिए घर के वास्तुदोषों को जल्द से जल्द दूर करना चाहिए। ध्यान रहे भाग्य से बढ़कर कुछ नहीं होता। वास्तु चाहे कितना ही खराब हो परन्तु भाग्य अच्छा हो तो अनहोनी से भी रक्षा हो जाती है।

डायमंड बुक्स, दिल्ली द्वारा प्रकाशित COMPLETE SCIENTIFIC VAASTU और IMPACT OF VAASTU ON NATIONS, RELIGIOUS & HISTORICAL PLACES का धर्मपत्नी कुलदीप सलूजा द्वारा 29 जून 2021 को विमोचन किया गया।

कहते हैं कि आस्था के आँखें नहीं होती। किसी व्यक्ति, शास्त्र एवं पथ के प्रति श्रद्धा होना अच्छी बात है लेकिन इन्हीं बातों के प्रति अंधश्रद्धा एवं अतिविश्वास विनाशकारी है, विशेषकर जब उस शास्त्र को जानने वालों का ज्ञान अपूर्ण हो। यही स्थिति बन रही है, विवाह के लिये कुंडली मिलान में मंगल दोष में जिसके कारण कई अच्छे भले रिश्ते इसके भय से टूट जाते हैं, जबकि मात्र एक प्रतिशत लोग भी सही ढंग से मंगली नहीं होते।

एक प्रतिशत लोग भी नहीं होते हैं मंगली

हरिप्रकाश राठी, जोधपुर

हमारे देश में विवाह मात्र एक पवित्र बंधन ही नहीं धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष का हेतु भी है। सदियों से हमारे यहाँ जन्मपत्री मिलाकर विवाह करने की प्रथा चली आ रही है। जन्मपत्री मिलान की प्रक्रिया में जब तक अष्टकूट अर्थात् गुण नहीं मिल जाते संबंधित व्यक्ति के साथ विवाह का प्रस्ताव अन्य सभी बातों को गौण कर ठुकरा दिया जाता है। गुण मिलान के साथ मंगल मिलान भी उतना ही महत्व रखता है क्योंकि ज्योतिषियों ने हौवा खड़ा कर दिया है कि मंगल के न मिलने पर लड़का अथवा लड़की विधुर अथवा विधवा हो जाऐंगे या फिर उनमें तलाक हो जाएगा। स्ट्रीट एस्ट्रोलोजर्स ने इस बात का आतंक जन-जन तक फैला दिया है। आतंकित माता-पिता विशेषतः आजकल जब एक-दो संताने ही होती हैं, इन पोंगा-पंडितों की बातों को मानने के लिए बाध्य हो जाते हैं। यह कैसी विडम्बना है कि हम ज्ञात तथ्यों जैसे शिक्षा, व्यक्तित्व एवं मेडिकल बातों को नजरअंदाज कर उस बात को सर्वाधिक महत्व देते हैं जो अज्ञात है एवं जिसके जानने वाले भी अपूर्ण एवं आंशिक ज्ञान से भरे हैं। एक आकलन के अनुसार 40 प्रतिशत कुण्डलियाँ गुण आधार पर आपस में नहीं मिलती और इसके साथ जब मंगल मिलान किया जाता है तो दस में से 8 कुण्डलियाँ आपस में नहीं मिलती। लड़के-लड़की के माता-पिता इन्हें मिलाते-मिलाते हताश हो जाते हैं। अंततः जहाँ भी मिलती है वहाँ बाकी सभी महत्वपूर्ण तथ्यों को दर किनार कर यह कह कर विवाह कर देते हैं कि 'बेटी का भाग्य बेटी के साथ' और ऐसा करते ही विवाह प्रणय का कारक न होकर विघटन का पर्याय बन जाता है।

प्रकृति मिलान है कुंडली मिलान

वस्तुतः गुण मिलान की प्रथा का इजाद दंपतियों के प्रकृति मिलान हेतु हुआ था। संसार में प्रकृति वैविध्य का मूल कारण है जातकों में सत्व, रज एवं तम में से किसी एक गुण की प्रधानता होना और यही कारण मनुष्यों के स्वभावों को भिन्न बनाते हैं। सत्व तम का विरोधी है एवं रज जातक को व्यावहारिक बनाकर दोनों के बीच की खाई को पाटता है। यूरोपियन मनोविदों ने इसे पेरेन्ट, एडल्ट एवं चाइल्ड कहकर विश्लेषित किया है। ज्योतिष ने इसे देवगण, मनुष्यगण एवं राक्षसगण का नाम दिया है। इसी तरह वर्ण, वश्य, राशी, भकूट आदि भी स्वभावगत वैविध्य को ही इंगित करते हैं। इनके मिलान के पश्चात् यह मान लिया जाता है कि दंपतियों में स्वभावगत समानता होगी एवं वे सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे। यहाँ तक तो ज्योतिष मार्गदर्शक का कार्य करता है लेकिन गुण मिलान के बाद मंगल मिलान पर ज्योतिषियों में भारी मत-मतांतर है एवं सभी अपनी-अपनी ढपली पीट रहे हैं। चूंकि अधिकतर ज्योतिषी अब व्यवसायी हो गये हैं, वे इस हौवे को बनाये रखना चाहते हैं ताकि उनकी दुकानदारी चलती रहे। अगर पैसा मिले तो उनके पास मंगल का काट है एवं न मिले तो जातक का भाग्य जातक जाने।

कल्याणकारी भी है मंगली होना

अगर ज्योतिषियों की बात मानें तो 33 प्रतिशत लोग मांगलिक होते हैं। मंगल प्रथम, चतुर्थ, सप्तम एवं अष्टम घर में होने पर जातक मांगलिक कहलाता है। दक्षिण भारत के ज्योतिषी मंगल के दूसरे घर में होने पर भी कुण्डली को मांगलिक कहते हैं। अतः दक्षिण में 45 प्रतिशत जातक मंगली होते हैं। अब अगर 45 प्रतिशत जातक मंगली हों एवं 40 प्रतिशत लोगों की गुण मिलान के आधार पर कुण्डली नहीं मिलती तो कुण्डली मिलान कितना दुष्कर होगा? इन्हीं समीकरणों के बीच ज्योतिषियों की बन आती है एवं उनका व्यवसाय एवं आतंक दिन-दिन अपना प्रसार बढ़ाता जाता है। वस्तुतः मंगली होना मेरी राय में श्राप नहीं वरदान है। अग्नि तत्व प्रधान ग्रह होने के कारण मंगल जातक में दो गुणों की प्रचुरता देता है, पुरुषार्थ एवं उत्तेजना। जीवन की सफलता के लिए यह दो गुण अपरिहार्य है इसीलिए मंगली लोगों को जीवन में अधिक सफल होते देखा गया है। मंगल का एक और विशेष गुण है कि मंगल विच्छेदात्मक शक्ति भी रखता है, लेकिन यह विच्छेदात्मक शक्ति मात्र मंगल ही नहीं रखता, शनि, सूर्य, राहू, केतु और अन्य पापी ग्रह भी रखते हैं। वस्तुतः इनकी मारक क्षमता मंगल से भी आगे हैं। अगर पापी चन्द्र एवं अयोगकारक वृहस्पति (धनु एवं मीन राशी में) सप्तम घर में उपस्थित हो जाए तो जातक के वैवाहिक जीवन का समूल नाश कर देते हैं। मिथुन एवं कन्या लग्नों में बृहस्पति पापी होते हैं एवं सप्तम स्वयं के घर में बैठकर भी जातक के वैवाहिक जीवन को छिन्न-भिन्न कर देते हैं। यह योग मंगली योग से भी अधिक दुर्दांत है।

हमेशा नहीं होता मंगल विघटनकारी

अगर मंगल की विच्छेदात्मक शक्ति को मंगल अथवा इन्हीं ग्रहों की विच्छेदात्मक शक्तियों से तटस्थ कर दिया जाय तो वैवाहिक विच्छेद की स्थितियाँ क्षीण हो जाती हैं। इस सिद्धांत के आधार पर 99 प्रतिशत कुण्डलियाँ स्वतः मिल जाती है। इतना ही नहीं मंगल अगर योगकारक हो जैसे कर्क और सिंह लग्न में अथवा स्वगृही हो अथवा उच्च का हो तो भी विध्वंसकारी नहीं होता। सप्तम घर पर वृहस्पति की दृष्टि एवं योगकारक वृहस्पति की उपस्थिति भी विच्छेदात्मक प्रभावों का नाश करती है। यही कारण है कि विश्व के उन देशों में भी जहाँ जन्मपत्रियाँ नहीं मिलाई जाती, 99 प्रतिशत दम्पति स्वतः समायोजन कर लेते हैं। संसार में सबसे अधिक तलाक लेने वाले देश अमेरिका में भी मात्र 5 प्रतिशत तलाक होते हैं। अगर पण्डितों की बात मानी जाय एवं मंगल को आधार बनाया जाय तो आधे दंपतियों में विच्छेद बन जाना चाहिए, लेकिन वस्तुतः ऐसा नहीं होता। 99 प्रतिशत समायोजन तो स्वयं विधाता ने कर दिया है। विडंबना है कि मात्र 1 प्रतिशत के हौवे को 99 प्रतिशत लोगों में फैला दिया गया है।

शनि की साढ़े साती के नाम से लगभग हर व्यक्ति परिचित हैं। इसका अर्थ ही सामान्यत: एक भयानक रूप में लिया जाता है। शनि की साढ़े साती यानि की भयानक दौर की शुरूआत। वैसे शास्त्रों में भी राजा हरिशचंद्र व विक्रमादित्य जैसे महारथियों के बारे में शनि की साढ़े साती को लेकर कई कथाऐं प्रचलित हैं, जिनमें इसने जातक का सब कुछ छिन लिया था। इस कथाओं के प्रचलन से आम व्यक्ति में शनि की साढ़े साती को लेकर कई भ्रांतियाँ व्याप्त हो गई हैं। हर कोई इसे नकारात्मक रूप में ही लेता है, लेकिन ऐसा ही नहीं है। शनि की साढ़े साती कई बार अत्यंत शुभफलदायी होकर उन्नति का कारण भी बन जाती है।

केवल अशुभ ही नहीं होती शनि की साढ़े साती

अखिलेश्वर शर्मा 'विधु'
उज्जैन

कब होती है शनि की साढ़े साती

*''रिफ: रूप धन भेषु भास्करि: संस्थितो भवति यस्य जन्मभात्।
लोचनोदर पदेषु संस्थिति कथ्यते रविजलोकजेर्जनै:।''*

अर्थात जिसकी जन्मराशि, जन्मराशि से द्वितीय और द्वादश भाव में शनि स्थित हो तो 'शनि की साढ़े साती' होती है। इसे शनि के गोचर में स्थितिवश ही माना जाता है।

इस तरह देखा जाऐ तो शनि जब गोचर में जातक की जन्म चंद्र राशि से पूर्व राशि में आता है, तो शनि की साढ़े साती की शुरूआत हो जाती है और जन्म राशि से अगली राशि में शनि के स्थित होने तक साढ़े साती रहती है। इस तरह गोचर में शनि की साढ़े साती में शनि जन्मराशि की पूर्व राशि, जन्म राशि व जन्म राशि के बाद वाली राशि में क्रमानुसार भ्रमण करता है। शनि एक राशि में ढाई वर्ष तक रहता है। अतः यहाँ इन कुल तीन राशियों में भ्रमण में कुल साढ़े सात वर्ष का समय लगता है। प्रत्येक राशि में शनि भ्रमण का ढाई-ढाई वर्ष का समय शनि की साढ़े साती के तीन चरण कहलाता है। जब शनि जन्म राशि से पूर्व अर्थात बारहवीं राशि में आता है, तो साढें साती 'सिर' में कही जाती है और यह चढ़ती साढ़े साती भी कहलाती है। जन्म राशि पर शनि के स्थित होने पर इसे 'हृदय' पर तथा अगली अर्थात् जन्म राशि से दूसरी राशि में शनि की स्थिति पर इसे उतरती साढ़े साती कहते हैं।

उदाहरणार्थ - यदि किसी जातक की जन्म कुण्डली में चंद्र सिंह राशि में स्थित है, तो उसकी जन्म राशि सिंह होगी। शनि गोचर में जब सिंह से पूर्व कर्क राशि में आऐगा, तो साढ़े साती की शुरूआत होगी और सिंह से अगली राशि कन्या में शनि के स्थित होने तक साढ़े साती रहेगी।

क्या होती है शनि की ढैया?

शनि की साढ़े साती की तरह ही शनि के गोचर वश ही ढैया की स्थिति भी होती है। जब शनि जन्म राशि से चौथी और आठवीं राशि में शनि होता है, तो इसे 'शनि की ढैय्या' कहते हैं। शनि की ढैय्या सम्बंधित राशि में गोचर अनुसार ही ढाई वर्ष की रहती है। उदाहरणार्थ- जैसे सिंह राशि वाले जातक की जन्म कुण्डली में गोचरवश जब सिंह से चौथी वृश्चिक राशि में शनि हो या आठवीं मीन राशि में शनि हो तो जातक शनि के ढैय्या के प्रभाव में रहेगा।

कब होता है अशुभ फल

शनि की साढे साती या ढैय्या का अर्थ ही यह नहीं है कि वह मृत्युकारक या अनिष्टकारक होगा। वास्तव में देखा जाऐ तो जब शनि 2, 7, 8 अथवा 12 वें भाव का स्वामी हो, वह अशुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, एवं शनि की दशा-अन्तर्दशा भी चल रही हो तो इन स्थितियों के योगवश कष्टकारी स्थिति बनती है। चंद्र राशि से शनि साड़े साती स्वास्थ्य और सामान्य सुखों पर प्रभाव डालती है। जब यही स्थिति सूर्य राशि से हो तो व्यवसाय प्रभावित होता है। इन सभी स्थितियों में गोचरस्थ शनि जिस भाव में होगा उससे सम्बंधित फल की हानि तो करेगा ही, साथ ही वह चंद्र राशि से सम्बंधित फल की हानि भी करेगा। जैसे जब शनि कर्क राशि में आऐगा तो भाईयों के साथ कुल व संचित धन तथा देह सुख की हानि भी करेगा।

कब बनती है कल्याणकारी स्थिति?

जब शनि जन्म कुण्डली में त्रिकोण, लग्न, तीसरे, छटे या ग्यारहवें भावों का स्वामी होकर मित्र या शुभग्रहों से दृष्ट होकर 5, 9, 3, 6 या ग्यारहवें भाव में स्थित हो तो शनि की साढ़े साती चमत्कारिक रूप से कल्याणकारी होती है। यह जातक को धन, मान-सम्मान और आर्थिक उन्नति सबकुछ देती है। यदि उस स्थिति में शुभ ग्रह की दशा अन्तर्दशा चल रही हो तो और भी अधिक शुभ फल प्राप्त होते हैं। इसमें शनि व राशि जिस भाव से सम्बंधित होगी उससे सम्बंधित फल की वृद्धि अवश्य ही होगी। निष्कर्ष रूप में देखा जाऐ तो शनि भी वैसा ही ग्रह है, जैसे अन्य ग्रह। यह भी शुभ तथा अशुभ दोनों ही फल अपनी स्थितिवश देता है। उनसे बढ़कर इसकी विशेषता यह है कि जब यह शुभ स्थिति में होता है, तो जातक को हर सुख की लगभग वर्षा ही कर देता है। वर्तमान दौर में जितने भी सफल लोग हैं, वे सभी शनि की कृपा से ही सफल हुए हैं। शनि की शुभता की सबसे बड़ी शर्त आचरण की शुद्धता है। यदि यह ठीक है, तो जन्म कुण्डली में शनि की अशुभ स्थिति भी इतनी अशुभ नहीं रह जाती।

ज्योतिष शास्त्र में कर्म की प्रधानता को स्वीकारा गया है। जन्म कुण्डली के माध्यम से भाग्य और कर्म क्षेत्र का आंकलन किया जा सकता है। किसी व्यक्ति की जन्मकुण्डली में उत्तम भाग्य का संकेत हो परन्तु वह उसकी प्राप्ति हेतु कर्म नहीं करे तो भाग्योदय संभव नहीं होगा। अर्थात भाग्य और कर्म के योग से ही राजयोग की प्राप्ति संभव है।

डॉ. महेश शर्मा, जयपुर
94143-70518

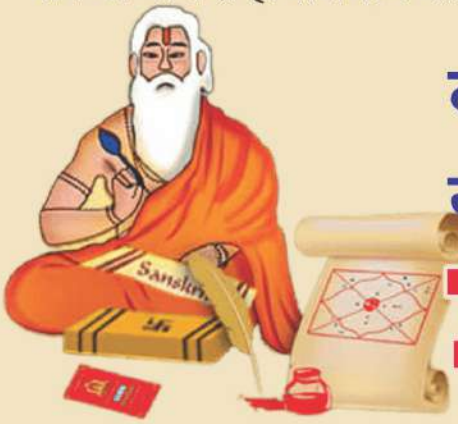

कर्म और भाग्य की युति से बनता है राजयोग

राजयोग जन्म कुण्डली में बनने वाला एक ऐसा सर्वोत्तम योग है जिसके प्रभाव से व्यक्ति विशेष भाग्यशाली बनता है तथा ऐसे राजयोग आयु, पदवी, धन, भाग्य, प्रतिष्ठा, सुख, संतोष आदि को बढ़ाने वाले होते हैं। प्रबलतम राजयोग का निर्माण जन्म कुण्डली के कर्म व भाग्य (नवम-दशम) भाव के स्वामी ग्रहों की युति से होता है। जन्म कुण्डली का नवम भाव सभी त्रिकोणों में और दशम भाव सभी केन्द्रों में बली होता है। दशम भाव ही कर्म भाव है जो सबसे बलवान होने के कारण ज्योतिष शास्त्र में कर्म की प्रधानता को प्रमाणित करता है। फलित ज्योतिष के प्रमुख ग्रन्थ लघुपाराशरी में नवम-दशम भाव के स्वामी ग्रहों द्वारा निर्मित श्रेष्ठतम राजयोग के संबंध में कहा गया है कि 'निवसेतां व्यत्ययेन तावुभौ धर्मकर्मणौः। एकत्रान्यतरो वापि वसेच्चेद्योगकारकौः।।' अर्थात भाग्येश और कर्मेश की युति होने पर चार प्रकार से राजयोग का निर्माण हो सकता है। 1. नवमेश और दशमेश आपस में स्थान बदलकर एक दूसरे के भाव में बैठे हों। जैसे वृश्चिक लग्न में नवमेश चन्द्रमा दशम भाव में और दशमश सूर्य नवम भाव में बैठे हों। 2. नवमेश और दशमेश युति करके एक साथ नवम अथवा दशम भावमें बैठे हों। 3. यदि केवल नवमेश दशम में हो या केवल दशमेश नवम भाव में हो तो भी राजयोग बनेगा परन्तु यह अल्पबली होगा। 4. नवमेश दशमेश में दृष्टि संबंध हो।

कैसे बनता है राजयोग

लघु पाराशरी के श्लोक 14 के अनुसार ''केन्द्रत्रिकोणपतयः सम्बन्धेन परस्परम्। इतरैरप्रसक्ताश्चेद् विशेषफलदायकाः।।'' जन्म कुण्डली में त्रिकोण भाव के स्वामी ग्रह यदि केन्द्र के स्वामियों से आपस में युति, दृष्टि, अथवा राशि परिवर्तन का योग इन्हीं शुभ स्थानों में बनाएं तो राजयोग का निर्माण होता है जिससे जीवन में शुभ फलों की अधिकता आती है। परन्तु यदि इन केन्द्रेश और त्रिकोणेष के साथ किसी अन्य भाव के स्वामी भी योग करें तो इस प्रकार बनने वाला राजयोग भंग हो जाएगा और शुभ फलों की प्राप्ति में न्यूनता आएगी। केन्द्रेश और त्रिकोणेश के परस्पर संबंध से राजयोग कैसे बनते हैं, इन्हें कुछ उदाहरणों द्वारा स्पष्ट किया जा रहा है- 1. केन्द्रेश किसी भी त्रिकोण भाव में त्रिकोणेष के साथ हों। जैसे कर्क लग्न में चौथे (केन्द्र) भाव का स्वामी शुक्र नवम त्रिकोण में गुरु के साथ बैठे। 2. केन्द्रेश किसी त्रिकोण में हो और त्रिकोणेश किसी भी केन्द्र में हो जैसे कर्क लग्न में ही दशमेश मंगल और सप्तमेश शनि दोनों पंचम भाव में एक साथ बैठे हों। 3. केन्द्रेश किसी भी त्रिकोण में हो और त्रिकोणेश किसी अन्य त्रिकोण में हो। 4. केन्द्रेश किसी भी केन्द्र में हो और त्रिकोणेश भी किसी केन्द्र में आ जाए। जैसे कर्क लग्न में नवमेष गुरू लग्न या सप्तम में हो और दशमेश मंगल चतुर्थादि किसी भी केन्द्र में हो। 5. केन्द्रेश अपने केन्द्र में हो, जैसे कर्क लग्न में लग्नेश चन्द्रमा और नवम् त्रिकोणेश बृहस्पति दोनों लग्न में स्थित हों तब केन्द्रेश व त्रिकोणेश दोनों ही एक प्रकार से त्रिकोण में भी होंगे और केन्द्र में भी। यही कारण है कि यह एक बहुत श्रेष्ठ राजयोग माना जाता है।

केन्द्रेश-त्रिकोणेश योगफल

1.लग्नेश-चतुर्थेश संबंध से-सुखी जीवन 2. लग्नेश-पंचमेश संबंध से-विद्वान-बुद्धिमान 3. पंचमेश-दशमेश संबंध से-राजकार्यों में कुशल 4. चतुर्थेश-पंचमेश संबंध से-बुद्धि के प्रयोग से सुखी 5. पंचमेश-सप्तमेश संबंध से-बुद्धिमती पत्नी से सद्गृहस्थ 6. चतुर्थेश-नवमेश संबंध से-भाग्योदय से सुखी 7. सप्तमेश-नवमेश संबंध से-भाग्यशाली पत्नी की प्राप्ति से सद्गृहस्थ 8. लग्नेश-नवमेश संबंध से-भाग्यवान 9. दशमेश-लग्नेश संबंध से शरीर सुख-राजसुख 10.नवमेश-दशमेश संबंध से-भाग्य सुख एवं राज्य सुख।

राहु/केतु भी बनाते हैं राजयोगः

राहु व केतु छाया ग्रह हैं। इनकी अपनी स्वतंत्र फल देने की सामर्थ्य नहीं होती है। यह जिस भाव में बैठेंगे, उसी भाव का फल देंगे। ये जिस राशि में होंगे, उस राशि का स्वामी यदि बलवान हो तो ये भी बलवान माने जाऐंगे। यदि उक्त राशि निर्बल हों तो ये भी निर्बल माने जाऐंगे। पाराशर मत के अनुसार यदि राहु केतु की अधिष्ठित राशि का स्वामी किसी

कुण्डली में योगकारक है तो ये भी योगकारक हो जायेंगे और वे योगकारक नहीं हैं तो ये भी योगकारक नहीं होंगे। राहु या केतु यदि केन्द्र या त्रिकोण में स्थित है और केन्द्र में स्थित होकर त्रिकोणेश से संबंध करें अथवा त्रिकोण में स्थित होकर केन्द्रेश से संबंध करते हैं तो राजयोग कारक होते हैं। मुख्यतः राहु-केतु अपनी अधिष्ठित राशि का ही फल देते हैं। उदाहरणस्वरूप यदि राहु वृश्चिक राशि में केन्द्र या त्रिकोण में बैठा हो तो वह वृश्चिक राशि के स्वामी मंगल के समान ही फल प्रदान करेगा तथा केन्द्र-त्रिकोण के नियमानुसार संयोग हो तो राजयोग कारक होंगे। राहु केतु किसी भाव में अकेले हों, तब तो भाव साहचर्य से इनका फल निर्णय हो जाएगा, लेकिन ये सदा तो अकेले नहीं होंगे। ऐसी स्थिति में जिस ग्रह के साथ होंगे उसकी शुभाशुभ फल शक्ति को भी प्राप्त कर लेंगे। अतः राहु केतु शुभ भावेश के साथ बैठें तो ये शुभ होंगे और अशुभ भावेश (3,6,8,11) के साथ बैठें तो ये भी अशुभ हो जायेंगे।

कैसे होता है राजयोग भंग

लघुपाराशरी के श्लोक 14 में बताया गया है कि केन्द्रेश व त्रिकोणेश का परस्पर संबंध राजयोग कारक होता है। यदि इनके साथ दूसरे ग्रहों का संबंध न हो तो ही विशेष फल मिलता है। इन दूसरे ग्रहों के संबंध में श्लोक 22 द्वारा स्पष्ट किया गया है कि ''धर्मकर्माधिनेतारणौ, रंन्ध्रलाभाधिपौ यदि। तयोः सम्बन्धमात्रेण, न योगं लभते नरः।।'' अर्थात केन्द्र-त्रिकोण के स्वामी ग्रहों की युति से बनने वाले राजयोग कारक ग्रहों से जब जन्म कुण्डली के अशुभ भाव अष्टम अथवा त्रिषड़ाय (3, 6, 11) भाव के स्वामी ग्रह भी युति कर लेंगे तो उनके शुभफल प्रदान करने की शक्ति कम हो जाएगी तथा जन्मकुण्डली में निर्मित राजयोग भंग हो जाएगा। उदाहरणार्थ-

(1) मेष लग्नः 3, 6 भाव का स्वामी बुध यदि केन्द्र-त्रिकोणेश सूर्य, चंन्द्र से संबंध स्थापित करे तो वह राज योग को भंग कर अपनी दशान्तर्दशा में व्यक्ति की उन्नति में बाधक बनेगा। (2) वृष लग्नः शुक्र, शनि यदि केन्द्र-त्रिकोण स्थान में संबंध बनाएँ तो व्यक्ति को विशिष्टता प्रदान करने में सक्षम है, परन्तु अष्टमेश गुरू के साथ में युति करने मात्र से राजयोग भंग हो जाएगा। (3) मिथुनः बुध लग्नेश व चतुर्थेश होने से योगकारक है। परन्तु इसी बुध से अष्टमेश शनि अपनी युति या दृष्टि द्वारा राजयोग को भंग करने में समर्थ होगा । (4) कर्कः पंचमेश-दशमेश-मंगल यदि लग्नेश चन्द्रमा के साथ सप्तम अथवा दशम भाव में योग करे तो यह प्रबलतम राजयोग होगा परन्तु अष्टमेश शनि अथवा व्ययेश-तृतीयेश बुध की युति अथवा दृष्टिमात्र से राजयोग भंग हो जायेगा। (5) सिंहः चतुर्थेश-नवमेश मंगल की लग्नेष सूर्य से केन्द्र त्रिकोण में होने वाली युति योग कारक है। इस योग को षष्ठेश शनि भंग करने में सक्षम होगा। (6) कन्याः लग्नेश-दशमेश बुध से मंगल अथवा शनि के संयोग मात्र से ही राजयोग भंग होगा क्योंकि मंगल यहां पर तृतीयेश-अष्टमेश तथा शनि षष्ठेश होकर अशुभ भावों के स्वामी है। (7) तुलाः शुक्र, शनि की केन्द्र त्रिकोण में युति निश्चित ही योग कारक है। परन्तु गुरू (तृतीयेश, षष्ठेश) का योग राजयोग भंग करेगा। (8) वृश्चिकः मंगल, चन्द्र तथा सूर्य की युति व्यक्ति को उन्नति दिलाएगी परन्तु बुध (अष्टमेश लाभेश) का इनसे योग हानिकारक है। (9) धनुः गुरू-सूर्य की युति श्रेष्ठता प्रदान करेगी परन्तु इनसे शुक्र (षष्ठेश,लाभेश) का संयोग घातक हो जाएगा। (10) मकरः शुक्र-शनि की युति राजयोग कारक है परन्तु गुरू अथवा सूर्य की दृष्टि या युति मात्र से यह योग भंग हो जायेगा। (11) कुंभः शुक्र-शनि केशुभ योग को यदि गुरू अथवा बुध प्रभावित करें तो राजयोग भंग हो जायेगा। (12) मीनलग्नः गुरू-चन्द्र मिलकर प्रभावशाली राजयोग का निर्माण करेंगे परन्तु यहां पर तृतीयेश-अष्टमेश शुक्र की युति से राजयोग भंग हो जायेगा।

उपायः राजयोग भंग कारक ग्रह के जप, दान, व्रत आदि करने से शुभफलों को प्राप्त किया जा सकता है।

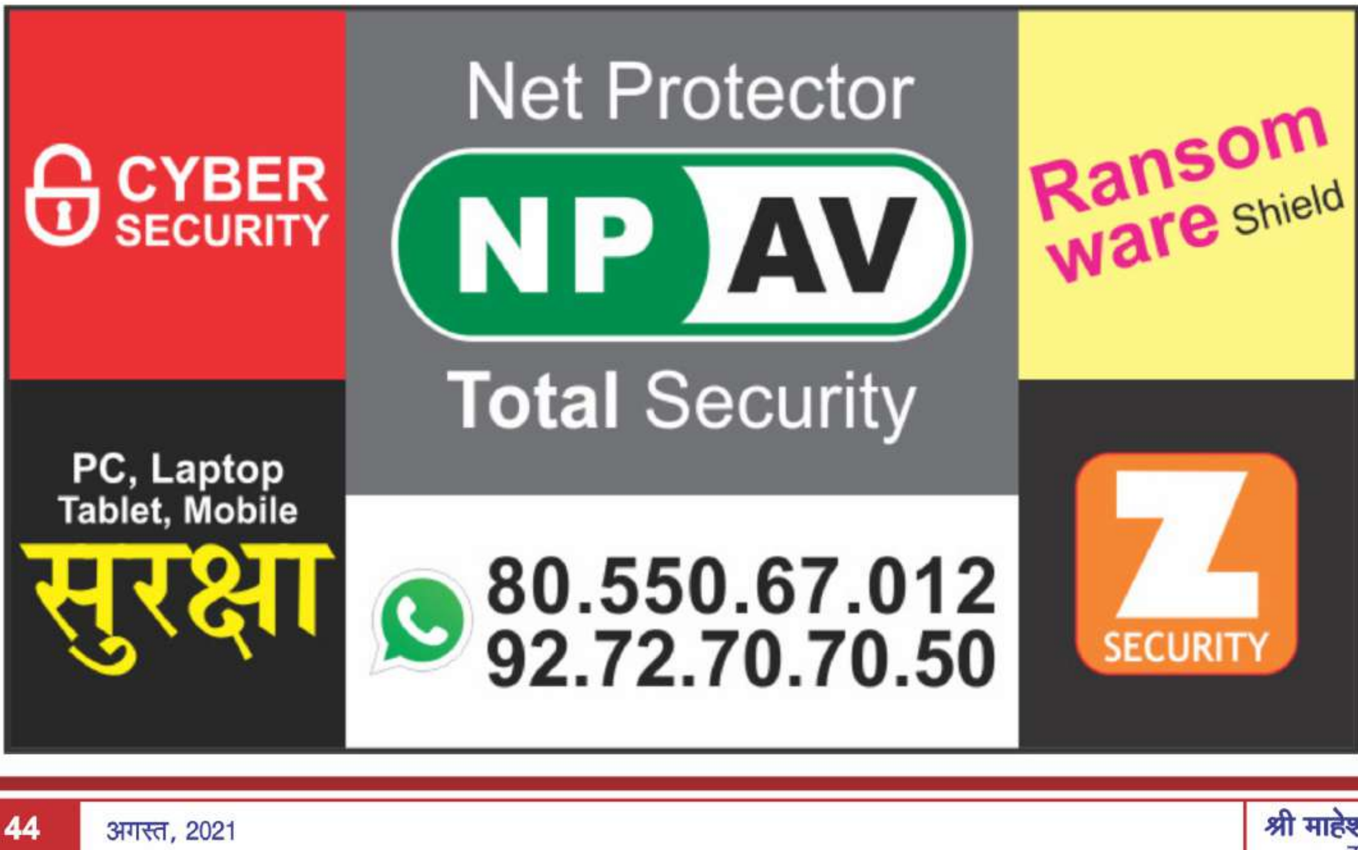

हथेली खोलेगी सफलता के राज

सफलता किसे अच्छी नहीं लगती? कौन व्यक्ति जीवन में सफल होने की कामना नहीं करता? सभी व्यक्ति खुद को अपने जीवन में सफल होते हुए देखना चाहते हैं। लेकिन सफलता आसानी से नहीं मिलती। उसके लिए चाहिए कर्म में कुशलता, दृढ़संकल्प, अखंड आत्मविश्वास, ध्येयनिष्ठा, अध्यवसाय लगन और कर्म की निरन्तरता। साथ में यदि भाग्य भी साथ देवे तो कहना ही क्या? तो आईये आपकी हाथ की लकीरों से जानें सफलता का राज।

डॉ. पुरूषोत्तम बिदादा
हैदराबाद

सफलता के मानकों के निशान आपके सफल होने की तीव्र महत्वाकांक्षा होने पर आपकी हथेली में उतर आते हैं। इनको हस्तरेखा शास्त्री आसानी से पढ़ सकते हैं। हथेली में 5 प्रमुख रेखाएं होती हैं, ये हैं- जीवन रेखा, मानस रेखा, हृदय रेखा, भाग्य रेखा एवं सूर्य रेखा। सफलता भाग्यरेखा एवं सूर्य रेखा से जुड़ी होती है। इसमें भी सूर्यरेखा काफी महत्वपूर्ण है। इससे ही व्यक्तित्व को प्रांजलता, प्रखरता और तेजस्विता मिलती है। सूर्य रेखा ही यश और कीर्ति रेखा है। इसका ऐसी प्रत्येक गतिविधि से संबंध रहता है। यह अनामिका अंगुली के नीचे सूर्य पर्वत पर एक लंबी रेखा होती है।

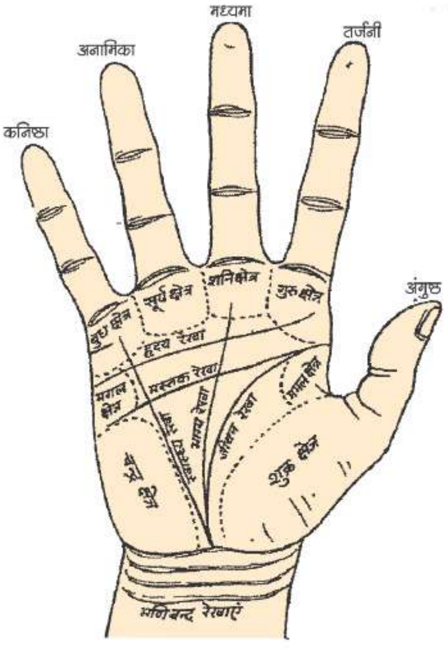

शनि रेखा भी अत्यंत महत्वपूर्ण

सफलता देखने के लिए शनि रेखा के साथ मानस रेखा और सूर्य रेखा भी देखना आवश्यक है। सूर्य रेखा शनि रेखा की सहायक रेखा है। शनि रेखा व्यक्ति के धन संबंधी प्रयत्नों की मात्रा बताती है। सूर्य रेखा यदि साथ हो तो उसे प्रयत्नों का फल अवश्य प्राप्त होता है, अन्यथा फल प्राप्ति में विलंब होता है। शनि रेखा में से निकलने वाली सूर्य रेखा मनुष्य के अपने ही प्रयत्नों से मिलने वाली सफलता को अभिव्यक्त करती है।

बदलती भी हैं हस्त रेखाऐं

हमारी कामनाएँ-इच्छाएँ-महत्वाकांक्षाएं जितनी तेज और प्रखर होती हैं, उतनी ही तेजी से हथेली में परिवर्तन आते हैं। आप असफल तब होते हैं, जब उथले मन से कार्य करते हैं। दृढ़ता और संकल्पपूर्वक कार्य करते रहने से असफलता पास भी नहीं फटकती। हमारे चित्त की दृढ़ता और संकल्प की शुद्धता का प्रभाव मस्तिष्क पर पड़ता है और मस्तिष्क में जो भी योजना संकल्पबद्ध होती हैं, उसका सीधा असर हथेली की रेखाओं पर पड़ता है और इस तरह हमारी पॉजिटिव सोच हमारे द्वारा सकारात्मक कार्य कराती है।

ये स्थितियाँ भी अत्यंत महत्वपूर्ण

- मंगल क्षेत्र से सूर्य रेखा का उदय संघर्षों से प्राप्त होने वाली सफलता का लक्षण है।
- चंद्रपर्वत से सूर्यरेखा का उदय एक शुभ लक्षण है। ऐसे व्यक्ति समाज और जनता के माध्यम से यश तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं। राजनीतिज्ञों, कवियों, लेखकों, वक्ताओं, गायकों और अभिनेताओं के लिए इसी उद्गम वाली सूर्य रेखा प्रभावशाली और तुरंत फलदायिनी होती है।
- जब सूर्य रेखा दोनों हाथों में सुस्पष्ट हो तो सफलता, सुदीर्घ हो तो धन और यदि ऐसी रेखाओं के साथ गुरू पर्वत समुन्नत हो तो व्यक्ति को महत्वाकांक्षी बनाती है।
- यदि सूर्य रेखा स्थान स्थान पर टूटी फूटी हो तब व्यक्ति के सारे प्रयत्न निष्फल हो जाते हैं। रेखा पर द्वीप, वृत्त आदि इसकी शक्ति घटाते हैं। सूर्य रेखा के अंत में तारा हो तब शुभ संकेत होता है।
- जब सूर्य रेखा के अंत में तीन शाखाऐं हों- जिनमें से एक-एक बुध और शनि पर्वत पर जा रही हों- तब व्यक्ति को असाधारण सफलताएं मिलती है।
- जब सूर्य रेखा विवाह रेखा को काटे तो व्यक्ति को अनमेल विवाह के कारण अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा से हाथ धोना पड़ता है।
- सूर्य रेखा को काटने वाली आड़ी रेखा प्रतिष्ठा हानि और सफलता में व्यवधान बताती है।
- जब सूर्य रेखा अच्छी हो किंतु सूर्य पर्वत पर दो लहरदार रेखाएं उपस्थित हों तब व्यक्ति प्रतिभा का अनुचित दिशाओं में प्रयोग करता है। यह हथेली के मध्य भाग से शाखा के रूप में उदित हो तो शुभ विवाह की सूचक है।
- सूर्य पर्वत पर खड़ी रेखाएं अधेड़ावस्था में सफलता बताती हैं। यदि सूर्य रेखा के साथ अकामक मंगल पर्वत भी विकसित हो तो पुलिस, सेना, खेल आदि क्षेत्रों में व्यक्ति यश प्राप्त करता है।

जब कभी पंच तत्वों का असंतुलन हमारे शरीर में होता है तो हमें बीमारी होती है, क्योंकि शरीर के सभी अंग किसी न किसी तत्व के साथ में संबंधित होते हैं। इसलिए अच्छी सेहत के लिए इन पांच तत्वों का घर में स्थान सही जगह और सही मात्रा में होना चाहिए। हेल्थ हमेशा हमारे शरीर के अंदर से नियंत्रित होती है। दवाइयां तो सिर्फ बीमारी से लड़ने के लिए काम में आती है। अगर आप घर के जोन और पंच तत्वों का संतुलन बनाए रखेंगे तो आपको जीवन में बीमारी नहीं होगी।

स्वस्थ जीवन का राज
पंचतत्वों का संतुलन

शिवनारायण मूंधड़ा
"वास्तु मित्र" रायपुर

सबसे पहला जोन एनएनई

इसको हम हेल्थ और हीलिंग का स्थान मानते हैं। यह मनुष्य के ओवरऑल हेल्थ और हीलिंग के लिए रिस्पांसिबल होता है। यह व्यक्ति के फिजिकल, मेंटल और फाइनेंशियल हेल्थ को दर्शाता है। अगर इस जोन में कोई इंबैलेंस हो गया और अगर यह जोन का इंबैलेंस नॉर्थईस्ट के साथ भी कंबाइंड हो गया तो ऐसे व्यक्ति को ऐसे घर में रहने वाले लोगों को पैरालिसिस, कैंसर, ल्यूकेमिया, मस्कुलर डिस्ट्रॉफी, ऐसी और भी अन्य बीमारियां हो जाती हैं।

दूसरा जोन ईएसई

जैसा कि हम जानते हैं यह जोन हमारे थॉट प्रोसेस को नियंत्रित करता है। जिंदगी में जो भी हम निर्णय लेते हैं उसके लिए यह जोन उत्तरदायी होता है। अगर यह जोन इंबैलेंस हो गया तो न केवल आपके निर्णय लेने की क्षमता पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा अपितु एंग्जायटी, ब्लड प्रेशर, शुगर प्रॉब्लम, थायराइड और एक्सीडेंट के साथ-साथ आग से नुकसान की संभावना भी बढ़ जाती है।

तीसरा जोन एसएसई

यह हमें पावर और स्ट्रैंथ देता है अगर यह जोन डिस्टर्ब हो जाए तो व्यक्ति अपने फिजिकल, मेंटल और फाइनेंशियल स्ट्रैंथ को खो देता है, क्योंकि अपने आपको कमजोर महसूस करता है और ऐसा लगता है कि उसका एनर्जी लेवल जीरो हो गया है। उसके जीवन में न कोई उत्साह होता है, ना कोई जोश, ना काम करने की इच्छा।

चौथा जोन एसएसडब्ल्यू

इसको हम डिस्पोजल के जोन के रूप में जानते हैं। अगर इस जोन में 3 साल से अधिक समय से आप सो रहे हों तो इसका रिजल्ट बहुत भयंकर होता है। जिंदगी के सभी आयामों में आपको नुकसान उठाना पड़ता है। ना केवल यह आपकी हैल्थ को डिस्ट्रॉय करती है बल्कि व्यक्ति कर्जे में आ जाता है और उसको पेट संबंधी भयंकर समस्याएं हो जाती हैं। टीबी जैसी बीमारी के लिए भी यह जोन जिम्मेदार होता है।

पाँचवा जोन डब्ल्यूएनडब्ल्यू

जिसको कि हम डिटॉक्सिफिकेशन या स्ट्रेस रिलीज की जोन के रूप में जानते हैं, पुराने समय में कोप भवन के रूप में महलों में विद्यमान रहता था जहां पर रानी, आया या कोई व्यक्ति जाकर अपने इमोशनल ब्लॉकेज को दूर कर लिया करते थे। अगर यहां पर बेडरूम है या यह जोन इंबैलेंस हो गया तो न केवल आप डिप्रेशन का शिकार होंगे अपितु आपको घुटनों का पेन या ज्वाइंट पेन और थायराइड जैसी बीमारियां घेर सकती हैं।

महेशचन्द्र सोनी

RSJ

रत्न श्री ज्वेलर्स & जेम्स

राशी के असली नगीनें एवं वास्तुदोष निवारक गणपति मिलते हैं

प्रताप चौराहा, शिव मन्दिर के पीछे, फतेहनगर
जिला-उदयपुर (राज.) 313205

पुखराज, माणक, मोती, मूंगा, नीलम, पन्ना, हीरा, गोमेद, लहसुनिया, ओपल वाईट टोपाज, यलो टोपाज, ब्लू टोपाज, टाइगर, कटेला, लाजवर्त, दाना फिरग, सुनेला, नीली, मून स्टोन, फिरोजा, स्फटिक, माछ मणि, चांदी में मछमणि लॉकेट, सरस्वती यंत्र में मछमणि लोकेट, श्री यंत्र में मछमणि लॉकेट, चांदी में माछमणि अंगूठी, सरस्वती यंत्र में छः मुखी रुद्राक्ष लॉकेट चांदी में, श्री यंत्र में सात मुखी रुद्राक्ष लॉकेट चांदी में, चांदी में यंत्र लॉकेट, बगलामुखी यंत्र, लग्नयोग यंत्र, भैरव यंत्र, कुबेर यंत्र, दुर्गा वीसा यंत्र, महामृत्युंजय यंत्र, महाकाली यंत्र, व्यापार वृद्धि यंत्र, गणेश यंत्र, महसुदर्शन यंत्र, हनुमान यंत्र, दुर्गा यंत्र, महालक्ष्मी यंत्र, वशीकरण यंत्र, नरसिंह देव यंत्र, वाहन दुर्घटना यंत्र, कार्यसिद्धि यंत्र, गायत्री बीसा यंत्र, रुद्राक्ष माला चांदी में, शुक्र मणि, पारद शिवलिंग, कुबेर जाल, लेबोरेटरी टेस्टिंग के साथ

रत्नश्री ज्वेलर्स & जेम्स, फतेहनगर 7976127457, 9414785547

आम व्यक्ति और सफल व्यक्ति की तुलना करें तो उनकी दिनचर्या में भी अन्तर होता है। वैसे अधिकांश सफल व्यक्ति भी नहीं जानते कि उनकी दिनचर्या में वास्तु किस तरह सफलतापूर्वक शामिल रहता है। बस वे तो स्वाभाविक रूप से दिनचर्या अपनाते है, लेकिन वह किन्ही कारणों से बन जाती है, भाग्योदयकारी। वैसे यदि हम अपनी दिनचर्या पर विशेष रूप से ध्यान दे तो हम कर सकते हैं, बहुत कुछ आमूल चूल परिवर्तन।

सरिता बाहेती, उज्जैन

जीवन को संवारती वास्तु अनुरूप दिनचर्या

- पूजा हमेशा पूर्व या उत्तर में मुंह करे ।
- पूजा नीचे जमीन पर ऊन की आसन रखकर ही करनी चाहिए। पूजा गृह में सुबह एवं शाम को दो दीपक एक घी का और एक तेल का लगाऐं।
- पूजा अर्चना होने के बाद उसी जगह पर खड़े होकर 3 परिक्रमा करे।
- पूजा घर में मूर्तियां 1,3,5,7,9,11 इंच तक होनी चाहिए उससे बड़ी नहीं।
- पूजा स्थान के पास में एक कलश जल का भरकर इसके उपर नारियल रखें तथा जल रोज सुबह बदल दें।
- हमेशा पूर्व या दक्षिण में सिर रखकर सोना चाहिए। पत्नी को पति के बाये हाथ की तरफ सोना चाहिए।
- सोते समय बाये हाथ की तरफ करवट लेटे पलंग कमरे के कोने में नहीं होने चाहिए शयन कक्ष के उपर की छत सपाट हो। पलंग कमरे में इस तरह लगाये कि सिर की तरफ दीवार हो आडीटेड़ी खांचे न हो।
- शयन के लिए पलंग हमेशा चार पांव वाला ही रखे। जिससे कि हवा का सरक्यूलेशन चारों तरफ तथा उपर नीचे बना रहे सोते तथा बैठते वक्त भी शरीर पर टांड तथा बीम्स नहीं आनी चाहिए। पैर के उपर पैर रखकर, दरवाजे की तरफ सिर रखकर तथा छत की तरफ मुंह रखकर शयन नहीं करे।
- नहाना, खाना, टेलीफोन, पढ़ाई आदि में हमेशा मुंह पूर्व या उत्तर की तरफ रखें।
- पढ़ाई करने वालों का मुंह पूर्व की तरफ हो और पढ़ाने वाले का मुंह उत्तर की तरफ।
- खाना बनाते वक्त हमेशा मुंह केवल पूर्व की तरफ ही हो।
- शौच करते समय मुंह पश्चिम या उत्तर दिशा में ही हो।
- मुख्य तिजोरी उत्तर या पूर्वाभिमुख करके रखे। उसके अंदर दो डिब्बे रखे एक में फिक्स रकम रखकर बंद कर देवे तथा दूसरे को खुला रखें, नियमित खर्च के लिए रकम डालते रहे, निकालते रहे।
- मुख्य द्वार पर उत्तर की दीवार पर घी और सिंदूर मिलाकर स्वच्छ एवं साफ स्वास्तिक बनावें।
- रसोई गृह में गैस भी प्लेटफार्म के अग्निकोण में रखे। यदि रसोई गृह में खिड़की हो तो उसके सामने गैस रखें। इस बात का खास ध्यान रहे कि गैस के उपर कोई भी केबिनेट तथा टांड नहीं हो कारण गैस की लौ सीधे छत तक बिना रूकावट के साफ जानी चाहिए।
- सुबह उठते समय और घर से बाहर निकलते समय पहला पैर स्वर (श्वांस) अनुसार रखें।
- आफिस या घर से बाहर जाते वक्त या तो पूजा कक्ष से या अपने शयनकक्ष से सीधे बाहर निकलते समय यदि कोई फोन आये तो बात नहीं करें तथा निकलते समय घर का कोई भी सदस्य आपको किसी भी कार्य के लिए टोंके नहीं। इसका भी खास ध्यान रखे। घर से निकलते समय कार स्कूटर उलटे नहीं निकालें, रात को ही उलटा खड़ा करे ताकि सुबह सीधा निकाला जा सके।
- घर से बाहर निकलते समय पहले पचास कदम तक पूर्व या उत्तर रोड की तरफ ही जाये।
- घर के अंदर कांटेवाले, दूधवाले, फल के पेड़-पौधे नही लगाए तथा तुलसी का पवित्र पौधा चाहे जितना लगाऐं।
- नहाते या सोते वक्त उलटे वस्त्र उतार कर ना छोड़े तथा नहाते व सोते समय निर्वस्त्र न रहें, अंतर्वस्त्र स्वयं ही धोऐ।
- रात को सोते समय एवं सुबह जगने पर अपने इष्ट का ध्यान जरूर करें।
- घर से निकलते वक्त रात्रि एवं दिन के ठीक बारह बजे का समय त्याग देवें तथा हमेशा पूरे सवा डेढे टाइम में निकले।
- मुख्य द्वार पर ड्योडी, डेली, पत्थर या लकड़ी की अवश्य होनी चाहिए।
- सुबह सूर्योदय से पहले उठ जाना चाहिए तथा रात को बारह बजे से पहले सो ही जाना चाहिए।
- खाने या पीने का कोई भी कार्य खड़े होकर नहीं करें बैठ कर करे।
- घर के दरवाजे एवं खिड़कियां अपने आप बंद तथा खुलने नहीं चाहिए। इसके लिए स्टापर आदि लगाने चाहिए।
- घर में महाभारत या लड़ाई करते हुए चित्र या मूर्तियां तथा पक्षियों के चित्र तथा मूर्तियों एवं पशुओं के चित्र तथा मूर्तियां नहीं होना चाहिए।
- रात्रि को घर का कचरा झाड़ू नहीं निकाले, निकालें तो कचरा बाहर नहीं फेंके। झाड़ू हमेशा आड़ा लिटा करके ही रखे।
- रसोई घर में परेंडा पणीयात्रा बाये की तरफ ही रखे तथा सिंक या वाशबेसिन भी बाये हाथ की तरफ हो।
- आवश्यक न हो तो दिन एवं संध्या के समय न सोये।
- मुख्य द्वार के सामने अंदर तथा बाहर कुछ भी समान या अवरोध द्वार पर नहीं होना चाहिए। जुते-चप्पल भी अस्त व्यस्त न हो व्यवस्थित हो।
- सुबह का स्नान 11 बजे से पहले कर।
- रात्रि भोजन एवं सोने में कम से कम 2से3 घंटे का अंतर रखे तथा 1 हजार कदम अवश्य चलें। भोजन करते वक्त कम से कम बात करनी चाहिए।
- दक्षिण की तरफ पैर करके भूलकर भी नहीं सोयें।

उपरोक्त सभी कार्य बताये गये अनुसार ही करें तो उत्तम होगा।

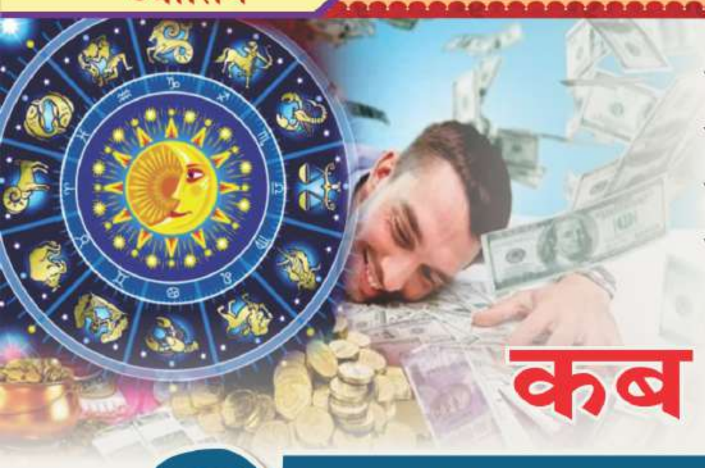

वर्तमान भौतिकवादी दौर में आर्थिक संपन्नता ही सर्वोपरी हो गई है। ऐसे में हर किसी का प्रश्न यही होता है कि उसकी आर्थिक स्थिति कैसी रहेगी? आइये जानें ज्योतिष के आयने में संपन्नता के योग।

कब मिलती है सम्पन्नता

विनोद रावल, उज्जैन

वर्तमान समय मे प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकताएं बढती जा रही है साथ ही साथ महत्वाकांक्षा भी अधिक हो रही है। इनकी पूर्ति के लिये रुपयों की आवश्यकता होती है। धन-रुपये पैसों से आज अधिकांश वस्तुओं का प्रबंध किया जा सकता है, इसी कारण व्यक्ति धन के पीछे भागता जा रहा है और उसके पाने के लिये निरंतर परिश्रम करता जा रहा है। कई बार व्यक्ति धन के मोह में इतना अधिक अंधा हो चुका होता है कि वह धन के लिये अपने शरीर को इतना कष्ट देता है कि उसे नष्ट कर लेता है। बाद में उसी शरीर को बचाने के लिये कमाया गया धन सारा का सारा खर्च-नष्ट करने पर भी शरीर को नहीं बचा पाता है। धन कमाना एक अलग बात है, धन संचय करना एक अलग कला/प्रवृत्ति है। धन तो सभी कमाते हैं परंतु संचय करना या उसे रोक लेना आसान नहीं होता। ज्योतिष ग्रंथों में धन संचय (लक्ष्मीवान) होने संबंधी अनेक योगों का उल्लेख है। यदि ये योग जातक की कुण्डली में हैं तो व्यक्ति निश्चय ही धनी होता है।

ये योग बनाते हैं सम्पन्न

सामान्य रूप से प्रथम दृष्टि में यह देखा जाता है कि कुण्डली में चंद्र-मंगल की युति (एक साथ होना) है अर्थात कुण्डली में चंद्रमा एवं मंगल एक ही कालम में भाव/स्थान में विद्यमान है, तो ऐसा जातक जीवन के आर्थिक रूप से सम्पन्नता प्राप्त करता ही है। चंद्र-मंगल यदि आमने-सामने हैं तो भी आर्थिक संपन्नता उत्तम रहती है। यदि चंद्र-मंगल आपस में राशि परिवर्तन कर रहे हों तो भी जातक को संपन्नता कठिन परिश्रम के उपरांत परंतु अवश्य मिलती है। इसके अतिरिक्त यदि द्वितीय स्थान का स्वामी ग्यारवें भाव में स्थित होकर द्वितीय भाव को देखता हो, यदि द्वितीय भाव का स्वामी उच्च का हो तथा उस पर शुभ ग्रह गुरू-चंद्र, बुध, शुक्र की दृष्टि हो, द्वितीय भाव का स्वामी नवम/पंचम में श्रेष्ठ स्थिति में विद्यमान हो, द्वितीय भाव का स्वामी गुरू अपनी उच्च राशि में नवम भाव में (वृश्चिक लग्न में) उपस्थित हो, तो भी अच्छी सम्पन्नता होती है। इसी प्रकार नवम भाव एवं लग्न अपनी उच्च राशि में हों या उत्तम स्थित में हो।

नवम भाव के विशिष्ट योग

नवम एवं लग्न का राशि परिवर्तन योग हो, लग्न एवं नवम भाव के स्वामी दोनों एक साथ विद्यमान हों, या केंद्र त्रिकोण में श्रेष्ठता से युक्त हों, लग्न एवं नवम भाव के स्वामी आपस में देख रहे है, लग्न का स्वामी लग्न को तथा नवम भाव का स्वामी नवम भाव को अथवा लग्नेश-भाग्येश को तथा भाग्येश लग्न को देख रहा हो केंद्रों के स्वामी अपनी उच्च स्थिति में विद्यमान हों। नवम एवं लग्न के स्वामी केंद्र में हों तथा उन पर शुभ ग्रहों (गुरु-चंद्र,शुक्र, बुध) की दृष्टि हो। इन योगों में से एक योग भी कुण्डली में है तो आप समझ लीजिये कि आप जीवन में निश्चित रूप से आर्थिक उन्नति करेंगे तथा अपने सोचे कार्यों में निश्चित रूप से सफलता प्राप्त कर लेंगे।

सम्पन्न बनाने वाले अन्य योग

अब प्रश्न उठता है कि क्या जिन व्यक्ति की कुण्डली में उपरोक्त योगों की अनुपलब्धता है तो वे अभाव में ही रहेंगे? नहीं इसके अतिरिक्त भी बहुत से ऐसे योग होते हैं जिनके कारण जातक अपने जीवन लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होते हैं। प्रायः देखा गया है कि कुण्डली में चंद्रमा की पीड़ित अवस्था होने पर जातक के पास धन तो खूब आता है परंतु टिकता नहीं है। ऐसे जातक को चंद्रमा का रत्न धारण करना लाभकारी सिद्ध होता है। साथ ही पीड़ा देने वाले ग्रह की शांति करना भी लाभदायक होता है। जिन जातकों की कुण्डली में लग्नेश (लग्न का स्वामी) तथा भाग्येश (भाग्य का स्वामी) यदि पाप ग्रह अर्थात् (सूर्य-मंगल-शनि-राहु-केतु) से पीड़ित हैं तो उन्हें धन संचय में काफी परेशानी आयेगी। यदि जातक संबंधित ग्रह की शांति, जाप अथवा दान करें तो निश्चित ही वह आर्थिक सम्पन्नता प्राप्त करेगा।

स्वर योग एक रहस्यमयी विद्या है। इसकी खोज प्राचीन समय में ही ऋषि मुनियों ने की थी। ऐसा भी कहा जाता है कि माता पार्वती ने शिवजी से पूछा था कि, संसार में आप हर मनुष्य के पास कैसे रहते हैं? तो उनका जवाब था, मैं हर व्यक्ति के पास उसकी श्वांस में रहता हूँ। स्वर विज्ञान पूर्णतः वैज्ञानिक एवं रहस्य के साथ रोमांच से भी भरा हुआ है। कभी इस विद्या का प्राचीन भारत में जनसाधारण में भी प्रयोग होता था परंतु कालांतर में यह विद्या लुप्त सी हो गयी है। वास्तव में यह इतनी प्रभावी है कि इसका उपयोग दैनिक जीवन में किया जाऐ तो अधिकांश समस्याऐं स्वतः नष्ट हो जाऐंगी।

सुखद जीवन की रहस्यमयी विद्या
स्वर विज्ञान

पुष्कर बाहेती, उज्जैन

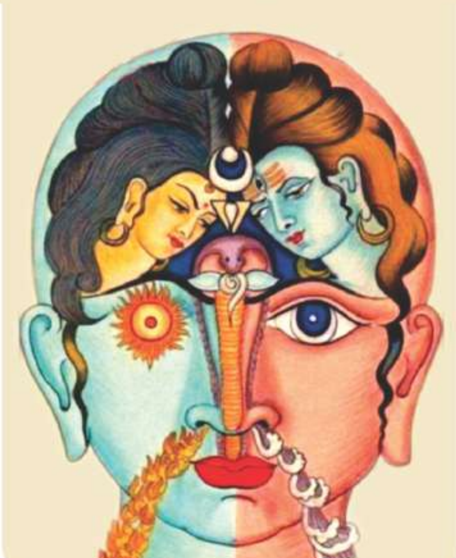

इस शास्त्र को ''शिव स्वरोदय'' भी कहते हैं। भगवान आशुतोष ने माँ पार्वती को स्वरविद्या का ज्ञान दिया था जो अपने आपमें विलक्षण एवं विचित्र है। इस विद्या से लौकिक और अलौकिक सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं। स्वर योग का संबंध हठयोग से भी है। बायीं नासिका से जब श्वांस चलती है तो 'हं' कहते हैं और दायीं नासिका से श्वांस चलती है तो 'ठं' कहते हैं। इस प्रकार 'हं' 'ठं' से मिलकर हठयोग बना, जिसका सांसों से संबंध है। इस ज्ञान की विशेषता ये है कि मनुष्य जो भी अपने जीवन में बनना चाहता है, वह सफल होगा कि नहीं इस विद्या से जान सकता है।

नाड़ियों पर आधारित सब कुछ शास्त्रों के अनुसार हमारे शरीर में 72 हजार 864 नाड़ियाँ हैं, जिनमें 24 नाड़ी प्रमुख होती हैं। उनमें 10 कुछ ज्यादा प्रमुख नाड़ियाँ होती हैं और इन 10 नाड़ियों में 03 अति महत्वपूर्ण नाड़ियां हैं जो कि हमारे जीवन में प्राण संचारित करती हैं, वे हैं इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना। यहां पर नाड़ी से तात्पर्य धमनियाँ या वे नसें नहीं हैं जिनमें रक्त का प्रवाह होता है बल्कि इनसे तात्पर्य यह है कि वह मार्ग है जिनमें प्राण संचारित होते हैं। जो एक्टिवली हमारे जीवन में कई कार्यों के लिए जिम्मेदार होती है। जो बदलती भी है और इन्हें बदला भी जा सकता है। सामान्यतः दोनों स्वर 60 से 80 मिनिट में बदलते रहते हैं। आयुर्वेद में यह कहा जाता है कि यदि आप शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ रहना चाहते हैं तो तीन नाड़ियों में जो रूकावटें हैं उनको दूर कर लें तो आप जीवन पर्यन्त स्वस्थ रहेंगे मतलब कि नाड़ियों में संतुलन बना लें। हमारी दिन में कई बार ये नाड़ियाँ बदलती रहती हैं। इड़ा मन से संबंधित कार्य के लिए है और पिंगला शरीर से संबधित कार्य के लिए। एक पुरूष है तो एक स्त्रीतत्व नाड़ी। एक नैगेटिव है, तो एक पॉजिटिव। अतः दोनों का संतुलन आवश्यक है। जैसे-जैसे हमारी नाड़ियाँ संतुलित होती जाएंगी हमारा जीवन भी संतुलित होता जाएगा।

▸ इड़ा नाड़ी

इसे चंद्र स्वर व चंद्र नाड़ी तथा स्त्री नाड़ी भी कहते हैं। यह नाड़ी बायीं नासिका से संचारित होती है। इसका रंग सफेद एवं पीला है। इसका स्वभाव ठंडा, शीतल और पॉजिटिव होता है। यह नाड़ी हमारी मानसिक ऊर्जा से संबंधित है। यह नारीत्व का भी प्रतिनिधित्व करती है। इसका उद्गम स्थल मूलाधारचक्र है। यह नाड़ी अंतर्मुखी करने वाली है। इसका संबंध हमारे दिमाग के दाहिने (राईट हेमेस्फीयर) से है। इड़ा नाड़ी को अमृत रूप भी माना गया है जो कि जगत का पालन करती है और यह सभी शुभ कार्यों को पूर्ण करती है। जिस व्यक्ति की इड़ा नाड़ी ज्यादा एक्टिव होती है वह व्यक्ति मानसिक रूप से ज्यादा सक्षम होता है। इस नाड़ी का जैसे जैसे प्रयोग बढ़ता है उसकी बुद्धि का विकास होने लगता है। जब इड़ा स्वर चल रहा हो व यदि पृथ्वी व जल तत्व साथ में हो वह व्यक्ति अपना कोई कार्य किसी वरिष्ठ या ऊंचे ओहदे के व्यक्ति से करवाना चाहता है तो वह उस कार्य में सफल होगा। छोटी यात्राओं के लिए इड़ा स्वर सदैव शुभ रहता है। चंद्र नाड़ी को सम समझा जाता है।

इड़ा नाड़ी में करें ये कार्य – पूजा करें, आभूषण धारण करें, संग्रह करें, कुआँ बनवाएँ, खम्बे गाढ़ें/पताका लगायें, यात्रा करें, विवाह करें। अलंकार धारण करें, पौष्टिक कार्य करें, मालिक से मिलें/राजकार्य को जायें, रसायन बनाएँ/खाएँ, गृह प्रवेश करें/जमीन खरीदें, खेती करें/उद्यम करें, सन्धि करें/करवाएँ, शिक्षा का शुभारम्भ करें, धार्मिक अनुष्ठान करें, सिद्धि प्राप्त करें। काल का ज्ञान प्राप्त करें, पशु खरीदें तथा घर लाएँ, हाथी घोड़े की सवारी करें, परोपकार करें, नाट्य करें/करवायें, यात्रा के समय गाँव या शहर में प्रवेश करें, स्त्रियाँ अपना बनाव श्रृंगार करें, तपस्या करें/कुण्डलिनी जाग्रत करें, दूर देश की यात्रा करें, गृहस्थ धर्म का पालन करें, धरोहर रखवा लें, तालाब बनवाएँ/पशुशाला बनायें,

प्रतिष्ठा करें। दान करें/मंदिर बनवायें, वस्त्र धारण करें, शान्ति हेतु कार्य करें, दिव्य औषधि बनाएँ/खाएँ, मित्रता स्थापित करें, व्यापार करें/नौकरी करें, यात्रा करें/वाहन खरीदें, भाइयों से मिलें, दीक्षा लें/यज्ञोपवीत पहनें, वेदाध्ययन करें/डिग्री लेने जायें, असम्भव रोगों की चिकित्सा करें/करवाएँ, गाना बजाना करें/ मनोरंजक कार्य करें, तिलक लगाएँ/लगवाएँ, जमीन जायदाद खरीदें, गुरु का स्वागत पूजन करें, विष स्तम्भन या नाश का उपाय करें, योगाभ्यास करें, योगासन करें। ये सभी कार्य जलतत्व में ही करें।

पिंगला नाड़ी

ये नाड़ी सूर्य स्वर के नाम से जानी जाती है। इसका स्वभाव गर्म होता है। यह हमारे दायीं नासिका से संचालित होती है। इसका रंग लाल है। इसको डोमिनेंट फैक्टर या इसे नैगेटिव नाड़ी भी माना जाता है। यह हमारे ब्रेन के बायें हिस्से (लेफ्ट हेमेसफियर) से संबंध रखती है। इसको पुरुष नाड़ी भी कहते हैं। इसका उद्गम स्थल है मूलाधार चक्र। यह मूलाधार चक्र के दाहिने हिस्से से निकलकर दायीं नासिका में पहुंचती है। जब हमारे दाहिने नासिका से श्वांस का फ्लो है तो हम समझ सकते हैं कि प्राण दाहिने स्वर यानि पिंगला स्वर में चालू है। जिसके शरीर में पिंगला फ्लो ज्यादा बहता है वह शारीरिक रूप से ज्यादा काम करने वाला होगा और उसके लिए शारीरिक कार्य ही उचित होता है। जब हम इनरजेटिक समझते हैं तब ये माना जाना चाहिए कि पिंगला नाड़ी का प्रयोग अधिक है। यदि किसी व्यक्ति का पिंगला स्वर पृथ्वी या जल तत्व के साथ हो ऐसे में वह अपने से नीचे ओहदे के व्यक्ति से कोई कार्य करवाना चाहता है तो निश्चित रूप से उस स्थिति में वह उसका कार्य करेगा, उसकी बात को मानेगा। इसका प्रयोग जब शारीरिक कार्य जैसे कसरत, युद्ध करना ऐसा कोई कार्य जो श्रम से संबंधित है उसमें सफलता के लिये किया जाता है।

पिंगला नाड़ी में करें ये कार्य - कठिन विद्या को पढ़ें या पढ़ाएँ, शास्त्राध्ययन करें, अस्त्र-शस्त्र अभ्यास व तन्त्र साधना करें, पहाड़ पर चढ़ें, वाहन पर चढ़ें, आकर्षण कर्म करें, अस्त्र-शस्त्र धारण करें, सांसारिक उपभोग करें, भोजन करें, अस्त्र-शस्त्र बनाएँ, यात्रा करें (दूर की), व्यायाम करें,अक्षरों का लिखना प्रारम्भ करें, विदेशी भाषा पढ़ें, इतिहास पढ़ें, स्नान करें, भरपूर सोया करें।

सुषुम्ना नाड़ी

जब प्राण का प्रवाह दोनों नासिका से चल रहा हो उसे सुषम्ना नाड़ी व सुषुम्ना स्वर एवं मध्य नाड़ी भी कहते हैं। इसको संतुलन की नाड़ी भी कहते हैं। इसका प्रयोग ध्यान, योगाभ्यास, प्राणायाम, भक्ति आदि कार्यों में होता है। चूंकि सुषुम्ना स्वर में अग्नि का वास होता है इसलिये सांसारिक कार्य निषेध माना गया। जब यह स्वर चलता है उस समय कोई भी सांसारिक कार्य सफल नहीं होता। इसलिए सुषुम्ना स्वर में सांसारिक कार्य नहीं करना चाहिये। इस स्वर का समय सामान्यतः चार मिनिट माना जाता है। वैसे यह हर व्यक्ति की प्रकृति पर भी निर्भर करता है। ऐसा देखा गया है कि जब संध्या का समय होता है तब सुषुम्ना नाड़ी के चलने की संभावना सबसे अधिक होती है। यह नाड़ी न तो नैगेटिव और न पॉजिटिव होती है। न स्त्रीप्रधान होती है न पुरूष प्रधान। सुषुम्ना में स्वर संचालित होता है तो हमारे चक्रों का जागरण होता है और वह कुंडली जागरण का कार्य करती है।

सुषुम्ना नाड़ी में करें ये कार्य - जब सुषुम्ना स्वर चल रहा हो तब चर व स्थिर कार्य न करें। मकान, मंदिर आदि की प्रतिष्ठा कार्य सुषुम्ना स्वर में नहीं करना चाहिये और न ही परदेश जाना चाहिए। सुषुम्ना स्वर में जो कोई विदेश जायेगा तो दुर्भाग्य, कष्ट और पीढ़ा और उसके चित्त में क्लेश बना रहेगा।

स्वर-परिवर्तन की विधियाँ-

(1) जो स्वर चलाना चाहो, उसके विपरीत करवट बदलकर उसी हाथ का तकिया बनाकर लेट जाओ। थोड़ी देर में स्वर बदल जायेगा। जैसे यदि सूर्यस्वर चल रहा है और चंद्र स्वर चलाना है तो दाहिनी करवट लेट जाओ।

(2) कपड़े की गोटी बनाकर या हाथ के अंगूठे से नासिका का एक छिद्र बंद कर दो। जो स्वर चलाना हो, उसे खुला रखो, स्वर बदल जायेगा।

(3) बगल में तकिया दबाकर रखने से भी स्वर बदल जाते हैं।

(4) अनुलोम-विलोम, नाड़ी शोधन, प्राणायाम, पूरक, रेचक, कुम्भक, आसान तथा वज्रासन से भी स्वर-परिवर्तन हो जाता है। स्वर-परिवर्तन में मुँह बन्द रखना चाहिये। नासिका से स्वर-साधन करें।

चलित स्वर की प्रधानता में कार्य-

(1) प्रातःकाल सूर्योदय काल के बाद भी चलित स्वर वाली करवट से उठो और बैठकर उसी तरफ की हथेली के दर्शन कर मुँह पर फिर चेहरे पर घुमाओ, फिर सारे शरीर के हाथ-पैर पर घूमाओ। इसके बाद मंत्र बोलो-

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती।
करमूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते करदर्शनम्॥

अर्थात् हाथों के अग्रभाग में लक्ष्मी, मध्य में सरस्वती और मूल में ब्रह्मा का निवास है। ऐसे पवित्र हाथों का प्रातःकाल स्वर के साथ दर्शन करना चाहिये। कर्म का प्रतीक हाथ ही है। कुछ भी प्राप्त करने के लिये कर्म जरूरी है। इसके बाद बिस्तर त्याग के साथ जिस ओर का स्वर चल रहा हो, उसी ओर का पैर पृथ्वी पर बढ़ाये और मंत्र बोलें-

समुद्रवसने देवि पर्वस्तनमण्डिते।
विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे॥

अर्थात् समुद्र रूपी वस्त्रों को धारण करने वाली, पूर्व रूपी स्तनों से मण्डित भगवान् विष्णु की पत्नी पृथ्वी देवि! आप मेरे पादस्पर्श को क्षमा करें। इस मंत्र से सिद्ध होता है कि भारतीय संस्कृति में जड़ वस्तुओं में चेतन को देखने की क्षमता है। तत्पश्चात् चलित स्वर के अनुसार कदम बढ़ाये। यदि चंद्रस्वर है तो 2,4,6 सम में और सूर्य स्वर है तो 1,3,5 विषम में कदम बढ़ाये। ऐसा करने से दिन का प्रारंभ शुभ होता है और इच्छित कार्य में सफलता मिलती है। आरोग्यता के साथ मनोकामना सिद्ध होती है।

(2) चलित स्वर की ओर से हाथ-पैर डालकर कपड़े पहनने से प्रसन्नता बनी रहती है।

(3) दूसरे को देने में, उससे ग्रहण करने में, घर से बाहर जाने पर जिस तरफ का स्वर चलित हो उसी हाथ तथा पैर को आगे करके कार्य करने में सफलता मिलती है। ऐसा करने से व्यक्ति सर्वदा सुखी और उपद्रवों से बचा रहता है।

(4) चलित स्वरों के अंगों को प्रधानता देकर हर स्थिति में कार्य किया जा सकता है और सफलता प्राप्त होती है। स्वर-ज्योतिष की जानकारी से मनुष्य शरीर और मन को नियंत्रित कर रोग, कलह, हानि, कष्ट और असफलता को दूर कर सकता है, इसके साथ ही वह जीवन को आनन्दमय बनाकर परलोक को भी सुधारकर कल्याण को प्राप्त हो सकता है।

दाम्पत्य जीवन में कदम रखते समय हर किसी की आशा सुखी दाम्पत्य की ही होती है, लेकिन सही कुण्डली मिलान के बावजूद कई बार दाम्पत्य सुख की हानि हो जाती है। वास्तव में देखा जाऐ तो वैवाहिक सुख-दुःख का अंतिम निर्णय नवांश कुण्डली करती है। आइये जानें कैसा रहेगा भावी दाम्पत्य जीवन?

दाम्पत्य के सुख का आधार नवमांश कुंडली

हेमंत कुमार रावल
मक्सी, जिला-शाजापुर

वर्ग कुंडलियों के अध्ययन एवं लग्न कुंडली विवेचन की सफलता का सिंहद्वार नवांश कुंडली है। यदि व्यक्ति का भाग्य ग्रहों से निर्धारित होता है जो स्वयं ग्रहों का भाग्य नवांश कुंडली द्वारा निर्धारित होता है। नवांश कुंडली को शाश्वत कुंडली भी कहा जाता है। फल-कथन में नवांश की महत्त्वता को अनुभव करते हुए यह कहना अतिशयोक्ति पूर्ण नहीं होगा कि नवांश देख और समझे बिना फलकथन करना पाप है। किसी भी वर्ग कुंडली में ग्रह के फल देने की क्षमता क्या रहेगी इसका निर्णय अन्ततः नवांश कुंडली ही करेगी। परम्परागत रूप से नवांश कुंडली का प्रयोग भावी दम्पत्ति के दाम्पत्य सुख-दुख का आकलन करने के लिये किया जाता है। वर-वधू के जन्म नक्षत्र से मिलान द्वारा सतही ज्ञान प्राप्त हो जाता है कि विवाह करने योग्य है या नहीं किंतु विवाह के पश्चात दाम्पत्य सुख, एक-दूसरे के प्रति आकर्षण-विकर्षण, विवाह की उम्र इत्यादि नवांश के बिना जानना सम्भव नहीं है।

ऐसे जानें कई महत्वपूर्ण तथ्य

▸ **विवाह का न होना -** जन्म कुंडली और साथ ही नवांश कुंडली का सातवाँ भाव पाप प्रभाव में है एवं किसी भी प्रकार से शुभ ग्रहों से युति या दृष्टि नहीं हों।

▸ **तलाक -** नवांश का लग्न या लग्नेश पाप पीढ़ित है एवं सातवें एवं आठवें भाव का सम्बन्ध स्थापित हो रहा है। ऐसी स्थिति प्रायः तलाक की ओर अग्रसर करती है।

▸ **दाम्पत्य सुख -** किसी व्यक्ति के जीवन में दाम्पत्य सुख का स्तर क्या है, इसके लिये नवांश के चतुर्थ भाव एवं भावेश का अध्ययन करेंगे। यदि चतुर्थ भाव या भावेश केवल शुभ ग्रहों के प्रभाव में है तो दाम्पत्य सुख आदर्श माना जावेगा। यदि शुभ एवं पाप प्रभाव दोनों हैं तो काम चलाऊ जैसे-तैसे गृहस्थी की गाड़ी को आगे सरकाने वाला माना जाऐगा। यदि केवल पाप संबंध है तो दाम्पत्य सुख का पूर्णतः अभाव माना जावेगा। लग्नेश कोई भी हो सदैव शुभ है, यदि लग्नेश का सबंध चतुर्थ भाव-भावेश से बनता है, तो वह बुरी स्थितियों से उबारने में सक्षम है।

▸ **विवाह का समय-** जातक के महादशानाथ के नवांश कुंडली के सप्तमेश से संबंध के आधार पर विवाह का समय निर्धारण सटिकता से होता है। इसके अतिरिक्त स्त्री जातिका का गुरु से एवं पुरुष जातक का सूर्य से संबंध भी विचारणीय है। स्त्री एवं पुरुष दोनों के नवांश में सप्तमेश एवं सप्तम भाव से शुक्र का संबंध भी विवाह के समय को इंगित करता है।

▸ **प्रेम विवाह -** नवांश कुंडली का पाँचवाँ और सातवाँ भाव यदि एक सुदृढ़ संबंध बना रहा हो तो व्यक्ति अपने निर्णयानुसार प्रेम-विवाह करता है। यदि यह संबंध शुभ ग्रहों के प्रभाव में बन रहा हो तो विवाह सफल रहता है अन्यथा नहीं।

▸ **विवाह का प्रस्ताव कैसा है?-** हमारे देश में जहाँ पर कि परिवार द्वारा चयनित जीवन साथी से विवाह किया जाता है। ऐसे में इंसान, अपरिचित व्यक्ति के व्यक्तित्व के बारे में जानने के अनेक इशारे नवाँश कुंडली करती है।

जीवन साथी का व्यक्तित्व भी जानें

▸ **संगीत प्रेमी-** यदि जातक के त्रिकोण (1,5,9) में सूर्य है तो वह संगीत का, वाद्य यंत्रों का प्रेमी रहेगा।

▸ **सुरीली आवाज-** यदि जातक के त्रिकोण में चंद्र है तो उसकी आवाज सुरीली रहेगी।

▸ **क्रोधी/योद्धा-** यदि मंगल त्रिकोण गत है तो व्यक्ति आसानी से क्रोध में आ जाने वाला रहेगा एवं दूसरों को बंदी बनाने के व्यवसाय का शौकिन रहेगा।

▸ **प्रज्ञावान-** यदि गुरु त्रिकोण में है तो व्यक्ति प्रज्ञावान, श्रेष्ठ सलाहकार, धर्म संगत जीवन यापन करने वाला और ज्ञानी रहेगा।

▸ **सेवा भावी-** शनि यदि नवांश में त्रिकोणगत है तो व्यक्ति परसेवा, परहितार्थ तत्पर रहेगा।

▸ **अन्वेषक-** राहु यदि नवांश में त्रिकोणगत है तो व्यक्ति खोजी, अन्वेषक, रहस्यमय विषयों के अध्ययन में उत्सुक रहेगा।

▸ **आध्यात्मिक-** केतु यदि त्रिकोणगत है तो व्यक्ति का झुकाव निःसंदेह अध्यात्म और निज कल्याण पर रहेगा।

▸ **कला एवं साहित्य प्रेमी -** यदि नवांश में शुक्र त्रिकोणगत है तो व्यक्ति विभिन्न कलाओं में उत्सुक, काव्य प्रेमी, कवि, गीतकार, नर्तक एवं सुरीला रहेगा।

वर्गोत्तम ग्रह से भी जानें यह

इसके अतिरिक्त वर्गोत्तम ग्रह की अवधारणा से भी आप अपने भावी जीवन साथी के व्यक्तित्व में आसानी से झाँक सकते हैं। नवांश कुंडली में कोई ग्रह किस प्रकार की राशि में वर्गोत्तम है, इसे जानकर उस व्यक्ति को त्रिदेव में से किसका आशीर्वाद प्राप्त है यह आसानी से जाना जा सकता है। यदि ग्रह चर राशि में वर्गोत्तम है, तो उस पर श्री ब्रह्मा जी का आशीर्वाद है। स्थिर राशि में वर्गोत्तम है तो उस पर श्री हरि भगवान विष्णु का आशीर्वाद है। द्विस्वभाव राशि में वर्गोत्तम है, तो श्री शिवजी का आशीर्वाद है। आशीर्वाददाता के स्वभावानुसार ही जातक का व्यक्तित्व एवं कार्यशैली का अधिकांश भाग निर्धारित हो जाता है।

IS:1786

CM/L - 6943589

GBR TMT

THE STRENGTH WITHIN

www.gbrmetals.com

Manufacturers of High quality MS Billets and TMT Bars

Works:
#295, G.N.T Road,
Peravallur Village,
Ponneri Taluk - 601 206
Tamil Nadu
Website: www.gbrmetals.com

Registered Office:
#4, Ramanan Road,
Chennai - 600 079
Tamil Nadu
Ph: +91 44 25292151
E-mail: sales@gbrmetals.com

वर्तमान दौर में ज्योतिष विज्ञान को एक वर्ग अंधविश्वास भी मान बैठा है तो दूसरा वर्ग इसे हमारा सनातन ज्ञान कहता है, जो हमारे ऋषि मुनियों की घोर तपस्या की देन है। ऐसे में यह विचारणीय हो गया है कि हम सोचें कि ज्योतिष विज्ञान पर विश्वास करना वास्तव में सार्थक है अथवा निरर्थक? ऐसा करके हम कर्महीन बन रहे हैं अथवा हम भाग्य का साथ प्राप्त कर रहे हैं? आज के तकनीकी से भरे इस युग में हमारा यह पुरातन ज्ञान हमारे लिये आखिर कितना उचित है? क्या यह वर्तमान दौर में भी हमारे लिये उपयोगी सिद्ध हो सकता है अथवा सिर्फ अंधविश्वास ही बन जाएगा? आइये जानें इस स्तम्भ की प्रभारी सुमिता मूंदड़ा से उनके तथा समाज के प्रबुद्धजनों के विचार।

''ज्योतिष विज्ञान पर विश्वास'' सार्थक अथवा निरर्थक ?

जीवन में ज्योतिष आटे में नमक जितना ही श्रेयस्कर

ज्योतिष विज्ञान अथाह है, जितनी अधिक गहराई में जाएंगे, उतना ही अधिक ज्ञान पाएंगे। पढ़े-लिखे होकर भी हम यह मानते हैं कि पृथ्वी से दूर होते हुए भी नवग्रह हमारे जीवन पर अपना प्रभाव छोड़ते हैं और हमारे जीवन में उतार-चढ़ाव नवग्रहों की ही देन है। ज्योतिषशास्त्र पर अंधविश्वास करते हुए अपना जीवन भाग्य के भरोसे छोड़ना सर्वथा अनुचित है। 'अजगर करे ना चाकरी पंक्षी करे ना काम' कहावत को मनमस्तिष्क से निकाल दें और 'कर्म प्रधान विश्व रचि राखा जो जस करहि सो तस फल चाखा' कहावत को जीवन में सफलता का सूत्र बनाएं। हमारा भाग्य जन्म से ही हमारे साथ जुड़ा होता है। उच्च कोटि का ज्योतिषाचार्य हमारी जन्मकुंडली देखकर हमारा पूरा जीवन खोलकर रख सकता है। पर उनकी भी कुछ मर्यादाएं/उसूल होते हैं। एक हद तक ही वह जातक की मदद कर सकते हैं। अच्छे और सच्चे ज्योतिष जातक की कुंडली देखकर कुछ हद तक पूजा-पाठ-दान-पुण्य द्वारा उसके जीवन में आनेवाले कष्टों और परेशानियों का प्रभाव कम करने की क्षमता रखते हैं। कभी भी अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए ज्ञान का दुरूपयोग नहीं करना चाहिए अन्यथा इसका दुष्प्रभाव अहित कर सकता है। हमें ज्योतिषशास्त्र की मदद अच्छे और विशिष्ट कार्यों के लिए लेनी चाहिए। जैसे देश के उत्थान और प्रगति में, शादी-ब्याह में कुंडली मिलान, शुभ-अशुभ मुहूर्त निर्धारण, धार्मिक कार्य इत्यादि। आटे में नमक जितना ही ज्योतिष और कुंडली को अपने जीवन में शामिल करें। हम अपने भाग्य को सिर्फ अपने कर्मों द्वारा बदल सकते हैं।

■ **सुमिता मूंधड़ा**, मालेगांव

ज्योतिष विज्ञान पर विश्वास उचित

भारत एक आध्यात्मिक देश है। भारतीय संस्कृति प्राचीन संस्कृति है क्योंकि जब विदेशी सभ्यताएँ पालने में थी तब हमारे यहाँ वेदों की रचना हुई थी। वेदों का ज्ञान वास्तविक व जीवन की कसौटी में खरा उतरता है। ज्योतिष शास्त्र षट दर्शनों में से एक दर्शन है जिसके अनुसार जो भी गणना होती है, वह प्रायः सत्य ही होती है। ज्योतिष विज्ञान वास्तव में मार्गदर्शक है लेकिन कुछ पाखण्डी व अल्पज्ञ व्यक्तियों की वजह से ज्योतिष को अंधविश्वास बताया जाता है क्योंकि उनमें पूर्ण ज्ञान का अभाव है। इसके सटीक होने का प्रमाण प्राचीन कालगणना और प्राचीन संस्कृत ग्रंथ हैं। जिसमें भवन निर्माण में जो वस्तुशास्त्र का प्रयोग कर बनाए भवनों का भेदन आज का इंजीनियर भी नहीं कर सकता। वेदों में समस्त सृष्टि का अथाह ज्ञान है तथा जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त संस्कारों का वर्णन हैं। इन्हीं संस्कारों से चरित्र निर्माण होता है। भारत को ''विश्व गुरू'' कहा गया, जिसकी वजह है चारों वेद वेदांग, श्रुति, कल्पसूत्र, पुरातन संस्कृति आदि। आज के परिप्रेक्ष्य में यह जरूर सही है कि इसका पूरा ज्ञान किसी को नहीं होने से इसको पाखण्ड मानते हैं। कहा भी है कि ''अधजल गगरी छलकत जाय'' अर्थात अधूरा ज्ञानहमेशा दुखदायी होता है। अतः हम ज्योतिष को अंधविश्वास नहीं कह सकते हैं लेकिन ज्योतिष विद्या की आड़ में बहुत से पाखण्डियों ने पूरा ज्ञान नहीं होने पर भी इसे अपना व्यवसाय बना दिया।

■ **शारदा चाण्डक (जाजू)**, उदयपुर

ज्योतिष है विज्ञान व विश्वास

ज्योति और ईष इन्हीं दो शब्दों से ज्योतिष का निर्माण हुआ है। ज्योति मतलब प्रकाश और ईष मतलब ईश्वरीय संकेत। ज्योतिष का मतलब है, किसी परेशानी तथा कठिनाइयों का स्पष्टीकरण करने वाली पद्धति। ज्योतिष विज्ञान एवं विश्वास है ना कि अंधविश्वास। सबकी सोच अपनी-अपनी होती है। कोई ज्योतिष पर विश्वास करता है कोई इसे अंधविश्वास मानता है। आधुनिक समय में राहु का काल है। लोग बिना किसी आधार की बातों पर विश्वास नहीं करते। व्यक्ति लम्बे समय तक कोर्ट कचहरी, शादी में कठिनाई झेलने के बाद ज्योतिषी के पास जाता है क्योंकि ग्रहों का हमारे ऊपर बहुत प्रभाव पड़ता है। लेकिन आज कल के ज्योतिषियों ने इसे पेशा बना लिया है, खाली रुपया कमाने का, ना कि किसी की सेवा करने का। लोग महंगा स्टोन या कोई बड़ी पूजा या आपकी कुंडली में पितृ दोष या कालसर्प जैसे दोषों से डराकर लोगों से कमाने में लगे हैं। भारतीय सरकार को ज्योतिष विद्या को आगे बढ़ाने में भी मदद करनी चाहिए। मेरा अनुभव तो है कि ज्योतिष विज्ञान एवं विश्वास है ना कि अंधविश्वास। पर हमें खाली ज्योतिष पर विश्वास करके कि जो होना है वो तो होगा ऐसा नहीं करना चाहिये। हमें अपना कर्म तो करना ही चाहिए। अच्छे कर्म करने से भी हमारे बहुत कष्ट दूर होते हैं।

■ **निशा माहेश्वरी**, मुंबई

ज्योतिष विज्ञान सनातन धर्म का प्राण

ज्योतिष एक विज्ञान है और विज्ञान कभी निरर्थक नहीं होता। विज्ञान सदैव एक आधार के साथ प्रस्तुत होता है और ज्योतिष विज्ञान भी एक ऐसा विज्ञान है जिसके मूल में बहुत सारे आधार स्थापित हैं। यह गणना का विज्ञान है, इसलिए जिनकी गणना सही होती है उनका फलित भी सही होता है। यदि कोई गणना में ही गलती कर देता है तो फलित कभी भी सही नहीं हो सकता और इसीलिए इस विद्या पर दोषारोपण हो जाता है। मैं लगभग 40 वर्षों से ज्योतिष का अध्ययन भी कर रहा हूं और फलित भी कर रहा हूं । कई बार आश्चर्यजनक रूप से मैंने यह पाया है कि तारीख के साथ भी फलित बिल्कुल सत्य हो जाता है। इसके साक्षी इंदौर उज्जैन में भी कई लोग हैं। ऋषि पाराशर ने ज्योतिष गणना की एक पद्धति विकसित की है। उस आधार से गणित करने वाले पाराशरीय पद्धति से गणित करते हैं। इसी प्रकार जो लोग कृष्णमूर्ति पद्धति से जन्मकुंडली देखते हैं वह नक्षत्रों के आधार पर विवेचना करते हैं। मूलतः यह गणित का शोध कार्य है और बहुत बारीक रूप से इसे देखा जाता है। वास्तव में ज्योतिष विज्ञान संकेत देने वाला विज्ञान है। यह एक टॉर्च की तरह काम करता है। हम इसके माध्यम से आने वाले भविष्य को समझ सकते हैं और उसका उचित निराकरण यदि हो सकता हो तो उसे करने का प्रयास कर सकते हैं। यह आत्मबल विकसित करने का काम करता है। हमारी पूजा पाठ आराधना कई बार मार्गदर्शक रूप में ज्योतिष का फलित ठीक करने में मददगार भी होती है। सनातन भारत का प्राचीन विज्ञान कई विदेशियों ने यहां से उठाया है और उनके देश में इस पर शोध के साथ-साथ बहुत सारे प्रयोग और बहुत बारीक अध्ययन किया जा रहा है। हमारे स्वयं के देश में यह विज्ञान उपेक्षित सा हो गया है, लेकिन ज्योतिष विज्ञान सनातन धर्म का प्राण है ऐसा मैं कह सकता हूं।

■ **सतीश राठी**, इंदौर

भविष्यवाणी का बाजार बनाना सही नहीं

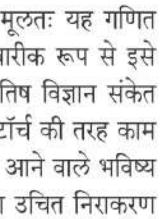

ज्योतिष विज्ञान यह बहुत ही वैज्ञानिक ज्ञान है। सूर्य, चंद्र, नव ग्रह इन सबकी स्थिति का पर्यावरण और मनुष्य के मन मस्तिक पर सूक्ष्म परिणाम होता है। जैसे मेरे पास पौधे की नर्सरी है तो अमावस्या के पश्चात पौधे पर कीटनाशक स्प्रे करना पड़ता है। एक ही कुंडली पर दो भविष्यवाणियाँ अलग होती हैं और मुख्यतः भविष्य का यह मार्गदर्शन करने के लिए है, डराने के लिए नहीं। हमारे संस्कृति में भविष्य से अधिक कर्म सिद्धांत को मान्यता दे दी गई है। हमें चाहिए कर्म अच्छे करें, तो जीवन में कठिनाइयों में भी हमारा जीवन अच्छा ही होगा। भविष्य का उपयोग केवल वातावरण की जानकारी के लिए करें परन्तु समय के अनुसार निर्णय ले। अपनी गलतियों या परिस्थितिवश आने वाली परेशानियों को भाग्य का नाम देकर डिप्रेशन या न सोच कर उन्हीं गलतियो को दोहराना ठीक नहीं। लाल रूमाल रखो, सब ठीक हो जायेगा, ऐसी बाते अंध श्रद्धा हैं। अच्छे पढ़े लिखे लड़के-लड़की व परिवार के विचार मिलते जुलते हैं, पर कुंडली के कारण शादी नहीं हो रही और अच्छे गुण मिलाकर भी शादी टूट रही है। हमारे जमाने में किसी की भी सगाई कुंडली को देखकर नही हुई। पर हम सबके संस्कार अच्छे थे। सुख-दुःख में साथ निभाया। कहने का तात्पर्य यह है कि ज्योतिष शास्त्र है, पर भविष्यवाणी का यह बाजार सच नही हो।

■ **लीला करवा**, लातूर

वर्तमान में इसका खास असर नहीं

भले ही ज्योतिष विज्ञान हमारे ऋषि मुनियों की घोर तपस्या द्वारा अर्जित सनातन ज्ञान हो, लेकिन वर्तमान मे व्यवहार में इसकी महत्ता सक्रिय रूप से प्रकट नहीं होती। एक तरफ भारतीय दर्शनशास्त्र मानता है कि जो होना है वह होकर रहेगा। इसी तर्ज पर कहा जा सकता है जो नहीं होना है, वह नहीं होगा। वर्तमान समय में ज्योतिष विज्ञान का कोई वैज्ञानिक दृष्टिकोण व्यवहारिक रूप से नहीं दिखता। हो सकता है उतने प्रामाणिक रूप से गणना करने वाले कोई विद्वान अब नहीं रहे। किसी जमाने का विशुद्ध रूप से विज्ञान कहा जाने वाला विषय ज्योतिष अब मात्र एक छलावा रह गया है। यह शत प्रतिशत सही है कि ज्योतिष शास्त्र एक विज्ञान सम्मत कला है। हमारे प्राचीन ऋषि-मुनि, साधु-संत इस विज्ञान के आधार पर गणना कर सटीक भविष्यवाणी करते थे और वह 100 प्रतिशत सही होती थी। लेकिन वर्तमान में कुल घोषित होने वाली भविष्यवाणियों में से 99.99 प्रतिशत भविष्यवाणियां गलत साबित होती हैं। चूंकि यह विज्ञान एक बेहद रहस्यात्मक आवरण ओढ़े हुए हैं। हर व्यक्ति जीवन की अनिश्चितता की वजह से अपना भविष्य जानने को बेहद उत्सुक होता है, जनमानस की इसी कमजोरी का फायदा उठाकर ये तथाकथित भविष्यवक्ता अपने भक्तों का भरपूर शोषण करते हैं। साररूप में ज्योतिष विज्ञान होने के बावजूद वर्तमान में अपना कोई महत्वपूर्ण असर नहीं रखता है।

■ **सुरेन्द्र बजाज**, जयपुर

ज्योतिष विज्ञान सच्चा मार्गदर्शक

ज्योतिष विज्ञान ऋषिमुनियों की घोर तपस्या की देन है। इसका अपना अलग महत्व है, जिसे झुठलाया नहीं जा सकता। वैज्ञानिक युग में इसका महत्व जरूर कम हो गया। इस युग के लोग आँखों देखी पर विश्वास करते हैं। ज्योतिष ज्ञान मन के विश्वास से चलता है। चंद ज्योतिषों ने ज्योतिष ज्ञान को अंधविश्वास का रूप दे दिया है जिससे लोगों का ज्योतिष ज्ञान से विश्वास उठता जा रहा है। ज्योतिष विज्ञान मार्गदर्शक या संकेतक का काम करता है। ज्योतिष विज्ञान बस दिशा दिखाता है। कर्म किये बिना फल की उम्मीद करना बेकार है। इसे भाग्य समझकर पूरी तरह से विश्वास करना स्वयं की कमजोरी है। ज्योतिष विज्ञान में ईश्वरीय शक्ति है, इसलिये लोग मन के सुकून के लिए इसका उपयोग करते हैं। ईश्वर से प्रार्थना तो हर युग में की जाती है। ज्योतिष ज्ञान हर युग में उपयोगी सिद्ध होगा। इस ज्ञान पर विश्वास करें, ना कि अंधविश्वास को बढ़ावा दें।

■ **किरण कलंत्री**, रेनूकूट

दुरूपयोग ने बनाया इसे अंधविश्वास

ज्योतिष शास्त्र अपने आपमें एक गूढ़ ज्ञान है जो कि हमारे ऋषि मुनियों की घोर तपस्या, खगोलिय अध्ययन एवं उस पर शोध की देन है। परंतु वर्तमान में इस ज्योतिष ज्ञान के स्वरूप में अविश्वसनीय परिवर्तन आ गया है। इसका मुख्य कारण है, इसके साथ अनावश्यक हस्तक्षेप। तात्पर्य यह है कि हमारे द्वारा स्वयं के स्वार्थपूर्ति के लिए इस ज्ञान एवं शास्त्र विद्या का अनुपयोग कर इसका गलत तरीके से प्रदर्शन करना, इस ज्योतिष विज्ञान की महता पर प्रश्नचिन्ह लगा रहा है। इस ज्ञान के गलत तरीके से गलत जगह पर उपयोग करने से इस विज्ञान के प्रति लोगों में अविश्वसनीयता फैल गई है और लोग इसे अंधविश्वास मानने लगे हैं, परंतु सही मायने में ग्रहों एवं नक्षत्रों का प्रभाव हमारी राशियों पर अवश्य पड़ता है और इस प्रभाव को जानने के लिए इस विज्ञान का गहन ज्ञान होना आवश्यक है।

■ **ममता लखाणी**, नापासर (बीकानेर)

वर्तमान दौर में भी यह महत्वपूर्ण

ज्योतिष विज्ञान और तकनीकी ज्ञान इनकी कोई स्पर्धा नहीं, ना ही कोई तुलना ही की जा सकती है। ज्योतिष एक गहरा रहस्य है जिसकी गणना के लिये भी वैज्ञानिक तथ्य और साक्ष्य की जानकारी आवश्यक है। ज्योतिष एक शास्त्र है भाग्य जानने के लिये, तो इसकी एक शाखा को गणना के लिये प्रयोग किया जाता है। सत्य है, कर्म ही जीवन पथ निर्धारित करते हैं किन्तु कर्म कितने भी सुनियोजित क्यों ना हों कभी -कभी जीवन का कोई एक पल भी जीवन के सहज़ बहाव को बदल देता है। किसी लाटरी का खुल जाना टिकिट लेने के कर्म से निर्धारित नहीं होता बस निमित्त बन जाता है। आज की उन्नत तकनीक ने सोच, संस्कृति और संस्कार तीनो को एक वृहद एवम विस्तारित धरातल दिया है। अनेक विडंबनाये टूटी हैं किन्तु कर्म प्रधान सोच के साथ भी नियति को पराजित करना संभव नहीं हुआ। अनेक स्थानों पर हम खुद को नियति के समक्ष बौना पाते हैं और अंत में यही आस्था के साथ स्वीकार भी करते हैं। तकनीकी विज्ञान जितना भी अधिक उन्नत हो जाये उसको आत्मसात करने के बाद भी इस जगत के आध्यात्मिक चिंतन में मूल रूप से कर्मों के जन्मजन्मांतर फल को भाग्य का निर्माता माना गया है। अतः दोनों ही एक दूसरे के विरोधी नहीं पूरक हैं विज्ञान की दो शाखाएँ तकनीकी ज्ञान आज की प्रमुख आवश्यकता और सुख शांती हेतु अध्यात्म की गहराई का ज्ञान देती दूसरी शाखा दोनों में संतुलन की आवश्यकता है विरोध की नहीं।

■ **पूजा नबीरा, काटोल,** नागपुर

विश्वास करना बिल्कुल सार्थक

पौराणिक काल से ही हमारे ऋषि-मुनि ज्योतिष गणना द्वारा पृथ्वी पर होने वाले ऋतु परिवर्तन, तिथि, समय, अंक, समुंदर में उठने वाले ज्वार-भाटे, सूर्य-चंद्र ग्रहण, प्राकृतिक आपदाओं, ग्रहों एवं नक्षत्रों की गतिविधियो के बारे में सटीक जानकारी देते थे, आज भी पंचांग के माध्यम से हमें यह मिल रही हैं। ज्योतिष विद्या एक प्रकार का गणित है, जो गणना पर आधारित है। वर्तमान युग में विज्ञान जिसे खोज मान रहा है, प्राचीनकाल में गणना के आधार पर बहुत सी जानकारियां तो भारत के महर्षि गण पहले ही दे चुके है। इसका उल्लेख हमें पुराणों में मिलता है जैसे - पृथ्वी से सूर्य की दूरी 100 योजन है, यह हमारे रामायण ग्रंथ में अंकित है जिसे विज्ञान द्वारा भी प्रमाणित किया जा चुका है। अगर हमारी जन्म-तिथि का समय एकदम सही है, तो विद्वान ज्योतिषी गणना के अनुसार पूरी जिंदगी के अच्छे-बुरे समय की जानकारी निकाल सकते हैं। माना कि होनी को कोई नहीं टाल सकता परंतु हम अपने आने वाले वक्त के अनुसार अपने-आप को मानसिक रूप से तैयार तो कर ही सकते हैं। मेरे अनुसार ज्योतिष एक विज्ञान है और उस पर विश्वास करना बिल्कुल सार्थक है। बस हमें आधी-अधूरी जानकारी वाले ढोंगी ज्योतिषियों के चक्कर में नहीं पड़ना चाहिए।

■ **भारती सुजीत बिहानी,** सिलीगुड़ी (पश्चिम बंगाल)

ज्योतिष विज्ञान पर विश्वास सार्थक है

ज्योतिष विज्ञान पर विश्वास सार्थक है, यह सही साबित करने के लिए कुछ मुद्दे रख रही हूं। जीव के जन्म के बाद उसके नामकरण संस्कार और कुंडली बनाते समय इसी का सहारा लेते हैं। धरती घूमती है, तो ऋतु चक्र बदलते हैं। इस तरह पूर्णिमा, अमावस्या, ग्रहण आदि कब आयेंगे, इसकी जानकारी शास्त्र के जानकार ज्योतिष विज्ञान के मदद से देते हैं। कर्कवृत्त, विषुवत वृत्त, रेखांश सब के अनुमान इसी विषय पर निर्भर होकर निकाले जाते हैं। ये बात और है कि ये अनुमान कभी-कभी पूरी तरह सही नहीं होते। हमारी बॉडी का भी ऐसा ही है। हम बरगद, पीपल वृक्ष की पूजा करते हैं, उसके नीचे ऋषि मुनि तप करते थे क्योंकि पीपल वृक्ष सबसे ज्यादा प्राणवायु बनाता है। ज्योतिष से हमारी बॉडी की नकारात्मक ऊर्जा में कमी आती है, ऐसे लोगों की संगति से सकारात्मकता बढ़ती है। जलवायु का अंदाज भी इसी से जुड़ा होता है। न्यूरोलॉजिस्ट ज्योतिष विज्ञान के सहारे भूत, भविष्य, वर्तमान की जानकारी बताते हैं। अतिवृष्टि या अवृष्टि आदि के साथ ग्रह तारों के अभ्यास द्वारा ज्योतिषशास्त्र द्वारा नौकायान, हवाई यात्रा आदि में मदद मिलती है।

■ **मीना कलंत्री,** (महाराष्ट्र)

कुछ हद तक विश्वास ठीक लेकिन अंधविश्वास न करें

मानव सदियों से किसी न किसी माध्यम से ईश्वर व ऋषि मुनियों के बारे में सुनते आ रहा है। आकाशवाणी की भविष्यवाणी, ऋषि मुनियों द्वारा की गई भविष्यवाणी आदि के कई प्रसंग हमारे जेहन में विराजमान है। यह निर्विवाद सत्य है कि अपने बारे में जानने की चाह हर इंसान के मन के द्वार पर कहीं न कहीं दस्तक देती है। इसी वजह से नामी गिरामी पंडितो के साथ अज्ञानी छोटे-मोटे पंडित भी अपनी दुकानदारी जमा कर बैठे हैं। शादी ब्याह में कुंडली का मिलान इन दिनो फैशन या जरुरत या संबंधो को टालने का माध्यम, यह एक विचारणीय प्रश्न। इस आधुनिक युग में मन को सांत्वना देने के लिए ज्योतिष पर विश्वास करना कोई गलत बात नहीं, पर अंधविश्वास करके लाखों रुपया खर्च करना, पंडितों के घर भरना, अपने घर की सुख-शांति खत्म करना बिल्कुल भी तर्कसंगत नही, यह मेरा मानना है। कई महान नामी-गिरामी स्वयंभू भविष्यवक्ता पंडित अपना ही भविष्य न पढने के कारण जेल की शोभा बढा रहे हैं, यह हम सभी जानते है। कहना बस इतना ही है कि ज्योतिष के पास जाने के बाद भी अपने विवेक से हर पहलू पर सोचने के बाद ही किसी भी काम को अंजाम दें। यह भी अटल सत्य है कि हर इंसान अपने होने वाले अनुभव के आधार पर ही किसी भी बात को स्वीकारता एंव नकारता है। यही है मेरी नजरो में सार्थकता एंव निरर्थकता।

■ **सतीश लाखोटिया,** नागपुर महाराष्ट्र

ज्योतिषशास्त्र विज्ञान का अभिन्न अंग

विज्ञान शब्द का एक अर्थ है, विशुद्ध (परिष्कृत) ज्ञान! या ज्ञान की पराकाष्ठा।अंधविश्वास तब होता है, जब हमें व्यक्तिगत रूप से उस विषय का ज्ञान नही होता और हम अपने से अधिक जानकार पर यह समझ कर विश्वास कर लेते हैं कि वह जो कह रहा है वह पूर्ण सत्य है। ज्योतषिशास्त्र का अर्थ ही है ज्योति अर्थात प्रकाश की ओर ले जाना है। ज्योतिषशास्त्र विज्ञान का अभिन्न अंग है।

इसमें काल गणना के जो सूत्र हैं, वे आज तक विफल नहीं हुए हैं। आज भी अगले सौ वर्षों में कब और कितने समय पर कौनसा ग्रहण, तिथि, त्यौंहार उत्सव आदि आने वाले हैं, उनकी अचूक जानकारी उपलब्ध हैं। हमारे यहाँ समय और राजनीतिक बदलाओं के कारण भले ही यह विज्ञान अब अध्ययन का भाग नहीं रह गया हो, परंतु आज विश्व की सभी खगोलीय और अन्य प्रयोगशालाओं का ज्योतिषशास्त्र अभिन्न अंग है। अतः इस विज्ञान को अंधविश्वास या अकर्मण्य बनाने वाला मानना सर्वथा अनुचित है। यह शुद्धरूप से गणितीय गणना है, जो हमें ब्रह्माण्ड में स्थित हमारे सौरमण्डल के विभिन्न ग्रहों की गति का हमारे ऊपर किस प्रकार का प्रभाव डालने वाला है, की सही-सही जानकारी उपलब्ध करता है। यह विषय इतना विशाल है कि, कुछ शब्दों में लिखना असम्भव है।

■ **महेश कुमार मारू,** मालेगांव

ऐसा ज्ञान ही बनाता है विश्व गुरू

एक तरफ हम ज्योतिष को विज्ञान मानते हैं और फिर बहस भी करते हैं कि यह सार्थक है या निरर्थक?

बरसों पहले सूरत का एक बड़ा उद्योगपति जापान गया था। जिस कारखाने में वह गया तो देखा कि पूरी फेक्ट्री वास्तु से बनी हुई है और शानदार चल रही है। जब उसके मालिक से वास्तु के बारे में पूछा तो उसने कहा कि हम नहीं जानते की वास्तु क्या होता है? पर जो दिशा जिधर है वो उधर ही रहेगी। WE CAN NOT CHANGE . इस बात का हमें अचूक ज्ञान है, और हम यह भी जानते हैं कि कौन सी दिशा का क्या मतलब है? अब आप समझिए कि उस जापानी उद्योगपति ने छोटी सी पंक्ति में कितना कुछ बता दिया हमारे आध्यात्मिक विज्ञान और ज्ञान को धूल-धूसरित कर दिया गया और आधुनिक विज्ञान नित नए अन्वेषण कर जगत को अचम्भित कर रहा है! ज्योतिष और उसकी गणितीय गणना न होती तो भूगोल-ग्रहण-नक्षत्र-तारे-आकाशगंगा- अंतरिक्ष जैसे शब्द हमारे पुरातन ग्रंथों में कैसे लिखे मिलते? उत्तरी या दक्षिणी ध्रुव या चुम्बकीय शक्ति...किन किन बातों की चर्चा करें - ये सब ज्योतिषीय गणना का ही चमत्कार है। हमारी गणित में तो सैकेंड का लाखवां हिस्सा भी बताया हुआ है। हाँ, बीच के काल में इस महान विद्या के लुप्त हो जाने के कारण कुछ मिथ्याचार पनप गये और इस ज्योतिष शब्द को अपमानित किया गया। लेकिन विश्वगुरु भारत में फिर विद्वता फिर अंगड़ाई ले रही है। राख से ढके जलते अंगारे को बुझा मान कर हाथ डालने की कुचेष्टा करने वाले अब सतर्क हो गए हैं और ज्योतिष या ऐसे कहें - आर्यावर्त के सम्पूर्ण ग्रंथों का गहराई से अध्ययन कर रहे हैं। 5 हजार वर्ष पहले का पञ्चाङ्ग तो आज भी गणनीय है और भविष्य के मर्म की व्याख्या कर रहा है। फिर सार्थक या निरर्थक का प्रश्न ही निरर्थक है।

■ **जुगलकिशोर सोमाणी,** जयपुर

ज्योतिष मूलतः संकेतों का विज्ञान

ज्योतिष विज्ञान सार्थक या निरर्थक का उत्तर देना समाज के किसी भी वर्ग के लिए आसान नहीं है।

ज्योतिष विज्ञान अंधविश्वास नहीं सदियों का विश्वास है। प्रामाणिक विज्ञान और सशक्त शास्त्र है। ज्योतिष विद्या पर नकारात्मकता या प्रश्नचिन्ह लगाना भारतीय संस्कृति पर आघात है। भारतीय ऋषियों की यह अनोखी देन ज्योतिष शास्त्र है। इसका अपना गौरवमयी यशस्वी इतिहास है। हस्तरेखा और ज्योतिष शास्त्र का अलग अलग नजरिया है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार ही ग्रहों की स्थितियों का पता लगाया जाता है। ज्योतिष विज्ञान पर विश्वास सार्थक है पर इस पर अंधविश्वास करना निरर्थक है। ज्योतिष विज्ञान पर अंधविश्वास करके हम कर्म करने के प्रति उदासीन ना बने रहें। कर्म यदि होगा हमारा उत्तम तो हमारे भाग्य की रेखाएं भी बदल जाएगी। प्रारब्ध का जो लिखा हुआ होना होगा उसे ज्योतिष विज्ञान या अंधविश्वास का सहारा लेकर टालने की कोशिश ना करें। कभी-कभी ज्योतिष विज्ञान झूठा साबित हो जाता है पर इसका अर्थ यह होता है कि ज्योतिषी गलत हो सकते हैं, ज्योतिष विज्ञान नहीं। ज्योतिष विज्ञान को सार्थक मानते हुए ही आज भी बच्चे के जन्म लेते ही सबसे पहले जन्मपत्री बनवाई जाती है। परंपरावादी और अंधविश्वासी विचारधारा के लोग किसी भी मुसीबत में फंसते ही समाज से छुपकर ज्योतिषियों की शरण में जाते हैं। ऐसे लोग ज्योतिष विज्ञान को न तो अंधविश्वास मानते हैं और न विज्ञान। पर हर छोटी-बड़ी समस्याओं के लिए ज्योतिष विज्ञान पर आश्रित रहना निरर्थक है। ज्योतिष विज्ञान मूलतः संकेतों का विज्ञान है।

■ **भारती काल्या,** कोटा राजस्थान

सटीक विज्ञान है ज्योतिष

ज्योतिष शास्त्र, भारतीय काल गणना व मनुष्यो के जीवन पर विभिन्न ग्रहों द्वारा पड़ने वाले प्रभाव की जानकारी देने वाला सटीक विज्ञान है। हजारों साल पहले राजा विक्रमादित्य काल मे हमारी अद्भुत ज्योतिष वैज्ञानिक गणना को प्लेटफार्म मिला था। अद्भुत यंत्रों व विचार तरंगों के माध्यम से ग्रहों की चाल, पृथ्वी-चंद्रमा की गति, आकार आदि की 100 प्रतिशत सही जानकारी प्राप्त कर ली गई थी। जिसे वर्षो पश्चात आज के NASA जैसे अन्तरिक्ष संस्थानों ने भी सटीक पाया। इन्हीं वैदिक गणनाओं के आधार पर आज का SPACE ROCKET SCIENCE आधारित है। हमारे ऋषियों की गणनाएं इतनी जबरदस्त थी कि आज भी भविष्य में होने वाले सूर्य-चंद्र ग्रहण आदि के बारे में FRACTION OF SECOND की भी भूल नही होती है। इसी प्रकार ग्रहों की चाल द्वारा प्रत्येक मनुष्य पर पड़ने वाले प्रभाव के सूक्ष्म ज्ञान की जानकारी भी इन्ही ऋषि वैज्ञानिकों की ही देन है। इसमे जन्म समय, जन्म स्थान, प्रारब्ध, संचित कर्मो के विधान का समावेश होता है। यह एक ऐसी अद्भुत उच्चकोटी की क्लिष्ट वैज्ञानिक गणना है, जहां आज का विज्ञान नही पंहुच पाया है। हाँ, ये सही है कि इस काल गणना के सही जानकार आज बहुतायत में उपलब्ध नही है। प्रतिभा के अभाव में कई बहुरूपियों ने इस ज्ञान का व्यावसायिकरण कर भ्रम फैला रखा है। लेकिन इससे, इस काल गणना के अद्भुत सटीक ज्ञान को नकारा नही जा सकता। निःसंदेह, हमारी विरासत में मिला यह गणित आधारित फलित ज्ञान, एकदम सटीक व सत्य है। हालांकि समझ के अभाव में, अग्रेजों, मुगलों व वामपंथियों द्वारा इस पर ध्यान नही दिया गया।

■ **श्रीकांत बागड़ी,** मुम्बई

सातुड़ी तीज पर्व भाद्रपद के कृष्ण पक्ष की तृतीया को मनाया जाता है। यह वैसे तो सम्पूर्ण राजस्थान का पर्व है, लेकिन माहेश्वरी समाज के लिये तो यह उसकी उत्पत्ति से सम्बंधित होने के कारण विशेष पर्व का दर्जा ही रखता है। आईये जानें क्यों मनाते हैं इसे और कैसे मनाऐं?

माहेश्वरी समाज का ऐतिहासिक पर्व

सातुड़ी तीज

माहेश्वरी समाज की उत्पत्ति की प्राचीन मान्यताओं के माध्यम से प्रतिपादित किया गया है कि श्राप वश 72 उमराव पत्थर की प्रतिमा में परिवर्तित हो गए थे। तब उनकी पत्नियों ने अपनी तपस्या से भगवान शिव व माता पार्वती को प्रसन्न किया। भगवान शिव ने उन उमरावों को पुनः जीवन प्रदान किया। इन उमरावों ने पुनः जीवन पाकर तत्काल तलवार आदि शस्त्रों का त्यागकर तराजू को ग्रहण किया एवं माहेश्वरी समाज की स्थापना की। जिस समय भगवान शिव ने उमरावों को पुनः जीवन दिया, उस वक्त उन्हें भूख लगी। भोजन के लिए अन्य वस्तु वहां उपलब्ध न होने से प्रभु के आदेश पर वहां उपलब्ध बालूरेती के पिण्ड बनाये गए एवं भगवान शिव ने मंत्र द्वारा उन रेत के पिण्ड को ''सत्तु'' के पिंडों में परिवर्तित कर दिया। ये सत्तु पिंड खाकर हमारे पूर्वजों ने अपने पेट की ज्वाला शांत की एवं क्षत्रिय वर्ण से वणिक वर्ण की ओर नई जीवन यात्रा माहेश्वरी के रूप में प्रारंभ की।

कैसे मनाते हैं यह पर्व

जिस तरह तलवार एवं कृपाण से पिण्डों को बड़े कर हमारे पूर्वजों ने खाया गया था, उसी तरह आज भी चाकू से पिण्डों को बड़े (काटना) करने की परम्परा चली आ रही है। इस दिन 72 उमरावों के भगवान शिव एवं माता पार्वती के आशीर्वाद से पुनः जीवित होने पर उनकी पत्नियों में हुई असीम खुशी ने एक महोत्सव का रूप धारण कर लिया था। अनेक दिनों से तपस्या में लीन महिलाओं ने अपना उपवास जंगल में उपलब्ध कच्चे दूध, ककड़ी, नींबू एवं प्रभु द्वारा प्रदत्त सत्तु को ग्रहण करके तोड़ा था। ठीक इसी प्रकार आज भी माहेश्वरी महिलाएं तीज के दिन उपवास रखकर शाम को नीमड़ी की पूजा करके, चंद्र दर्शन कर अर्ध्य देती हैं एवं अपना उपवास कच्चे दूध, सत्तु, ककड़ी व नींबू से तोड़ती हैं। इसमें विशेष रूप से चार प्रकार के सत्तु बनाए जाते हैं। परंपरानुसार जिस स्त्री के विवाह के बाद प्रथम सावन आया हो, उसे ससुराल में ही रखा जाता है। अतः पकवान बनाकर बेटियों को सिंधारा भेजा जाता है।

ऐसे होती है इसकी पूर्णाहूति

रात्रि में चंद्रमा उगने के बाद अर्ध्य दिया जाता है। अर्ध्य देते समय बोलते हैं-'सोना को सांकलों, मोत्यां को हार, बड़ी तीज (कजली तीज) का चांद के अरग देवता, जीवो बीर-भरतार।' अर्ध्य देने के बाद पिंडा (सत्तू) पासा बड़ा किया जाता है। पति या भाई चांदी के सिक्के से पिंडे का एक टुकड़ा तोड़ते (बड़ा करते) हैं। पति द्वारा पत्नी को कच्चे दूध के 7 घूंट पिलाकर उपवास खुलवाया जाता है। महिलाएं कलपना निकाल कर सास-ननद को देकर अखंड सौभाग्यवती का आशीर्वाद लेती हैं। इसके बाद पूजा की हुई नीमड़ी का एक पत्ता सत्तू के साथ देकर कहती है, 'नीमड़ी मीठी'। माना जाता है कि ऐसा कहने से वे पीहर ससुराल सभी जगहों पर अपने मीठे व्यवहार से सभी का दिल जीत लेती हैं। इस व्रत का उद्यापन विवाह के बाद प्रथम वर्ष में ही यदि कर सकें तो बहुत अच्छा, नहीं तो जब भी मौका लग जाए तब जरूर करना चाहिए। इसमें 18 पिंडे एवं उसके साथ 18 नीमड़ी बना कर 18 सुहागिनों को बांटते हैं। सासुजी को कपड़े और कलपना भेंट करते हैं।

वर्तमान में सीएसआर के रूप में अर्थव्यवस्था में शामिल व्यावसायिक सामाजिक उत्तरदायित्व हमारी संस्कृति में भी शामिल रहे है। आइये इस लेख के जरिये यह समझे कि सीएसआर क्या है एवं किसके ऊपर यह लागू होता है? क्या माहेश्वरी समाज के ट्रस्ट जो कि सीएसआर के तहत पड़ने वाली प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष सेवाएं देते आये हैं वो इस योजना में उद्योग घरानों के साथ मिलकर समाजसेवा में हाथ बटा सकते हैं? इसमें क्या सावधानियां बरतने की जरूरत पड़ेगी?

आर.एल. काबरा
अर्थमंत्री अ.भा.मा. महासभा

समय के साथ बदलते सीएसआर के नियम

जैसा कि हमें पता है कि कम्पनियाँ किसी उत्पाद को बनाने के लिए प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करती हैं, प्रदूषण को बढ़ावा देती हैं और धन कमाती है, लेकिन इस ख़राब प्रदूषण का नुकसान समाज में रहने वाले विभिन्न लोगों को उठाना पड़ता है, क्योंकि इन कंपनियों की उत्पादक गतिविधियों के कारण ही उन्हें प्रदूषित हवा और पानी का उपयोग करना पड़ता है। लेकिन इन प्रभावित लोगों को कंपनियों की तरफ से किसी भी तरह का सीधे तौर पर मुआवजा नही दिया जाता है। इस कारण ही भारत सहित पूरे विश्व में कंपनियों के लिए यह अनिवार्य बना दिया गया कि वह अपनी आमदनी का कुछ भाग उन लोगों के कल्याण पर भी खर्च करें जिन्हें इनके कारण असुविधा हुई है। इसे कॉर्पोरेट सोशल रिस्पोंसिबिलिटी (सीएसआर) कहा जाता है। सीएसआर से अभिप्राय किसी औद्योगिक इकाई का उसके सभी पक्षकार, जैसे- संस्थापकों, निवेशकों, ऋणदाताओं, प्रबंधकों, कर्मचारियों, आपूर्तिकर्ताओं, ग्राहकों, वहाँ के स्थानीय समाज एवं पयार्वरण के प्रति नैतिक दायित्व से है।

सी एस आर के दायरे में कौन आता है

भारत में कार्पोरेट सोशल रेस्पोंसिबिलिटी सीएसआर के नियम अप्रैल 1, 2014 से लागू हैं। इसके अनुसार जिन कम्पनियाँ की सालाना नेटवर्थ 500 करोड़ रुपये या सालाना आय 1000 करोड़ की या सालाना लाभ 5 करोड़ का हो तो उनको सीएसआर पर खर्च करना जरूरी होता है। यह खर्च तीन साल के औसत लाभ का कम से कम 2 प्रतिशत होना चाहिए। सीएसआर नियमों के अनुसार, सीएसआर के प्रावधान केवल भारतीय कंपनियों पर ही लाग नही होते हैं, बल्कि यह भारत में विदेशी कंपनी की शाखा और विदेशी कंपनी के परियोजना कार्यालय के लिए भी लागू होते हैं। सीएसआर के अंतर्गत कंपनियों को बाध्य रूप से उन गतिविधियों में हिस्सा लेना पड़ता है जो कि समाज के पिछड़े या वंचित वर्ग के लोगों के कल्याण के लिए जरूरी हों तथा सरकार द्वारा इसके नियम बनाए गए हैं।

सी एस आर कैसे काम करता है

कंपनियों के लिए सी एस आर के मापदंड के नियम तय हैं और उनके मुताबिक एवं दायरे में रहकर ही कंपनियाँ अपनी जिम्मेदारी पूरी कर सकती हैं। नियम के मुताबिक हर कंपनी में एक सी एस आर कमेटी होती है जो बोर्ड को समय समय पर रिपोर्ट करती है लेकिन अगर कम्पनी का सी एस आर पर खर्च 50 लाख रू. से कम है तो आपको सी एस आर कमिटी की जरूरत नहीं है। बोर्ड ऑफ डायरेक्टर एवं सी एस आर कमिटी मिलकर नीति बनाती है जिसका पालन करना अनिवार्य होता है एवं सी एस आर की अनुसूची में शामिल गतिविधियों का ही कम्पनी को चयन करना पड़ता है। सी एस आर के नियम धारा 135 (कम्पनी एक्ट) के तहत बाध्य हैं, जिसे नहीं पालन करने या अवहेलना करने पर कम्पनी जुर्माना के साथ दंडनीय होगी जो पचास हजार से कम नहीं होगा और यह पच्चीस लाख तक बढ़ सकता है। इसी तरह खर्चा नहीं करने या जो अगले वर्षों में खर्चा होने वाला है उसको अलग फंड में ट्रांसफर नहीं करने पर एक करोड़ तक जुर्माना लग सकता है। बीच में सरकार ने इस जुर्म को आपराधिक दंड मान कर उद्योग को हिला दिया था किन्तु बाद में इसे वापस सरल कर दिया गया है।

सी एस आर के नियमो में नए बदलाव

सी एस आर के नियमो में कुछ महत्वपूर्ण बदलाव इस प्रकार आये हैं

- अब आप सी एस आर प्रोजेक्ट शुरू करके 3 वर्ष में पूरा कर सकते है
- आप सी एस आर खर्च का 5 प्रतिशत तक नोडल एजेंसी या स्वयं के खर्च के लिए (जैसे एडिमन खर्च) ट्रस्ट को दे सकते है।
- आपको सी एस आर के आनगोइंग प्रोजेक्ट जो तीन वर्ष में होने है उसके UNSPENT खर्चे को वर्ष समाप्ति पर 30 दिवस के भीतर अलग बैंक खाते में जमा करना होगा।
- अगर आपने सी एस आर फंड का खर्चा एडवांस में या जरूरत से ज्यादा कर दिया है तो आपको अगले तीन वर्ष में क्रेडिट दी जावेगी।
- अब आप सी एस आर के तहत केपिटल खर्चों से योजनाए पूरी करके आप सी एस आर से बनी अचल सम्पति अगर कम्पनी में नहीं रख सकते हैं तो इसे आपको कोई ट्रस्ट, सरकार या योजना से लाभान्वित SELF HELP GROUP को देना होगी। अभी तक की अचल सम्पत्ति अगर कम्पनी में सी एस आर खर्चे से बनी है तो उसे आपको 22/01/2021 के बाद 270 दिवस में उपरोक्त तरीके से स्थानान्तरित करना होगी। यह एक महत्वपूर्ण बदलाव है।
- 10 करोड़ से ऊपर सी एस आर खर्चा एवं कोई भी एक प्रोजेक्ट पर 1 करोड़ से ज्यादा खर्चा करने पर आपको एक Impact assessement की रिपोट लेकर बोर्ड रिपोर्ट में लगानी होगी।

माहेश्वरी समाज के लिये 'खींवसर के लाल' चैन्नई निवासी पद्मश्री सम्मान से विभूषित श्री बंशीलाल राठी एक ऐसे समाज सेवी हैं, जिनका सम्पूर्ण जीवन ही समाज को समर्पित हो गया। आप आगामी 14 अगस्त के अपने जीवन का 88वाँ सफल पड़ाव पूर्ण करने जा रहे हैं, लेकिन समाज व मानवता को समर्पित उनका मन इस अवस्था में भी वैसा ही समर्पित है, जैसा हमेशा रहा है।

समाज को समर्पित सम्पूर्ण जीवन

पद्मश्री बंशीलाल राठी

पद्मश्री बंशीलाल राठी समाजसेवा के क्षितिज पर चमकता हुआ एक ऐसा नाम है, जिनसे न सिर्फ देश बल्कि लगभग संपूर्ण विश्व के माहेश्वरी अच्छी तरह परिचित हैं। समाज का शायद ही ऐसा कोई समाज सेवी हो जो उनके समाजसेवा के जज्बे के प्रति नतमस्तक न हो। उम्र के 88 पड़ाव पार कर चुके होने पर भी उनका जज्बा किसी युवा से भी 100 कदम आगे ही है। उनके पास यदि किसी भी संगठन के पदाधिकारी किसी मदद के लिये पहुंचते हैं, तो उनकी वह मदद करने में उन्हें मात्र चंद घंटे लगते हैं। जबकि वे लोग सभी मिलकर भी प्रयास करें तो उसे करने में महीनों लग जाएँ। बस, यह दृढ़ संकल्प और जज्बे का ही अंतर होता है।

शून्य से शिखर के यात्री

14 अगस्त 1933 को नागौर (राजस्थान) के खींवसर ग्राम में सेठ श्री गंगाधर राठी के यहां जन्मे बंशीलाल राठी वास्तव में एक अद्‌भुत व्यक्तित्व हैं। मात्र प्रायमरी स्तर तक शिक्षा ग्रहण करने के बावजूद उन्होंने शून्य से अपने व्यवसाय की शुरूआत की और आज शिखर की ऊँचाई पर हैं। वर्तमान में स्टील फायनेंस, एक्सपोर्ट आदि कई व्यवसाय व उद्योगों का संचालन कर रहे हैं। समाजसेवा के अंतर्गत अ.भा. माहेश्वरी महासभा के सभापति जैसे शीर्ष पद की जिम्मेदारी भी निभाई। समाज की कई संस्थाओं व ट्रस्टों के लिये तो आप जीवनदाता ही रहे। जाजू ट्रस्ट के कायाकल्प व रामगोपाल माहेश्वरी ट्रस्ट के विकास के मूल में आपका अभूतपूर्व योगदान है। उन्होंने समाज को राह दिखाई कि सिर्फ संस्था बना कर छोड़ देना तो वैसा ही है, जैसे पौधा रोपकर उसे प्यासा छोड़ देना,उसकी देखरेख कर उसे बड़ा करना भी हमारा कर्त्तव्य होता है। ऐसी अनगिनत संस्थाएं हैं, जिनमें प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से बाबूजी सहयोगी बने हुए हैं।

तैयार की विकास की धुरी

वर्तमान में श्री आदित्य विक्रम बिड़ला व्यापार सहयोग केंद्र समाज के आर्थिक विकास की धुरी बन चुका है। इसकी स्थापना श्री राठी के अ.भा. माहेश्वरी महासभा के सभापतित्वकाल में वर्ष 1997 में हुई थी। इसके पश्चात यह बिड़ला उद्योग समूह की चेयरपर्सन राजश्री बिड़ला की अध्यक्षता में सतत रूप से कार्य कर रहा है। प्रारंभ से ही श्रीमती बिड़ला ने श्री राठी को इस संस्था का नेतृत्व कार्याध्यक्ष के रूप में सौंप दिया था। तब से ही इसे शून्य से शिखर की ऊंचाई देने में श्री राठी के नेतृत्व का बहुत बड़ा योगदान है। महासभा की नागपुर बैठक के समय महाराष्ट्र प्रदेश के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं ने प्रदेश की असहाय महिलाओं की सहायता हेतु अपील की जिस पर आप महाराष्ट्र प्रदेश की 40 ऐसी महिलाओं को वर्ष 2009-10 से प्रतिमाह रु 1000/- की नियमित रूप से सहायता राशि भेज रहे हैं।

कोरोना काल में भी बने सहयोगी

श्री राठी अपने चिरपरिचित अंदाज में कोरोना महामारी की इस दूसरी लहर के दौरान भी विपदा में फंसे अपनों के लिये देवदूत की तरह "अपने" बनकर सामने आये। इस दौरान उन्होंने महाराष्ट्र के 108 सहित देशभर के कई जरूरतमंद परिवारों को ससम्मान आर्थिक सहायता प्रदान कर अपनत्व का परिचय दिया। गत वर्ष कोरोना महामारी की प्रथम लहर व उसके फलस्वरूप हुए लॉकडाउन में श्री राठी द्वारा देश के अनेक असहाय परिवारों को प्रति परिवार रू 3000/- की राशी भेजी गई थी। कोरोना की इस दूसरी लहर में भी भामाशाह बन श्री राठी ने स्वयं आगे आकर महाराष्ट्र के कोरोना प्रभावित दुर्बल परिवारों को प्रति परिवार रू 10000/- (दस हजार) की सहायता अति शीघ्रता से जिला सभा एवं कार्यकर्ताओं के माध्यम से करीब 108 परिवारों को पहुंचाई। अति कठिन परिस्थिति में यह सहायता राशी प्राप्त होने से इन परिवारों ने बहुत साधुवाद दिया है। इस सहायता में अपनत्व के साथ मदद प्राप्त करने वालों के सम्मान का ध्यान रखते हुए उनके नाम भी गुप्त रखे गये।

खुश रहें - खुश रखें

निःस्वार्थ होना चाहिए भाईचारा

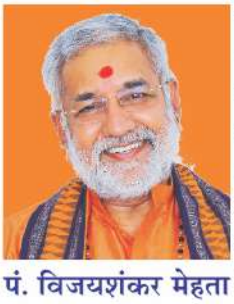

पं. विजयशंकर मेहता
(जीवन प्रबन्धन गुरु)

भाईचारा एक पवित्र दायित्व है। इसे निभाने के लिए नैतिकता की ताकत लगती है। विभीषण ने अपने जीवन में दो भाई देखे थे-एक अपना सगा भाई रावण और दूसरे लक्ष्मण व भरत के भाई श्रीराम। यहीं उन्हें भाईचारे का अंतर समझ में आ गया था। उन्होंने अपने भाई रावण को समझाते हुए कहा था कि वह देवी सीता श्रीराम को वापस लौटा दें। भाई की बात मानना तो दूर रावण ने लात मरकर उसे लंका से ही निकाल दिया। परंतु विभीषण ने (लात खाने पर भी) बार-बार उसके चरण ही पकड़े। आखिर में विभीषण ने श्रीराम की शरण ली।

श्रीराम ने शरणागत वत्सलता की रघुकुल रीत निभाई और विभीषण के सिर पर कृपा का हाथ रख दिया। श्रीराम के मित्र वानरराज सुग्रीव इस निर्णय से सहमत नहीं थे। उन्होंने संदेह जाहिर करते हुए कहा था- भेद हमार लेन सठ आवा, राखिअ बांधि मोहि अस भावा। हे रघुवीर, विभीषण पर विश्वास करना ठीक नहीं है। आखिर वह शत्रु का भाई है। संभव है हमारा भेद लेने आया हो इसलिए इसे बांधकर रखना उचित होगा। सग्रीव अपनी असहमति की स्पष्ट राय दे चुके थे। श्रीराम ने उनका भी मान रखने के लिए कहा था-सखा नीति तुम्ह नेकि बिचारी, मम पन सरनागत भयहारी। हे मित्र सुग्रीव, तुमने नीति तो अच्छी बताई है लेकिन मेरा प्रण है शरणागत के भय को दूर करने का।

इस प्रकार श्रीराम ने विभीषण को न सिर्फ स्वीकार किया बल्कि समुद्र से जल मंगाकर विभीषण से कहा था- जदपि सखा तब इच्छा नाही, मोर दरसु अमोघ जग माही। अस कहि राम तिलक तेहि सारा, सुमन बृष्टि नभ भई अपारा। हे सखा, यद्यपि तुम्हारी इच्छा नहीं है पर जग में मेरा दर्शन निष्फल नहीं जाता, ऐसा कहकर श्रीराम ने उनका राजतिलक कर दिया। श्रीराम ने बताया कि भाईचारा निःस्वार्थ होना चाहिए। निःस्वार्थ रहने का एक तरीका है जरा मुस्कराइए...।

जल देवता

वेद-पुराण-कुरान-बायबिल सहित सभी धर्मग्रन्थों ने भी कहा है- 'जल है तो कल है'। इन्हीं सन्दर्भों से सन्दर्भित **डॉ. विवेक चौरसिया** के जल पर केन्द्रित लेखों का संग्रह 'जल देवता'.

जिनमें आप पायेंगे न सिर्फ भारतीय संस्कृति बल्कि सम्पूर्ण विश्व ने स्वीकारी है जल की महत्ता.

Rs. 150/-
डाक खर्च सहित

खूबसूरती से जीएँ 55 के बाद

55 के बाद की जिन्दगी सपनों का अन्त नहीं बल्कि उन्हें साकार करने का स्वर्णिम समय है. बस इसके लिए जरूरी है खूबसूरती से जीना कैसे जीएँ... इसी के सूत्र बताती है

डॉ. एच.एल. माहेश्वरी की पुस्तक "खूबसूरती से जीएँ 55 के बाद".

Rs. 120/-
डाक खर्च सहित

आपसे कहा जाता है -

- संकट निवारण हेतु पानी में नारियल बहा दें।
- सांप दिखे तो काम टालें।
- नल को पानी टपकता न छोड़ें।

... और भी बहुत कुछ **तो फिर...**

ऐसा क्यों?

aisa kyon

जिसमें छुपा है आपके हर क्यों का जवाब

प्रश्न उठना स्वाभाविक है - "ऐसा क्यों?" लेकिन इसका उत्तर देगा कौन?
इसका उत्तर देगी गहन अध्ययन से संजोई पुस्तक

Rs. 100/-
डाक खर्च सहित

ऋषिमुनि प्रकाशन

90, विद्यानगर, साँवेर रोड, उज्जैन (म.प्र.) फोन - 0734-2526561, 2526761, मो. 094250-91161

फ्रूट पिज़्ज़ा

सामग्री :- एक पिज़्ज़ा बेस, एक कट केला, आधा कप पतले स्लाइस में कटा हुआ एप्पल, आधा कप कटी हुई चेरी, आधा कप कटी स्ट्रॉबेरी, आधा कप पाइनएप्पल के टुकड़े, आधा कप क्रीम चीज, एक चम्मच शहद, छोटी इलायची का पाउडर।

विधि :- पिज़्ज़ा बेस को 300 डिग्री पर 8 से 10 मिनट तक ब्राउन और क्रिस्पी होने तक बेक करें. क्रीम चीज, शहद, पिसी चीनी, व वेनिला एसेंस को मिलाकर फेट ले।

कटे केले व एप्पल के टुकड़ों पर निंबू का रस छिड़ककर रख दें, ताकि वे काले ना पड़े।

तैयार पिज्ज़ा बेस पर फिलिंग अच्छी तरह फैला दे. फिलिंग पर कटे फलों से सजा दे, ठंडा करें और काटकर बढ़िया राखी के त्योहार पर अपने भाई भाभी को फ्रूट पिज्ज़ा पेश करके आनंद ले।

शेफ पूनम राठी, नागपुर
विविधा कुकिंग क्लासेस
9970057423

आपणी बोली

- स्वाति जैसलमेरिया, जोधपुर

पैसों रो लालच

खम्मा घणी सा हुकम अबार ताज़ा खबर बॉलीवुड री मशहूर अभिनेत्री शिल्पा शेट्टी रो पति राज कुंद्रा जिनो एशिया रे टॉप बिज़नेस मेन में नाम है। राजकुंद्रा इग्यारह सूं भी ज्यादा छोटी बड़ी कम्पनी रा मालिक व राजस्थान रॉयल IPL टीम रा भी मालिक है इने अलावा इंफास्ट्रक्चर, माइनिंग, हॉस्पिटेलिटी जेड़ा भी व्यापार है। वे अभी सुर्खियों में है हुकम.... इति कमाई बिज़नेस में हुवण रे बावजूद एडल्ट फिल्मों सूं हर दिन 7- 8 लाख रुपया कमावता कुन्द्रा आज जेल री सलाखों में हैं। राजकुंद्रा पर पोर्न वीडियो बणानें पैसा कमावण रो आरोप लाग्यो हैं। मुम्बई पुलिस रो केवणो है कुछ एप्प रे जरिये जो लड़कियां हीरोइन बणन रा सपना लेने आवती... वाणें ऑडिशन रे नाम पर आपरे बंगले पर पोर्न वीडियो बणानें विदेशी कम्पनी ने लाखों रे मोल बेचता ।

हुकम क्राइम ब्रांच रे मुताबिक पेला इण काम सूं 2-3 लाख री कमाई हुवती लेकिन बाद में बढ़ने 7-8 लाख तक रोज री हूँ गई।

हुकम, एशिया रे धनी व्यक्तियों में नाम दर्ज राजकुंद्रा री शोहरत रे पीछे ईतो बड़ों कांड छूपियोड़ों है। जण इने काले कारनामों रो भाँडो फुटियों... चहेता दर्शकों में छवि खराब हुगी... हुक्म धन बहुत महत्वपूर्ण हैं पर धन रे वास्ते ईमान बेचनों यो लालच है और आपणा बड़ा बुजुर्ग केहवें जण मनुष्य रे अंदर लालच जन्म ले लेवें तो ऊनी सुख-समृद्धि खत्म कर देवे।

हुकम यों मानव जीवन मिळीयों है कुछ अच्छा कार्य करण वास्ते ... बेशक पैसों कमावणों जरूरी है पर अंधेपन सूं पैसों कमावणों इंसान ने लेने डूब जावें। जीनों नतीज़ों राजकुंद्रा रे इण कांड में दिखे।

हुक्म सच कहूं ..
राजकुंद्रा रो ईमान ग्यो, रूठ ग्यो उणसुं भगवान
कुछ न बच्यों शेष अब, रह ग्यों खाली अभिमान
लोभ लालच रे मोह में, बर्बाद हुवे यूँ इंसान ।

मुलाहिजा फ़रमाइये

▸▸ *ज्योत्सना कोठारी*
मेरठ

- बारिश होना बन्द हो गयी जरा मालूम करो
  कहीं बादल तो नहीं बेच दिये हुजूर ने........
- नज़्म वो ही, मुकम्मल है मेरी नज़र में,
  जब तू पढ़े तो तेरी, और मैं पढ़ूँ तो मेरी लगे!!
- बुलंदियों में यक़ीनन, यक़ीन रखती हूँ,
  मगर मैं पांव के नीचे, ज़मीन रखती हूँ !!
- दुनिया को कुछ दिन और बेखबर रहने दो,
  वक्त बदलेगा तो कारवां भी नया होगा !!
- मृत्यु के लिए बहुत रास्ते है,
  पर जन्म के लिए केवल "माँ" है...
- ताल्लुक कौन रखता है किसी नाक़ाम व्यक्ति से,
  मिले जो क़ामयाबी तो सारे रिश्ते बोल पड़ते हैं।
- अपनी प्रतिष्ठा का, बहुत अच्छे से ख्याल रखें,
  क्योंकि यही है, जिसकी उम्र आप से ज्यादा है।

कार्टून कौतुक

राशिफल संकेत सितारों के

पं. विनोद रावल
(ज्योतिर्विद)
फोन : 0734-2515326

मेष

यह माह आपके लिए शुभ फलदाई रहेगा। राजकीय पक्ष की अनुकूलता रहेगी इस अवधि में पुरस्कार प्राप्ति एवं सम्मान प्राप्ति के योग प्रबल रहेंगे। संपत्ति से संबंधित प्रकरण में सफलता मिलेगी। हड्डी एवं दांत से कष्ट के योग रहेंगे। नई नौकरी के अवसर प्राप्त होंगे। अपनी वाणी के द्वारा अपने बिगड़े हुए कार्यों में अनुकूलता होकर सफलता प्राप्त होगी। संतान को लेकर किसी विषय पर चिंता करेंगे किंतु वह चिंता शीघ्र ही दूर भी हो जाएगी। आपके गुप्त शत्रु सक्रिय रहेंगे किंतु किसी भी प्रकार की हानि नहीं पहुंचा पाएंगे। मन में अज्ञात भय बना रहेगा।

वृषभ

यह माह आपके लिए भाग्योदय कारक रहेगा। चुनौती पूर्ण कार्य को बड़ी ही युक्तियुक्त तरीके से करने में आप सफल होंगे एवं यश कीर्ति की प्राप्ति होगी। आपकी सलाह से लोगों को एवं मित्रों को फायदा होगा किंतु आपको उतना लाभ नहीं हो पाएगा जितना मित्रों को होगा। कार्य व्यवसाय में प्रगति होगी, नवीन कार्य व्यवसाय की प्राप्ति होगी नौकरी के योग प्रबल रहेंगे। संतान से संबंधित कार्य में सफलता प्राप्त होगी। गुप्त शत्रु से परेशानी अनुभव करेंगे। विवाह संबंध तय होने के योग प्रबल रहेंगे। परिश्रम का रिटर्न कम मिल पाएगा। फिर भी आवश्यकता अनुसार धन की व्यवस्था हो जाया करेगी।

मिथुन

यह माह आपको परिश्रम के उपरांत सफलता प्रदान करने वाला रहेगा। संपत्ति से संबंधित प्रकरणों में सफलता मिलेगी। आंखों से कष्ट के योग रहेंगे। चुनौतीपूर्ण कार्य को हाथ में लेंगे एवं अपनी बुद्धि एवं कार्य क्षमता से उसे पूर्ण करने में सफलता प्राप्त होगी। नवीन कार्य व्यवसाय की प्राप्ति के योग प्रबल रहेंगे। संतान से संबंधित कार्यों में सफलता मिलेगी। मामा परिवार से वैचारिक मतांतर रहेंगे एवं ननिहाल पक्ष से कोई अप्रिय समाचार मिलने के योग रहेंगे इष्ट साधना की प्राप्ति के योग प्रबल रहेंगे। झूठे आरोप का सामना करना पड़ेगा। धार्मिक यात्रा तीर्थ यात्रा के योग प्रबल रहेंगे। अपने निर्णय स्वयं लेंगे तो अधिक सफलता की संभावना रहेगी।

कर्क

यह माह आपकी राशि वालों के लिए सौभाग्यशाली रहेगा। संतान से संबंधित प्रकरणों में सफलता मिलेगी स्थाई संपत्ति के क्रय करने के योग प्रबल रहेंगे। आपकी सलाह से लोग लाभान्वित होंगे। किसी विषय पर निर्णय लेने में काफी समय लगाएंगे। पाचन तंत्र-पेट गैस की तकलीफ के योग प्रबल रहेंगे। विवाह संबंध होते होते रुक सकता है। आय के नवीन स्त्रोत की प्राप्ति होगी तथा आय के अनैतिक साधनों से अथवा तेजी मंदी से संबंधित कार्यों द्वारा धन प्राप्ति के योग प्रबल रहेंगे। मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा। परिवार, कुटुंब एवं परिवारजनों से अपेक्षित सहयोग नहीं मिल पाएगा।

सिंह

यह माह आपके लिए भौतिक सुख सुविधा से परिपूर्ण रहेगा। संपत्ति से संबंधित प्रकरणों पर विचार विमर्श होकर संपत्ति क्रय करने के योग प्रबल रहेंगे। कोई नवीन कार्य प्रारंभ करेंगे, खोए-खोए रहेंगे। किसी विषय पर अधिक मंथन करना होगा। स्वादिष्ट नमकीन व्यंजनों का लुत्फ उठाएंगे। परिवार से दूर रहने के योग रहेंगे। पत्नी से वैचारिक मतांतर के योग रहेंगे। साथ ही पाचन तंत्र पेट गैस की तकलीफ का भी सामना करना पड़ेगा। राजनीतिक संपर्क का लाभ मिलेगा। पैतृक संपत्ति से संबंधित प्रकरणों में अनुकूलता रहेगी। खर्च की अधिकता रहेगी। नवीन मित्रों से मुलाकात होगी।

कन्या

यह माह आपको आर्थिक रूप से अनुकूलता प्रदान करने वाला रहेगा। आपके कई दिनों के रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे। हर्षोल्लास का वातावरण निर्मित होगा। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। विरोधी को परास्त करने में सफलता प्राप्त होगी। किसी चुनौती पूर्ण एवं बहुप्रतीक्षित कार्य में सफलता प्राप्त होने से हर्ष उल्लास एवं आनंद का वातावरण निर्मित होगा। संतान से संबंधित कार्य में सफलता मिलेगी। पाचन तंत्र पेट गैस की तकलीफ का सामना करना पड़ेगा। दांपत्य जीवन में अनुकूलता रहेगी। लंबी यात्रा के योग रहेंगे। राजकीय पक्ष की अनुकूलता रहेगी, आय के नवीन साधनों की प्राप्ति होगी।

तुला

यह माह आपको संतान से संबंधित प्रकरणों एवं शिक्षा से संबंधित प्रकरणों में श्रेष्ठ सफलता प्रदान करने वाला होगा। साथ ही कारोबार में वृद्धि होगी। आर्थिक संपन्नता में अनुकूलता आएगी किंतु संपत्ति से संबंधित प्रकरणों में उलझाने बढ़ेगी। वाहन सुख की प्राप्ति के योग रहेंगे। धार्मिक यात्रा के योग रहेंगे। समाज सेवा करेंगे, समाज में पद एवं प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। भौतिक सुख सुविधाओं का लुप्त उठाएंगे। दोस्तों से सहयोग प्राप्त होगा। किसी विषय पर दुविधा में रहेंगे। अंतिम निर्णय लेने में काफी मशक्कत करना पड़ेगा। दांपत्य जीवन की अनुकूलता रहेगी। परिवार में शुभ एवं मांगलिक कार्य के अवसर प्राप्त होंगे। विवाह संबंध तय होगा।

वृश्चिक

यह माह पुरानी बीमारी से छुटकारा प्रदान करने वाला होगा। खुशी का वातावरण निर्मित होगा, विरोधी परास्त होंगे। स्थाई संपत्ति का निर्माण होगा। चुनौती भरे कार्यों में सफलता मिलेगी। विजय प्राप्ति के योग प्रबल रहेंगे। भाग्य का उदय होगा। संतान से संबंधित कार्यों में सफलता मिलेगी। पत्नी के स्वास्थ्य की अनुकूलता रहेगी। विवाह संबंध होगा। लंबी यात्रा के योग रहेंगे। राजकीय पक्ष की अनुकूलता रहेगी। आय के नवीन साधनों की प्राप्ति होगी। नौकरी में पद एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि के योग प्रबल रहेंगे। भौतिक सुख-सुविधाओं पर खर्च करेंगे। सामाजिक सम्मान प्राप्त होगा। पुराने मित्रों से भेंट होगी।

धनु

यह माह आपके लिए संपत्ति से सुख प्रदान करने वाला रहेगा। भाई एवं परिवारजनों का स्नेह तथा सहयोग प्राप्त होगा। वाहन सुख, मकान सुख में वृद्धि होगी। संतान प्राप्ति के योग प्रबल रहेंगे। विरोधी परास्त होंगे किंतु हड्डी एवं दांतों से कष्ट के योग प्रबल रहेंगे। अज्ञात भय बना रहेगा। विवाह संबंध तय होने के योग प्रबल रहेंगे। शीत प्रकोप से संबंधित कष्ट का भी सामना करना पड़ेगा। मानसिक तनाव एवं अनिर्णय की स्थिति बनी रहेगी। लंबी यात्रा के योग रहेंगे। भौतिक सुख सुविधाओं पर खर्च करना होगा। राजकीय पक्ष की अनुकूलता रहेगी एवं वित्तीय साधनों से अच्छी आय प्राप्त होगी।

मकर

यह माह कार्यों में सफलता प्रदान करने वाला होगा। संपत्ति से संबंधित प्रकरणों में परेशानी अनुभव करेंगे। संतान के रुके कार्य रुक-रुक कर पूर्ण होंगे। अचानक आय प्राप्त के योग प्रबल रहेंगे। दांपत्य जीवन की अनुकूलता रहेगी। नौकरी एवं व्यापार में उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। विरोधी परास्त होंगे। लोन लेना लाभकारी होगा। सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। विवाह संबंध तय होगा। शुभ समाचार की प्राप्ति के योग रहेंगे। पुराने मित्रों से भेंट होगी लंबी यात्रा के अवसर प्राप्त होंगे। किसी चुनौती भरे कार्य को हाथ में लेकर बड़े ही युक्तियुक्त तरीके से करने में सफलता अर्जित होगी।

कुम्भ

यह माह आपको कड़े परिश्रम के पश्चात सफलता प्रदान करने वाला होगा। आंशिक रूप से स्वास्थ्य नरम गरम बना रहेगा। संपत्ति में अनुकूलता आएगी। वाणी द्वारा अपने बनते कार्य बिगड़ेंगे, मानसिक तनाव रहेगा। शीत प्रकोप से संबंधित कष्ट हो सकता है, विवाह संबंध तय होगा, शुभ समाचार की प्राप्ति होगी। दांपत्य जीवन की अनुकूलता रहेगी। मानसिक तनाव के योग रहेंगे। वित्तीय प्रकरणों में सफलता प्राप्त होगी। न्यायालय कार्य में अनुकूलता मिलेगी। लंबी यात्रा के योग रहेंगे। नौकरी मिलने एवं पदोन्नति के योग प्रबल रहेंगे। साथ ही मनचाहा स्थान परिवर्तन भी होगा। अचानक आय की प्राप्ति के भी योग प्रबल रहेंगे।

मीन

यह माह आपको विरोधी पर विजय प्रदान करने वाला रहेगा। स्थाई संपत्ति से संबंधित प्रकरणों में सफलता मिलेगी। संपत्ति का निर्माण होगा। विरोधी परास्त होंगे, साहस एवं बहादुरी में आप की बराबरी कोई नहीं कर पाएगा। वाहन सुख-मकान सुख में वृद्धि होगी। संतान के कार्यों में सफलता मिलेगी। मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा। शुगर अथवा ब्लड प्रेशर रोग होने के योग रहेंगे। दांपत्य जीवन की अनुकूलता रहेगी। पत्नी एवं ससुराल का सहयोग प्राप्त होगा। चतुष्पाद से भय बना रहेगा। भाग्योदय के अवसर प्राप्त होंगे। अचानक धन लाभ एवं नवीन नौकरी के योग प्रबल रहेंगे। आय के नवीन स्त्रोत की प्राप्ति एवं व्यापार में वृद्धि के योग प्रबल रहेंगे। प्रबंध एवं प्रशासन में आप की दक्षता रहेगी। धार्मिक मांगलिक तीर्थ यात्रा एवं शुभ कार्यों में दान पुण्य में खर्च करेंगे।

RR KĀBEL

MAKE THE RIGHT CHOICE FOR YOUR HOME

DO THE AKALMAND THING!

RR GLOBAL
RAM RATNA GROUP

R R KABEL LTD. Regd. Office : Ram Ratna House, Oasis Complex, P. B. Marg, Worli, Mumbai - 400 013.
T : +91 - 22 - 2494 9009 / 2492 4144 • **F** : +91 - 22 - 2491 2586 • **E** : mumbai.rrkabel@rrglobal.in
Corp. Office : 305/A, Windsor Plaza, R. C. Dutt Road, Alkapuri, Vadodara - 390 007.
T : +91 - 265 - 2321 891 / 2 / 3 • **F** : +91 - 265 - 2321 894 • **E** : vadodara.rrkabel@rrglobal.in
www.rrkabel.com • www.rrglobal.in

Aditya Birla Group: Making a life changing difference

We work in 7000 villages. Reach out to 9 million people. A glimpse:

HEALTHCARE

Over 100 million Polio vaccinations

5,000 Medical camps / 20 Hospitals: 1 million patients treated

Over 50 deaf and mute children moved from the world of silence to the sound of music through the cochlear implant

Reach out to over 4,000 children. Extending financial support for the chemotherapy sessions. Encouraging them in a holistic manner to get back quickly on the road to recovery.

Engaged in prevention of cervical cancer through the administration of the HR-HPV vaccines in Maharashtra. Over 1800 girls have been vaccinated.

More than 6,600 persons had their vision restored through the Vision Foundation of India

100,000 persons tested on 32 health parameters through HealthCubed

EDUCATION

Our 56 schools accord quality education to 46,500 students

Mid-day meals provided to 74,000 children

Solar lamps given to 4.5 lakh children in the hinterland

Foster the cause of the girl child through 40 Kasturba Gandhi Balika Vidyalayas

SUSTAINABLE LIVELIHOODS

100,000 people trained in skill sets

45,000 women empowered through 4500 SHGs

200,000 farmers on board our agro-based training projects

And much more is being done through the Aditya Birla Centre for Community Initiatives and Rural Development, spearheaded by Mrs. Rajashree Birla. Because we care.

NUMBERS MEAN A LOT
BUT A SMILE MEANS EVERYTHING!

ADITYA BIRLA GROUP
Engage. Uplift. Empower

RNI-MPHIN/2005/14721
Po.-Malwa Division/244/2020-2022
Despatch Date - 02 August, 2021

If Undelivered Please Return To
SRI MAHESHWARI TIMES
90, Vidya Nagar (Behind Tedi Khajur Dargah)
Sanwer Road, UJJAIN (M.P.) - 456010
Ph. : 0734-2526561, 2526761 , Mo. : 94250-91161
E-mail : smt4news@gmail.com

https://www.facebook.com/smtmagazine/
http://srimaheshwaritimes.com/